यज्ञकुण्ड चित्रों सहित

सम्पूर्ण
हवन रहस्यम्

(भाषा टीका)

पं० शिव स्वरुप याज्ञिक

सम्पूर्ण हवन रहस्यम्
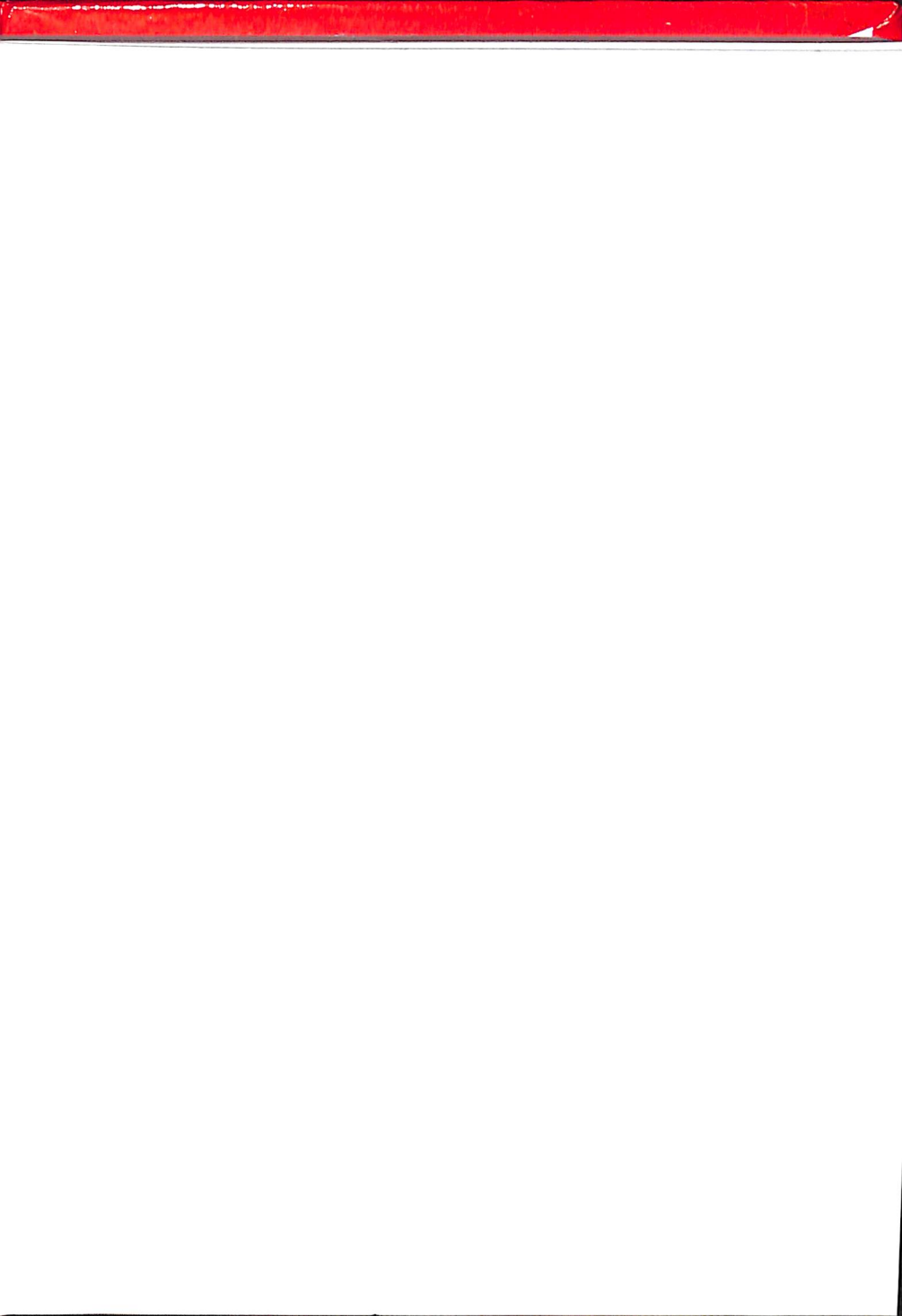
श्री गणेशाय नमः श्री गंगायै नमः श्री सरस्वत्यै नमः

सम्पूर्ण
हवन रहस्यम्
भाषा टीका

प्राणियों की उत्पत्ति अन्न से होती है और अन्न समय पर वृष्टि होने से उत्पन्न होता है। सामयिक वृष्टि यज्ञ से होती है। यज्ञ, यजमान और आचार्य के द्वारा धर्म शास्त्र विहित कर्मकाण्ड के करने से होता है।

-श्रीमदभगवद् गीता ३/१४

लेखकः पं० शिवस्वरूप याज्ञिक, उत्तरकाशी

मूल्य- 80/-

काशकः
.एस. प्रमिन्दर
ी-51

मुख्य वितरकः
कर्मसिंह अमरसिंह
पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार, हरिद्वार
फोन-01334-225619

नवीन संस्करण

प्रकाशकः

बी.एस. प्रमिन्दर प्रकाशन

मुख्य विक्रेताः

कर्मसिंह अमरसिंह,

पुस्तक विक्रेता, बड़ा बाजार, हरिद्वार

फोन-01334-225619

मोबा०-09837126152

लेखकः

पं० शिवस्वरूप याज्ञिक उत्तरकाशी

मूल्य-80/-

सम्पूर्ण हवन रहस्यम्

SAMPURAN HAWAN RAHASYAM

माननीय विद्वत् वृन्द!

हिन्दु संस्कृति वेदों और पुराणों में यज्ञों की अपार महिमा का वर्णन बताया गया है। संसार रूपी समुद्र में जन्म मृत्यु के चक्र से मुक्ति हेतु यज्ञकर्म मनुष्यों के लिए नितान्त आवश्यक हैं। पूर्व संचित अथवा इस जन्म में किए गये पाप क्षयार्थ सम्पूर्ण शास्त्रों ने मनुष्यों को यज्ञ करने की आज्ञा दी है, क्योंकि पाप करने वाला कभी मुक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता है।

मनुस्मृति में स्पष्ट है कि, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य को अवश्य ही यज्ञ करने चाहिये २६/८८ द्वितीय अध्याय में यहां तक कहा है कि "महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीय क्रियते तनुः" यज्ञों से ब्रह्म–प्राप्ति के योग्य यह शरीर बनाया जाता है १६३/२८। गृहस्थ के नित्यकर्म में पाप प्रतिदिन होते रहते है और मनुष्य गृहस्थाश्रम में रहते हुए न चाहते हुए पाप का भागीदार बनता है।

पञ्च सूना गृहस्थस्य चुल्ली पेषण्युपस्करः।
कण्डनीचोद्कुभ्भश्च वध्यतेयास्तु वाहयान्।।३।६८।

क्योंकि गृहस्थ प्रत्येक दिन चुल्ही चक्की झाडू ओखली मूशल और जल के घट का प्रयोग करता है तो इन स्थानों में गृहस्थ न चाहते हुए पापों का भागी होता है, उन सब पापों की निवृत्ति के लिए हमारे महर्षियों ने पञ्चमहायज्ञ करने का विधान गृहस्थाश्रमियों के लिये बतलाये है–

अध्यापनं ब्रह्म यज्ञं पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो वलिर्भोतो नृयज्ञोऽतिथि पूजनम्।।

— मनु० ३।७०

वेद का अध्ययन और अध्यापन करना "ब्रह्मयज्ञ" तर्पण करना "पितृयज्ञ" और हवन करना "देवयज्ञ" बलिवैश्वदेव करना "भूतयज्ञ" तथा अतिथियों का भोजन आदि से सत्कार

करना "नृयज्ञ" है। यथा शक्ति इन पञ्चमहायज्ञों को करनें वाला मनुष्य गृहस्थाश्रम में रहता हुआ भी पांच पापों के दोषों से युक्त नहीं होता।

उपरोक्त पञ्च यज्ञों में देव यज्ञ करने हेतु मनुस्मृति में कहा है कि–

अग्नौ प्रस्ताहुतिः सम्यक् आदित्यमुपतिष्ठते।
आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः।।

मनु. ३।७६

विधि पूर्वक अग्नि में छोड़ी हुई आहुति सूर्य को प्राप्त करती है, सूर्य से वृष्टि तथा वृष्टि से अन्न और अन्न से प्रजायें उत्पन्न होती है। इस प्रकार वृष्टि, अन्न और प्रजाओं की उत्पत्ति का मूल कारण हवन ही है अतः यज्ञ करना परम आवश्यक है।

श्रीमद्भगवद् गीता में श्री कृष्ण भगवान ने अठारह अध्यायों में अनेंक स्थानों पर यज्ञ करनें की आज्ञा दी है–

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्ट कामधुक्।। ३।१०।

प्रजापति ब्रह्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में यज्ञ सहित प्रजाओं की सृष्टि उत्पन्न कर उनसे कहा–तुम लोग यज्ञ के द्वारा वृद्धि को प्राप्त होओ, और यह यज्ञ तुम लोगों को इच्छित कामनाओं के देने वाला हो। गीता में तो स्वयं भगवान ने यहाँ तक कहा कि यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाने वाले मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाते है और जो पापी मनुष्य अपना शरीर–पोषण करने के लिए अन्न पकाते हैं वे पाप को ही खाते है–

यज्ञ शिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।।३।१३

यज्ञ कर्म को मनुष्यों और देवताओं के परस्पर कल्याण

हेतु होना आवश्यक है क्यो कि देवताओं को भोजन यज्ञ से प्राप्त होता है, और मनुष्यों को सर्वाभिष्ट देने वाले देवता ही हैं, भगवान ने कहा है कि यज्ञादि कर्मों से इन्द्रादि देवताओं को हवि देकर सन्तुष्ट करो, जिससे देवता लोग भी तुम पर प्रसन्न होकर तुम्हारा पालन–पोषण करें इस प्रकार परस्पर कल्याण होगा–

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।।३।११।

संसार में अन्नरस से ही शरीर, प्राण और मन का निर्माण होता है, अन्न से सम्पूर्ण जीव की स्थिति है और अन्न वृष्टि से, वृष्टि यज्ञ से ही सम्भव है–

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भव।।३।१४।।

यज्ञ भोगवाद का समर्थन नहीं करता क्योंकि भोगों से मानव शक्ति का व्यय होता है अतः इस शक्ति के व्यय को रोकनें के लिये श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ का सहारा लेना पड़ता है क्यो कि यज्ञकर्ता शत्रु मित्र का भेदभाव नही करता, यज्ञकर्ता चारों ओर अपनें आत्मीय जनों के ही दर्शन करता है, तभी भगवान ने स्वयं को यज्ञरूप होनें की घोषणा की–

अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम्।
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यंमहमग्निरहं हुतम्।।६।।१६।।

श्रौत कर्म मै हूँ, यज्ञ मैं हूँ, स्वधा मैं हूँ, अग्नि मैं हूँ और हवन रूपी क्रिया भी मै ही हूँ। तभी यज्ञ को–

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महवि ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना।।४।२४।।

होम पात्र भी ब्रह्म है हवि भी ब्रह्म है तथा ब्रह्म रूप अग्नि में ब्रह्म रूप कर्ता के द्वारा जो हवन किया गया है तथा ब्रह्मरूप कर्म में समाधिस्थ उस,पुरुष के द्वारा जो प्राप्त होने

करना "नृयज्ञ" है। यथा शक्ति इन पञ्चमहायज्ञों को करनें वाला मनुष्य गृहस्थाश्रम में रहता हुआ भी पांच पापों के दोषों से युक्त नहीं होता।

उपरोक्त पञ्च यज्ञों में देव यज्ञ करने हेतु मनुस्मृति में कहा है कि–

अग्नौ प्रस्ताहुतिः सम्यक् आदित्यमुपतिष्ठते।
आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः।।

मनु. ३।७६

विधि पूर्वक अग्नि में छोड़ी हुई आहुति सूर्य को प्राप्त करती है, सूर्य से वृष्टि तथा वृष्टि से अन्न और अन्न से प्रजायें उत्पन्न होती है। इस प्रकार वृष्टि, अन्न और प्रजाओं की उत्पत्ति का मूल कारण हवन ही है अतः यज्ञ करना परम आवश्यक है।

श्रीमद्भगवद् गीता में श्री कृष्ण भगवान ने अठारह अध्यायों में अनेक स्थानों पर यज्ञ करनें की आज्ञा दी है–

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्ट कामधुक्।। ३।१०।

प्रजापति ब्रह्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में यज्ञ सहित प्रजाओं की सृष्टि उत्पन्न कर उनसे कहा–तुम लोग यज्ञ के द्वारा वृद्धि को प्राप्त होओ, और यह यज्ञ तुम लोगों को इच्छित कामनाओं के देने वाला हो। गीता में तो स्वयं भगवान ने यहाँ तक कहा कि यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाने वाले मनुष्य सब पापों से मुक्त हो जाते है और जो पापी मनुष्य अपना शरीर–पोषण करने के लिए अन्न पकाते हैं वे पाप को ही खाते है–

यज्ञ शिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्।।३।१३

यज्ञ कर्म को मनुष्यों और देवताओं के परस्पर कल्याण

हेतु होना आवश्यक है क्यो कि देवताओं को भोजन यज्ञ से प्राप्त होता है, और मनुष्यों को सर्वाभिष्ट देने वाले देवता ही हैं, भगवान ने कहा है कि यज्ञादि कर्मों से इन्द्रादि देवताओं को हवि देकर सन्तुष्ट करो, जिससे देवता लोग भी तुम पर प्रसन्न होकर तुम्हारा पालन–पोषण करें इस प्रकार परस्पर कल्याण होगा–

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ।।३।११।

संसार में अन्नरस से ही शरीर, प्राण और मन का निर्माण होता है, अन्न से सम्पूर्ण जीव की स्थिति है और अन्न वृष्टि से, वृष्टि यज्ञ से ही सम्भव है–

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भव।।३।१४।।

यज्ञ भोगवाद का समर्थन नहीं करता क्योंकि भोगों से मानव शक्ति का व्यय होता है अतः इस शक्ति के व्यय को रोकनें के लिये श्रेष्ठतम कर्म यज्ञ का सहारा लेना पड़ता है क्यो कि यज्ञकर्ता शत्रु मित्र का भेदभाव नही करता, यज्ञकर्ता चारों ओर अपनें आत्मीय जनों के ही दर्शन करता है, तभी भगवान ने स्वयं को यज्ञरूप होनें की घोषणा की–

अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम्।
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यंमहमग्निरहं हुतम्।।६।।१६।।

श्रौत कर्म मै हूँ, यज्ञ मैं हूँ, स्वधा मैं हूँ, अग्नि मैं हूँ और हवन रूपी क्रिया भी मै ही हूँ। तभी यज्ञ को–

ब्रह्मार्पणं ब्रह्महवि ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना।।४।२४।।

होम पात्र भी ब्रह्म है हवि भी ब्रह्म है तथा ब्रह्म रूप अग्नि में ब्रह्म रूप कर्ता के द्वारा जो हवन किया गया है तथा ब्रह्मरूप कर्म में समाधिस्थ उस,पुरुष के द्वारा जो प्राप्त होने

योग्य है वह भी ब्रह्म ही है। यज्ञ की इस श्रेष्ठता के कारण भगवान ने इसे न त्यागने योग्य तथा ग्रहण करने की प्रेरणा की है–

यज्ञ दान तपः कर्म न त्याज्यं कार्य मेवतत्।
यज्ञोदानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।।१८।।५।।

यज्ञ, दान और तपरूप कर्म त्यागनें योग्य नहीं है वरन यज्ञ तो करने के योग्य हैं क्योंकि यज्ञ, दान, तप तो मनीषियों को पवित्र करने वाले हैं।

वेदों में भी यज्ञ करनें से मिलने वाले लाभों पर विशिष्ट रूप से प्रकाश डाला गया है ऋग्वेद में कहा है–"यज्ञ से ज्ञान वृद्धि और बल की वृद्धि होती है" (१।१३।३)" यज्ञ सुखों की वर्षा करने वाला है "(१।१६।१।१)" जो यज्ञ करता है, वह धन, एश्वर्य, तेज तथा यश और कीर्ति से मनुष्यों में चमकता है और अन्त में आत्मज्ञानी होकर अमर हो जाता है" (६।५।५५)

यजुर्वेद में यज्ञ पर प्रकाश डालते हुए कहा गया है– "यज्ञ से अशुद्ध तत्वों का नाश होता है" (१।१३)"....यज्ञ से दिव्य वातावरण की उत्पत्ति होती है। "(१।१५)" यज्ञ से आन्तरिक शत्रुओं का नाश होता है"(१।१७) "यज्ञ नेत्रों की रक्षा करने वाला है" (२।१६) "यज्ञ से असुरों का नाश होता है" (२।३०) "यज्ञ वीरता दायक तथा कायरता विनाशक है" (४।३७) "यज्ञ देवताओं, मनुष्यों, पितृजनों और अपने प्रति कये गये जाने या अनजाने पापो से बचाने वाला है (८।१३) "यज्ञ से आत्म बल की वृद्धि होती है" (१७।६५) "यज्ञ से सद्बुद्धि की प्राप्ति होती है" (२०।८५) अथर्व वेद ने यहां तक कहा है कि यदि रोगी अपनी जीवन–शक्ति भी खो चुका हो, निराशा जनक स्थिति में पहुंच गया हो, मरण काल भी समीप आ पहुँचा हो तो भी यज्ञ उसे मृत्यु के चंगुल से बचा लेता है

और सौ वर्ष तक जीवित रहने के लिये पुनः बलवान कर देता है (अथर्व वेद ३।११।२) "यज्ञ ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को बांधने वाला नाभि स्थान है" (६।१०।६६) यज्ञ हीन का तेज नष्ट हो जाता है" (१२।२।३७) उपरोक्त वाक्य नारायण भगवान ने स्वयं वेदों के द्वारा कहे है क्योंकि ब्रह्मा ने वेदों को उत्पन्न कर वेदों को साक्षात नारायण कहा है–"वेदो नारायण साक्षात्" (वृ. नारदपुराण ४।१७)। पुराणों में भी यज्ञ की अपार महिमा का वर्णन हुआ है और कहा है कि यज्ञ से ही परम पुरुष नारायण की ही आराधना होती है। श्रीमद्भागवत में स्पष्ट वर्णित है–

यस्य राष्ट्रे पुरे चैव भगवान यज्ञ पूरुषः।
इज्यते स्वेन धर्मेण जनैवर्णा श्रमान्वितैः।।
तस्यराज्ञो महाभाग भगवान् भूतभावनः।
परीतुष्यति विश्वात्मा तिष्ठतो निजशासने।।
(४.१४.६.१६)

जिसके राज्य अथवा नगर में वर्णाश्रम धर्मों का पालन करने वाले पुरुष स्वधर्म पालन के द्वारा भगवान यज्ञ पुरुष की आराधना करते हैं, हे महाभाग भगवान अपनी वेदशास्त्र रूपी आज्ञा का पालन करने वाले उस राजा से प्रसन्न रहते हैं क्योकि वे ही सारे विश्व की आत्मा तथा सम्पूर्ण प्राणियों के रक्षक है।

पद्म पुराण के सृष्टि खण्ड में कहा गया है कि यज्ञ से देवताओं का पोषण होता है तथा यज्ञ द्वारा वृष्टि होने से मनुष्यों का पालन होता है इस प्रकार संसार का पालन पोषण करने के कारण ही यज्ञ कल्याण के हेतु कहे गये हैं–

यज्ञेनाप्यायिता देवा वृष्ट्युत्सर्गेण मानवाः।
आप्यायनं वै कुर्वन्ति यज्ञाः कल्याण हेतवः (३.१२४)

सभी पुराणों ने यज्ञों के यथासम्भव सम्पादन पर अत्यधिक

बल दिया है यज्ञों का फल केवल इहलौकिक ही नहीं अपितु पारलौकि भी है इसके अनुष्ठानों से देवों, ऋषियों, दैत्यों, किन्नरों, नागों, मनुष्यों तथा सभी को अपने अभिष्ट कामनाओं की प्राप्ति ही नहीं हुई है, प्रत्युत उनका सर्वाङ्गीण अभ्युदय भी हुआ है। अतः इनका सम्पादन अवश्य करणीय है।

मत्स्य पुराण में यज्ञ के निम्न लक्षण बताये गये है–

देवानां द्रव्य हविषा ऋकसाम यजुषांतथा।
ऋत्विजां दक्षिणानांच संयोगो यज्ञ उच्च्यते।।

जिस कर्म विशेष में देवता, हवनीय द्रव्य, वेद मंत्र, ऋत्विक् एवं दक्षिणा इन पाँच उपादानों का संयोग हो उसे यज्ञ कहतें हैं।

जो मनुष्य देवताओं का पूजन करके वेद मन्त्रों के उच्चारण से हवनीय द्रव्य को ऋत्विक् के द्वारा अग्नि में अर्पित करता है तथा ऋत्विक् को दक्षिणा से सन्तुष्ट करता है वे इस शरीर से ही स्वर्ग और अपवर्ग प्राप्त कर सकते हैं।

प्राचीन काल में अनेक प्रकार के यज्ञ हुआ करते थे, परन्तु वर्तमान समय में विष्णुयाग, रुद्रयाग, शत्चण्डीयाग, गायत्रीयाग आदि देवताओं के पोषण के लिये तथा अनिष्ट नाश, आयु–आरोग्यता की वृद्धि, भगवान की भक्ति, विश्वशान्ति, वातावरण की शुद्धि, तीनों ताप व पाप के क्षयार्थ एवं मुक्ति के लिये किये जाते हैं।

उक्त यज्ञों को सम्पन्न करने हेतु मैंने "सम्पूर्ण हवन रहस्यम्" में सर्वोपकारार्थ अनेक स्थानों पर हिन्दी का प्रयोग कर पुस्तक को यज्ञार्थ सरल बना दिया है।

यज्ञकर्म करने व कराने वाले महानुभावों को इस पुस्तक से कुछ भी उपकार होगा तो निज परिश्रम को सफल समझूँगा।

अन्त में श्री विद्वज्जनों से प्रार्थना करता हूं कि यदि इस

पुस्तक में कोई मानवजन्य भूल मुझसे हुई हो तो उसे सुधार कर मुझे क्षमा करेंगे तथा भूल की सूचना देने की कृपा करेंगे जिससे पुनरावृत्ति में उसका सुधार किया जा सकेगा।

विद्वत् वृन्द इस पुस्तक के सम्बन्ध में मुझे अपने विचारों से अवगत करना न भूलेंगे ऐसी मेरी आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास भी है जिससे मैं पुनः जन–कल्याण के लिए सदैव तत्पर रहूँगा।

मकर संक्रान्ति
१४ जनवरी सन् १९९८
भाष्कर प्रयाग।।

सर्वविद्वज्जनानुरागी
पं. शिवस्वरूप प्रसाद
याज्ञिक।
भटवाड़ी (टकनौर), उत्तरकाशी
दूरभाष– ०१३७४४ ४४२४

सम्मति पत्रम्

अतीत प्रसन्नतायाः विषयोऽयं यत् उत्तरकाशी जनपदान्तर्गतेन 'भाष्करप्रयाग' (भटवाड़ी) क्षेत्र वास्तव्येन श्री पंडित प्रवरेण शिवस्वरूप याज्ञिकेन हवन पद्धतीयं विरचिता।

द्वितीय सोपाने अस्यां पद्धत्यां यन्त्रादीनां निर्माणं सर्वेषां देवानां पूजन यज्ञविधानञ्च वैदिकरीत्यानुसारेण संकलितम्।

पुस्तकमिदं कर्मकाण्ड कर्तृणां पुरोहितानां विदुषां च कृते परमोपयोगि भूयादिति भगवन्तं समप्रार्थये।

हरिवोधिनी एकादशी
सं० २०५५ कार्तिक

आचार्य दशरथ प्रसाद भट्ट
निवासी बूढ़ाकेदार टि० ग०
अध्यापक– श्री विश्वनाथ संस्कृत
महाविद्यालय, उत्तरकाशी

शुभाशंसनम्

"यज्ञो वै विष्णुः"

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
इति श्रुति प्रमाणेः सुसिद्धं यत् सर्व नियन्ता सर्व द्रष्टा सर्वव्यापी च परमेश्वरो यज्ञ स्वरूप एव, देवाऽपि यज्ञ स्वरूपं तं परमेश्वरं यज्ञेनैवायजन्त। यज्ञेन च हवन द्वारा अग्नि मुखेनैव भगवान् हविर्गृह्णाति। हविषा च प्रीतः सन् भक्तानां एहिक पारलौकिकं च कल्याणं साधयति अपरञ्च यज्ञ द्वारा मानवाः सर्वारिष्ट निरसन पूर्विकांशश्वतिकी शान्तिं मुक्तिश्च लभते तत्र साधकानां मोक्षेच्छूणां कृते मुक्ति प्राप्तये ज्ञानकाण्ड कर्मकाण्ड चेति मार्गद्वयम्। कर्मकाण्डं ज्ञानकाण्डस्य प्रथमं सोपानम्। कर्मकाण्डं विना ज्ञानकाण्डं अपूर्णमेव। कर्मकाण्डं मीमांसा शास्त्रान्तर्गतम्। मीमासकाश्च। कर्मएव ईश्वरेति मन्यते। 'कर्मेतिमीमांसकाः' इतिवचनात्। यज्ञादिक हवनादिकंच सर्वकर्म परमेश्वर रूपमेव।

प्रकर्षहर्षस्यायं विषयोयत् भटवाड़ी भाष्करप्रयाग स्थेन श्री पं. शिवस्वरूप महाभागेन सर्वाङ्ग पूर्ण यज्ञविधान प्रतिपादक हवन रहस्य नामकं पुस्तकं याज्ञिकानां सौविध्याय प्रकाश्यते। पुस्तकमिदं कर्मकाण्ड प्रकाण्डानां याज्ञिकानां समाजे लभतां प्रतिष्ठामिति भूयो भूयः प्रार्थ्यते तत्र भगवान भूतभावनो विश्वनाथः।

राष्ट्रीय पुरस्कार सम्मानितो
लाखीराम नौटियाल प्रधानाचार्य
उत्तरकाशीस्थ श्री विश्वनाथ संस्कृत
महाविद्यालयस्य

कार्तिकीपूर्णिमा
सम्वत् २०५५
दिनांकितम् ४.११.९८

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं०
पञ्चगव्यविधि	१३
अथ आचार्या दिवरणम्	१६
रक्षाविधानम्	१८
यज्ञकुण्ड पूजा	१६
पंचभूसंस्कार	२३
पात्रासाधनम्	२६
अथ घृताहुतिः	३०
अग्निपूजनम्	३१
हवन संकल्प	३२
सर्वप्रायश्चित संज्ञक पंचवारुणहोमः	३३
ततोगणपति प्रीत्यर्थ होमः	३४
नवगृहाणां होमः	३४
नवगृहाधिदेवतानां होमः	३६
नवगृह प्रत्यधिदेवतानां होमः	३७
पंचलोकपाल देवता होमः	३८
दसदिक्पालानां होमः	३६
वास्तुहोमः	४१
षोडष स्तम्भ हवनम्	४३
चतुर्वेद हवनम्	४५
सर्वतो भद्रदेवता होमः	४६
लिंगतोभद्रदेवता होमः	४७
चतुः षष्ठियोगिनी होमः	४८
क्षेत्रपाल होमः	५०
प्रधानदेवता होमः	५२
विष्णु याज्ञ	५२
ध्यानमः	५३
षडंगन्यास	५५
विष्णुसहस्र नामावलिः होमः	५६
गायत्रीयाज्ञ	७७
गायत्री सहस्रनाम हवनम्	७८
रुद्रयाग न्यासविधानम्	१०२
अथ षडंगन्यास	१०५
अथ रुद्रयाग (प्रथम अध्याय)	१०६
(द्वितीय अध्याय)	१०८
(तृतीय अध्याय)	११०
(चतुर्थ अध्याय)	११३
(पंचम अध्याय)	११५
(षष्ठ अध्याय)	१२७
(सप्तम अध्याय)	१२८
(अष्टम अध्याय)	१२६
शान्त्य अध्याय	१३७

विषय	पृष्ठ सं०	विषय	पृष्ठ सं०
स्वति प्रार्थन मंत्राः	१४०	चतुर्वेद पूजनम्	१७०
दुर्गायाग न्यास विधानम्	१४२	प्रधान देवस्य	१७०
एकादश न्यास	१४५	उत्तरांगपूजनम्	
श्री सूक्तम्	१५५	अग्निपूजनम्	१७१
दुर्गायाग विधान		स्विष्ट कृद्धोमः	१७१
(प्रथम अध्याय)	१५८	बलिदानम्	१७२
(दूसरा अध्याय)	१५६	पूर्णाहुतिः	१७६
(तीसरा अध्याय)	१५६	वसोर्धरा होम्	१७७
(चौथा अध्याय)	१६०	त्रयायुषकरणम्	१७८
(पांचवा अध्याय)	१६१	पूर्णपात्रादानम्	१७८
(छठा अध्याय)	१६२	बर्हिहोम्	१७६
(सातवां अध्याय)	१६२	यज्ञनारायण की आरती	१७६
(आठवां अध्याय)	१६३	आरती	१८०
(नौंवा अध्याय)	१६३	पुष्पांजलि	१८१
(दसवां अध्याय)	१६४	दक्षिणादानम्	१८३
(ग्यारहवां अध्याय)	१६४	गौदानविधि	१८४
(बारहवां अध्याय)	१६५	गौदानसंकल्प	१८६
(तेरहवां अध्याय)	१६५	श्रेयोदानम्	१८७
उत्तर पूजनम्	१६७	अभिषेकमंत्राः	१८८
षोडष स्तम्भ उत्तर पूजनम्	१६८	देवताविसर्जनम्	१६०
		कुण्ड स्वरूपम्	१६१–२००

पंचगव्य विधिः

एक ताम्रपात्र में गोमूत्र गोबर दूध दधि एवं घी में जल डालकर कुशा से अभिमंत्रित करें।

गोमूत्र–ॐ गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासह। बृहत्त्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तुत्त्वा।।

मंत्र से कपिला गाय का गोमूत्र लेवें।।

गोमय–ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

मंत्र से गोवर मिलायें।।

दूध–ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवा व्वाजस्य सङ्गथे।।

मंत्र से दूध को गोमूत्र गोमय में मिलाये।।

दधि–ॐ दधिक्राब्णोऽअकारिषञ्जिष्णोरश्वस्य वाजिनः सुरभि नो मुखाकरत्प्रण आयूँ ्षितारिषत्।।

मंत्र से दधि मिलावें।

धृत–ॐ तेजो ऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि। से घी लेवें।

कुशोदक–ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनो र्बाहुभ्यां पूष्णोहस्ताभ्याम्।।

कुशा से पञ्चगव्य मिलाकर ॐ मंत्र से अभिमंत्रित करें।

प्रोक्षण मंत्र—ॐ आपोहिष्टा मयोभुवस्ता न ऽ ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्ष.से।। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः।। तस्माऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।

मंत्र से पञ्चगव्य का प्रोक्षण यज्ञमंडप में कर निम्न मंत्र से पञ्चगव्य प्राशन करें।

प्राशन मंत्र—ॐयत्वगस्थिगतंपापं देहे तिष्ठतिमामके (तावके)। प्राशनात्पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम्।।

आचमन—ॐ अच्युतायनमः। ॐ केशवाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। हस्तप्रक्षालनम्। हाथ धोकर बांये हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुष्ठा से अभिमंत्रित कर निम्न मंत्र से शरीर पर जल के छींटे दिलायें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो र्वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।
य स्मरेत् पुण्डरीकाक्षः सः वाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

भूतोत्सारणम्—अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

सरसों लेकर दश दिशाओं में फेंक देवें।

आसन पूजन—पृथ्वीति मंत्रस्य मेरूपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः। ॐ पृथ्वित्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च

धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

मंत्र से भूमि का पूजन कर लेवें।

शिखावान्धने का मंत्र– ब्रह्मवाक्य सहस्त्रेण शिववाक्य शतेन च । विर्ष्णोनाम सहस्त्रेण शिखाग्रन्थिं करोम्यहम्।।

शंख पूजन–त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।
नमितः सर्वदेवेश्च पाञ्चजन्यनमोऽस्तुते।।

शंख का गन्धाक्षत पुष्प आादि से पूजन कर लेवें।

घण्टा पूजन–सर्ववाद्यमयी घण्टायै नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।। आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम्। सर्व भूत हितार्थाय घण्टानादं करोम्यहम्।।

दीप पूजन–वह्निदेवाय दीपपात्राय नमः। सम्पूज्य।।
भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्न कृत्।
यावत् होमंसमाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरो भवः।।

ब्राह्मण पूजन–नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मण हिताय च।
जगद्हिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।

यजमान का तिलक करने का मंत्र–ॐ युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तंपरितस्तुषः रोचन्ते रोचना दिवि। युञ्जन्त्स्य काम्या हरी विपक्षसारथे। शोणा धृष्णूनृवाहसा।।

॥ अथ आचार्यादिवरणम् ॥

यजमान हाथ में जल तिल वरण सामग्री ले लेवे।

वरण संकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु ॐ तत्सद् ब्रह्म श्री मद्भगवतो महापुरूषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवश्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्तान्तर्गते अमुकदेशे, अमुक क्षेत्रे, गंगा यमुनयोर अमुकदिग्भागे अमुक प्रदेशे अमुक जनपदे प्रभवादिषष्टि संवत्सराणां मध्ये अमुक नाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुक नक्षत्रे अमुकयोगे अमुक करणे अमुक राशिस्थिते चन्द्रे अमुक राशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा—यथा राशिस्थितेषु सत्सु एवं गुण विशेषेण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुक शर्म्माऽहं (वर्माऽहं—गुप्तोऽह) अमुक राशि सपत्नीके सवालकुमार सहितायां करिष्यमाणं श्री अमुक देवता प्रीत्यर्थं श्रुति—स्मृति

पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं मम इह जन्मनि जन्मान्तरे कृत कायिक वाचिक—मानसिक सांसर्गिक ज्ञातऽज्ञात पाप शमनार्थ ग्रहमख विष्णुयाग, रूद्रयाग वा देवियाग होमकर्म कर्तृमेभिश्चन्दन ताम्बूलकमण्डलु वासोभिरा—चार्यत्वेन (ब्रह्मत्वेन वा ऋत्विक) युष्मानहं वृणे।।

आचार्यवरण— प्रथम यजमान आचार्य वरण कर प्रार्थना करें—

आचार्यस्तु यथास्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रत।।

ब्रह्मावरण—यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा वेदशास्त्र विशारदः।
तथात्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्माभव द्विजोत्तमः।।

ऋत्विक्वरण—ऋग्वेदः पद्य पत्राक्षो गायत्रः सोम दैवतः।

अत्रिगोत्रस्तु विप्रेन्द्र ऋत्विक्त्वं में मखे भवः।।

आचार्यब्रह्मा ऋत्विक वरण लेते हुए वृतोऽस्मि कहें।

ब्राह्मण के हाथ में सूत्र बांधने का मंत्र—

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षायाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्य माप्यते।।

॥ रक्षाविधानम् ॥

एक दोने में रक्षा सूत्र पीली सरसों चावल दक्षिणा एवं सुपारी रख कर उसमें से चावल सरसों दश दिशाओं में निम्न श्लोक के क्रम से फेंकता रहे।

ॐ पूर्वे रक्षतु वाराह आग्नेयां गरुड़ध्वजः।
दक्षिणे पद्मनाभस्तु नैऋत्यां मधुसूदनः।।
पश्चिमें चैव गोविन्दो वायव्यां तु जनार्दनः
उत्तरे श्रीपति रक्षेद्दीशान्यां हि महेश्वरः।।
उर्ध्वं रक्षतु धाता वो ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु।
अनुक्तमपि यत्स्थानं रक्षत्वीशोममादि धृक्।।

यजमान को रक्षा सूत्र वांधने का मंत्र

ॐ यदाबन्ध्नन्दाक्षायणा हिरण्य ँ शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आवध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जर दष्टिर्यथासम्।। येन वद्धो वली राजा दानवेन्द्रो महावलः। तेन त्वामनुबन्ध्नामि रक्षे माचल मा चल।।

॥ यज्ञ कुण्ड पूजा ॥

यजमान यज्ञ कुण्ड के पश्चिम भाग में बैठकर प्राणायाम कर तिल जल हाथ में लेकर संकल्प करे–

पूर्वोक्त गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक यज्ञ (ग्रहमख रुद्रयाग विष्णुयाग वा शत्चण्डी याग) कर्मणि कुण्ड पूजनम्, मेखला कण्ठ पूजनम्, नाभि पूजनम्, अग्निस्थापनमहं करिष्ये।

गोबर से लीपकर फिर पञ्चगव्य से यज्ञ कुण्ड का प्रोक्षण करे–

ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिवमातरः।। तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः।।

अब दाहिनें हाथ से यज्ञ कुण्ड का स्पर्श कर आवाहन करें–

आवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्म विनिर्मितम्।
शरीरं यच्च ते दिव्यं अग्निधिष्ठानमद्भुतम्।।

यज्ञ सिद्धि हेतु हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करे–

ये च कुण्डे स्थिता देवा कुण्डाङ्गे याश्च देवता।
ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञ सिद्धिं मुदान्विता।।

हे कुण्ड तव रूपं तु रचितं विश्वकर्मणाः। अस्माकं वाञ्छितां सिद्धिं यज्ञ सिद्धि ददस्व च।।

अब कुण्ड के मध्य में विश्वकर्मा की पूजा करे–

ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्। तस्मैः विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्। विश्वकर्मणे नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्य च समर्पयामि। पूजन कर प्रार्थना करे।

अज्ञानाद् ज्ञानतो वापि दोषा ये खननोद्भवाः।
नाशाय त्वरिवलांस्तांस्तु विश्वकर्मन् नमोऽस्तु ते।।

अब मेखला की पूजा के क्रम में चार अंगुल ऊँची चौड़ी ऊपर की मेखला को श्वेत अक्षतों से अलंकृत कर विष्णु भगवान की पूजा करे–

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमें त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़मस्य पाँ सुरे स्वाहा।। विष्णवे नमः गंधाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि।।

मध्य की मेखला तीन अंगुल ऊँची व चौड़ी रक्त वर्ण के अक्षतों से अलंकृत कर ब्रह्मा की पूजा करे–

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरुस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन ऽ आवः। सवुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः स्रतश्च योनिमसतश्च विवः।। ब्रह्मणे नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि।।

सबसे नीचे की मेखला दो अंगुल ऊंची व दो अंगुल चौड़ी कृष्ण वर्ण के अक्षतों से अलंकृत कर शिव का पूजन करे–

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। रुद्राय नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।।

अब गौरी पूजन हेतु एक सुपारी को मौली बांधकर पूजन करे–

ॐ अम्बे ऽ अम्बिके ऽ अम्बालिके नमानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम्।। गौर्ये नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि।।

कुण्ड योनि पूजन निम्न मंत्र से करे–

ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि मा त्वा हिँ सीन्मा माहिँ सीः। कुण्ड योन्ये नमः।। गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि।।

प्रार्थयेत्–

सेवन्ते महतीं योनिं सिद्धाः देवर्षि मानवा।
चतुरशीति लक्षाणि पन्नगाद्याः सरिसृपाः।।
पशवः पक्षिणः सर्वे संसरन्ति यतो भुवि।
योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पत्ति हेतुका।।
मनोभवयुता देवी रतिसौख्य प्रदायिनी।
मोहयित्री सुराणां च जगद्धात्रि नमोऽस्तुते।।

यज्ञ कुण्ड में नीले रंग के चावलों से सजाकर कण्ठ में रुद्र का पूजन करे–

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा ऽ अधः क्षमाचराः तेषाँ सहस्रयोजने ऽ व धन्वानि तन्मसि।। कण्ठे

रुद्राय नमः।। गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।

प्रार्थना– जीवनं सर्व जन्तूनां स्रगादिस्थानमुत्तमम्।
उत्तमांगस्य चाधारं कण्ठं पूजयाम्यहम्।।

यज्ञ के नैऋत्य कोण में वास्तुदेव का आवाहन करे–

विशन्तु भूतलेनागाः लोकपालाश्च सर्वतः।
कुण्डे नैर्ऋत्य तिष्ठन्तु आयुर्वलकराः सदा।।

वास्तु का पूजन करे–

ॐ वास्तोस्पते प्रतिजानी ह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।। वास्तुपुरुषाय नमः गंधाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।।

प्रार्थना– पूज्योऽसि त्रिषु लोकेषु यज्ञरक्षादि हेतवे।
त्वां विनानार्चनं सिद्धेद्यज्ञदानादिषु क्वचित्।।

यज्ञकुण्ड की चारों दिशाओं में चारों वेदों का पूजन करे–

ॐ ऋग्वेदं स्थापयेद् पूर्वे यजुर्वेदंच दक्षिणे।
पश्चिमे सामवेदं च उत्तरे च अथर्वणम्।।

चतुर्वेदेभ्यो नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं च समर्पयामि।

ईशान में रुद्र कलश स्थापन कर पूजन करे–

ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्। तेषा ँ सहस्रयोजने वधन्वानि तन्मसि। रुद्रकलश देवताभ्यो नमः।। पूजन कर लेवें।

।। अथ पञ्च भू संस्कार।।

पहले यज्ञ मण्डप को कुशा से साफ कर देवें। फिर एक हाथ लम्बा कुशा लेकर उससे यज्ञकुण्ड में बुहारा देवें—
हस्तमात्र परिमितां चतुरस्रां भूमिं कुशैः परिसमूह्य तानैशान्यां परित्यज्य।। कुशा को ईशान में छोड़कर— गोमयेनोपलिप्य। यज्ञकुण्ड को गोबर से लीप देवें।

अब स्रुव दाहिनें हाथ में लेकर श्रुव के मूल से पश्चिम से पूर्व की तरफ अंगूठा तर्जनी (प्रादेश मात्र) लम्बाई की तीन रेखा खीचें—

स्रुव मूलेन प्राङ्मुखं प्रादेशमात्रं उत्तरोत्तर क्रमेण त्रिरुल्लिख्य।।

रेखाओं से अनामिका अंगुष्ठा से कुछ मिट्टी उठाकर ईशान कोण में फेंक दें—

उल्लेखन क्रमेण अनामिका अंगुष्ठाभ्यां मृद्‌मुद्‌धृत्य ऐशान्यां दिशि स्थापयेत्।

यज्ञ कुण्ड में जल के छींटे देवें—

ततः उदकेन अभ्युक्षणम्।।

ये पाँचों भू संस्कार जहाँ अग्नि स्थापन हो वहाँ करने चाहिये।

।। अथ अग्निस्थापनम्।।

वामहस्तानामिकया भूमि स्पृशन् ताम्रपात्रेण (कांस्यपात्रेण वा) आहृतमग्निं स्वाभिमुखं निदध्यात्। तद्रक्षार्थकिंचिन्नियुज्य आनीताग्निपात्रे अक्षतादि प्रक्षेपः।।

बायें हाथ की अनामिका से भूमि का स्पर्श करे। ताँबे या कांसी के पात्र में अग्नि मंगाकर सामने रखें। अग्निरक्षार्थ किसी को नियुक्त कर यज्ञकुण्ड में अग्नि डालकर अग्निवाले पात्र में अक्षतादि डाल देवें।

योनि मार्ग से अग्नि को यज्ञ कुण्ड में स्वाभिमुख स्थापन करते हुए यह मंत्र बोलें–

ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवाँ २ ऽ आ सादयादिह।।

ततोऽग्नि प्रदक्षिणा कृत्य पुष्प चन्दन ताम्बूल पूगीफल द्रव्य वस्त्राण्यादाय अग्नेर्दक्षिणतो वास्त्रतरणं कल्पयित्वा ब्राह्मणं पाद प्रक्षालन गन्ध माल्यादिभिसम्पूज्य।।

पुनः अग्नि की परिक्रमा कर दक्षिण में ब्रह्मा को वरण कर पूजन कर लेवें–

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। स बुध्न्याऽ उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च बिबः।। ततः प्रणीतापात्रं वारण काष्ठमयं द्वादशांगुलौच्यं चतुरंगुल मध्य खातं पद्माकृतिं पुरतो

निधाय जलेनापूर्य कुशैराछाद्य ब्रह्मणो मुख मवलोक्य अग्नेरुतरतः कुशोपरि निदध्यात्।

इसके बाद यजमान प्रणीतापात्र यज्ञीय काष्ट का बना हुआ बारह अंगुल प्रमाण ऊँचा एवं चार अंगुल गहरा (पद्माकृती) जल से भरकर कुशाओं से ढककर ब्रह्मा का मुख देखकर (या ब्रह्मा को दिखाकर) अग्नि के उत्तर की ओर कुशा पर रख देवे।

ततः बर्हिषां परिस्तरणम्। बर्हिर्नाम्नामेकाशीति दर्भदलानां अथवा यावल्लब्धानां चतुर्भागं कृत्वा यथा एकेन दर्भेण शून्य हस्तो न भवति।।

यहां ८१ दर्भ दल या जितनें उपलब्ध हो उनके चार भाग करे, एक कुशा हाथ में रहे जिससे हाथ खाली न रहे।

प्रथम भागमादाय अग्नेयादीशानान्तम्।

पहले भाग को अग्नि कोण से ईशान तक रखे।

द्वितीय भागमादाय ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्।।

दूसरे भाग को लेकर ब्रह्मा (दक्षिण) से अग्नि कोण तक रखे।

तृतीय भाग मादाय नैर्ऋत्यादवायव्यान्तम्।।

तीसरे भाग को लेकर नेर्ऋत्य से वायव्य तक रखे।

चतुर्थभागमादाय अग्नितः प्रणीता पर्यन्तं।।

चतुर्थ भाग लेकर अग्नि से प्रणीता तक अग्रभाग पूर्व की ओर रखते हुए बिछा दें।

।। अथ पात्रासादनम्।।

ततो अग्नेरुतरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्र करणार्थं साग्रमनन्तगर्भकुशपत्र द्वयं, प्रोक्षणी पात्रं आज्यस्थाली, चरुस्थाली, सम्मार्जनकुशाः पञ्च, उपयमनकुशाः सप्त, समिधस्तिस्त्रः प्रादेशमात्रः, स्त्रुवखादिर, आज्यं षट्पञ्चाशदुत्तरशतद्वय मुष्ट्यवछिन्नं तण्डुल पूर्णपात्रं दक्षिणा (सहितं) पवित्रच्छेदन कुशानां पूर्व पूर्वक्रमेण एतान्यासादनीयानि ।।

इसके बाद अग्नि कुण्ड के पश्चिम दिशा अथवा उत्तर की ओर से निम्न सामग्रियाँ रखे—

पवित्र तोड़ने की तीन कुशा, पवित्र करने की दो कुशा, प्रोक्षणी पात्र, घी का पात्र, चरु पात्र, संमार्जन की ५ कुशा, उपयमन की ७ कुशा प्रादेश मात्र लम्बी ३ समिधा, खैर का स्त्रुवा, चावलों से भरा हुआ दो सौ छप्पन मुष्टि प्रमाण का पूर्ण पात्र एवं दक्षिणादि रख देवे।

अथ त्रिभिः पवित्रच्छेदन कुशै द्वै पवित्रे छित्वा सपवित्र करेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणी पात्रे निधाय (पश्चात्) प्रोक्षणी पात्रं वामहस्ते धृत्वा दक्षिण हस्तानामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रं गृहीत्वा त्रिरुत्पवनम् ।।

अब तीन पवित्र छेदन कुशाओं से दो पवित्रियों को (तीन आंटे देकर) काटकर तीन को त्याग देवे और दो

को फिर दायें हाथ में रखकर इसी कुशा से प्रणीता का जल तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डाले, फिर प्रोक्षणी पात्र को बांये हाथ में लेकर दाहिने हाथ के अनामिका अंगुष्ठ से पवित्र पकड़कर प्रोक्षणी के जल को तीन बार ऊपर उछाले।

ततः प्रोक्षणी पात्रं आकाशस्थ प्रणीतोदकेनापूरयेत्। भूमौ पतति चेतदा प्रायश्चितं गोदानम्।।

फिर प्रोक्षणी पात्र को प्रणीता के जल से भर लेवें, किन्तु जल को पृथ्वी पर न गिरने दें। यदि गिर जाय तो गोदान प्रायश्चित करे।

ततः प्रोक्षणी जलेनयथासादितवस्त्वनुरूपं सेचनम्।

इसके बाद प्रोक्षणी के जल से सब सामग्री पर छीटे देवे।

ततोऽग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणी पात्रं निदध्यात्।।

अब अग्नि व प्रणीता के बीच में प्रोक्षणी पात्र को रख देवें।

आज्यास्थाल्यामाज्यनिर्वापः। आज्यस्थाली में घी भरे।

चरुपात्रे चरु प्रक्षेपः। चरु पात्र में चरु बना लें।

आज्यऽविश्रयणम्। घी को गर्म कर देवें।

ततो ज्वलतृणंमादाय आजस्योपरि प्रदक्षिणं भ्रामयित्वा वह्नौ तत्प्रक्षेपः।। एक तृण जला हुआ लेकर प्रदक्षिणा क्रम से घी के ऊपर घुमाकर अग्नि में डाल देवे।

ततो दक्षिण पाणिना श्रुवमादायाधोमुखं मग्नौ त्रिस्तापियित्वा वामहस्ते कृत्वा सम्मार्जनकुशानाम–ग्रेरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः श्रुवमूर्ध्वमुखं संमृज्य प्रणीतोद–केनाभ्युक्ष्य पुनः पूर्ववत्प्रताप्य दक्षिणतो निधाय।।

अब दाहिने हाथ में श्रुव लेकर श्रुव का मुह अग्नि में तीन बार तपाकर वामहस्त में रखकर पांच सम्मार्जन कुशा के अग्रभाग से श्रुव के अग्रभाग को मध्य से मध्य को अधोभाग से श्रुव के अधोभाग को साफ कर पुनः श्रुव को तीन बार तपा लेवे। अब इसके बाद श्रुव का *आवाहन कर श्रुव पर मौली बांध लेवें–*

आवाह्वयाम्यहं देवं स्रुवं शेवधिमुत्तमम्।
स्वाहाकार स्वधाकारवषट्कार समन्वितम्।।

श्रुव पूजन कर के दाहिनी तरफ रख देवें।

ततः आज्योत्तारणम् अवेक्षणम् अपद्रव्य निरसनं च।

फिर घी उतार कर देखें कोई खराब चीज पड़ी हो तो उसे निकाल देवें।

ततः उत्थाय उपयमनकुशानादाय वामहस्ते धृत्वा अग्नि पर्युक्षणं कृत्वा उत्तिष्ठन् मनसा प्रजापतिं धात्वा तूष्णोमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्त्रः क्षिपेत्।।

इसके बाद उठकर सात उपयमन कुशा को बायें हाथ में लेकर तथा तीनों समिधा (प्रादेशमात्र) लेकर घी में भिगोकर ब्रह्मा जी का मन में ध्यान कर चुपचाप उनको (समिधा) अग्नि में छोड़ दें।

ततः उपविश्य सपवित्र प्रोक्षण्युदकेन अग्निं पर्युक्ष्य पवित्रे प्रणीता पात्रे निधाय पातित दक्षिण जानुः कुशेन ब्रह्मणाऽन्वारब्धः समिद्धतमेंऽग्नौ स्रुवेण आज्याहुतिं जुहुयात्।।

फिर बैठकर पवित्र से प्रोक्षणी के जल को अग्नि के चारों तरफ छिड़क दें। पवित्र को प्रणितापात्र में रख दें फिर दाहिनी जंघा को नवाकर ब्रह्मा को कुशा से स्पर्श कर (ब्रह्मा से यजमान तक मौली रखकर) श्रुव से अग्नि में घी की आहुती दें।

आहुति चतुष्टये स्रुवावशिष्ट घृतस्य प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षेपः। अग्रेयथादैवतं चतुर्थ्यन्तं स्वाहान्तं नममेति त्याग च कुर्यात्।।

प्रथम चार आहुतियों में श्रुव के शेष घी को प्रोक्षणी पात्र में त्याग देवे। आगे देवता नाम के चतुर्थी विभक्ति लगाकर 'स्वाहा' व 'न मम' से प्रोक्षणी में शेष घी का त्याग करें।

ततो दक्षिण पाणिना श्रुवमादायाधोमुखं मग्नौ त्रिस्तापियित्वा वामहस्ते कृत्वा सम्मार्जनकुशानाम-ग्रेरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः श्रुवमूर्ध्वमुखं संमृज्य प्रणीतोद-केनाभ्युक्ष्य पुनः पूर्ववत्प्रताप्य दक्षिणतो निधाय।।

अब दाहिने हाथ में श्रुव लेकर श्रुव का मुह अग्नि में तीन बार तपाकर वामहस्त में रखकर पांच सम्मार्जन कुशा के अग्रभाग से श्रुव के अग्रभाग को मध्य से मध्य को अधोभाग से श्रुव के अधोभाग को साफ कर पुनः श्रुव को तीन बार तपा लेवे। अब इसके बाद श्रुव का *आवाहन कर श्रुव पर मौली बांध लेवें–*

आवाह्वयाम्यहं देवं स्रुवं शेवधिमुत्तमम्।
स्वाहाकार स्वधाकारवषट्कार समन्वितम्।।

श्रुव पूजन कर के दाहिनी तरफ रख देवें।

ततः आज्योत्तारणम् अवेक्षणम् अपद्रव्य निरसनं च।

फिर घी उतार कर देखें कोई खराब चीज पड़ी हो तो उसे निकाल देवें।

ततः उत्थाय उपयमनकुशानादाय वामहस्ते धृत्वा अग्नि पर्युक्षणं कृत्वा उत्तिष्ठन् मनसा प्रजापतिं धात्वा तूष्णोमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्त्रः क्षिपेत्।।

इसके बाद उठकर सात उपयमन कुशा को बायें हाथ में लेकर तथा तीनों समिधा (प्रादेशमात्र) लेकर घी में भिगोकर ब्रह्मा जी का मन में ध्यान कर चुपचाप उनको (समिधा) अग्नि में छोड़ दें।

ततः उपविश्य सपवित्र प्रोक्षण्युदकेन अग्निं पर्युक्ष्य पवित्रे प्रणीता पात्रे निधाय पातित दक्षिण जानुः कुशेन ब्रह्मणाऽन्वारब्धः समिद्धतमेंऽग्नौ स्रुवेण आज्याहुतिं जुहुयात्।।

फिर बैठकर पवित्र से प्रोक्षणी के जल को अग्नि के चारों तरफ छिड़क दें। पवित्र को प्रणितापात्र में रख दें फिर दाहिनी जंघा को नवाकर ब्रह्मा को कुशा से स्पर्श कर (ब्रह्मा से यजमान तक मौली रखकर) श्रुव से अग्नि में घी की आहुती दें।

आहुति चतुष्टये स्रुवावशिष्ट घृतस्य प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षेपः। अग्नेयथादैवतं चतुर्थ्यन्तं स्वाहान्तं नममेति त्याग च कुर्यात्।।

प्रथम चार आहुतियों में श्रुव के शेष घी को प्रोक्षणी पात्र में त्याग देवे। आगे देवता नाम के चतुर्थी विभक्ति लगाकर 'स्वाहा' व 'न मम' से प्रोक्षणी में शेष घी का त्याग करें।

॥ अथ घृताहुतिः॥

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये, इदं न मम।

ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय, इदं न मम।

ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये, इदं न मम।

ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय, इदं न मम।

बिना अन्वारब्धमेकाहुतिः। (ब्रह्माजी से मौली हटाकर एक आहुति देवें।)

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये, इदं न मम।।

ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये, इदं न मम।

ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे, इदं न मम।

ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय, इदं न मम।। एतामहाव्याहृतयः।।

ॐ यथा वाण प्रहाराणां कवच वारकं भवेत्।

तद्वद्देवोपघातानां शान्तिर्भवति वारिका।।

शान्तिरस्तु,पुष्टिरस्तु, यत्पापं, रोगम्, अकल्याणम् तददूरे प्रतिहतमस्तु।। पढ़कर के–

आचार्य यजमान के सिर के ऊपर जल के छींटे देवें।

॥ अथ अग्नि पूजनम्॥

ध्यानम्

ॐ चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो ऽ अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्तहस्तासो ऽ अस्यत्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महादेवो मर्त्यां२ऽ आविवेश।। ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने वैश्वानर शांण्डिल्य गोत्र साण्डिला सित देवलेति त्रिपुरान्वित भूमिमातः वरुणपितः मेषध्वज प्राङ्मुख मम संमुखो HkoAA अग्नि को प्रतिष्ठापित कर अग्निजिह्वापूजन करे–

ॐ कनकायै नमः। ॐ रक्तायै नमः। ॐ कृष्णायै नमः।

ॐ उद्गारिण्यै नमः। उत्तरमुखे सुप्रभायै नमः।

ॐ बहु रूपायै नमः। ॐ अतिरिक्तायै नमः।

अग्नये नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यंदक्षिणां च समर्पयामि।।

अग्नि प्रार्थना– अग्नि प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुतासनम्।

हिरण्यवर्णममलं समृद्धं विश्वतोमुखम्।।

त्वं मुखं सर्व देवानां सप्तार्चिरमित द्युते।

आगच्छ भगवन् अग्ने यज्ञेऽस्मिन् सन्निधौभव।।

॥ हवन संकल्प॥

अब हवन हेतु यव आदि सामग्री तथा जल लेकर संकल्प करे–

विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमेंयुगे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तेक देशे गंगा यमुनयोर्मध्ये (अथवा अमुकतीरे) वौद्धावतारे अमुक नाम संवत्सरे श्री सूर्ये अमुकायने अमुक ऋतौ महामांगल्य प्रदेमासोत्तमें मासे अमुकयोगे अमुककरणे अमुक राशि स्थिते चन्द्रे अमुक राशिस्थिते श्री सूर्ये अमुकराशिस्थिते देव गुरौ शेषेषु यथायथा राशिस्थान–स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गुण गण विशेषण–विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ अमुक गोत्रः अमुक शर्मा (वर्मा, गुप्त)ऽहं मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा श्री यज्ञपुरुष प्रीत्यर्थे सर्वपापक्षयपूर्वक–दीर्घायुर्विपुल धनधान्यपुत्रपौत्राद्यवच्छिन्न सन्ततिवृद्धि–स्थिरलक्ष्मि कीर्तिलाभ सदाभीष्ट सिद्ध्यर्थं अमुक याग कर्मणि ग्रह होम अधिदेवता प्रत्याधि देवता पञ्चलोकपाल देवता दशदिक्पाल देवता अमुक प्रधान देवता सहितानां च प्रीतये ब्राह्मण द्वारा यव तिल धान्याज्य शर्करादि द्रव्यैस्तत्त देवता मंत्रैर्यक्ष्ये।

॥ अथ सर्वप्रायश्चितसंज्ञक पञ्चवारुणहोमः॥

ॐ त्वंन्नोऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽअव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठोवह्नितमः शोशुचानों विश्वा द्वेषा ᳪसि प्र मुमुग्ध्यस्मत्।। ॐ स्वाहा।। इदमग्निवरुणाभ्यां न मम।।१।। ॐ स त्वं नो ऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ। अब यक्ष्व नो वरुण ᳪ रराणो वीहि मृडीक ᳪ सुहवो न ऽएधि।। ॐ स्वाहा।। इदंमग्निवरुणाभ्यांनमम।।२।। ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्चसत्वमित्वमयाऽ असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ᳪ स्वाहा।। इदमग्नये न मम।।३।। ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितताः महान्तः। तेभिर्नो अद्यसवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्योमरुद्भ्यः स्वर्केभ्य स्वाहा।।४।। ॐ उदुतम वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ᳪ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽ अदितये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणायादितये न ममः।।५।। अत्रोदकस्पर्शः।। इति प्रयाश्चित (पंचवारुणी) होमः।।

अब गायत्री मंत्र से घी की द्वादश आहुति दें–

ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्। ॐ स्वाहा।।

॥ ततोगणपति प्रीत्यर्थ होमः॥

ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे। प्रियाणांन्त्वा प्रियपति ँ हवामहे। निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे। वसो मम आहमजानि गर्भधमात्वम जासि गर्भ धम्।। ॐ स्वाहा।। वरुणाय नमः स्वाहा।। ॐ कार देवताभ्योनमः स्वाहा।। श्रियैनमः स्वाहाः।। अष्टवसुभ्यो नमः स्वाहा।। षोडशमातृकाभ्यो नमः स्वाहा।।

अथ नवग्रहाणां होमः

ग्रहों का होम ग्रह समिधा को घी में भिगोकर करे–

(अर्कम्) ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।। ॐ स्वाहा।।१।।

(पलाशम्) ॐ इमं देवा ऽ असपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्र स्येन्द्रियाय। इमममुख्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशऽ एष वोऽमी राजा सोमो ऽ स्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा।। ॐ स्वाहा।।२।।

(खदिरम्) ॐ अग्नि मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽयम्। अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति।। ॐ स्वाहा।।३।।

(अपामार्गम्) ॐ उद् बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि

त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजे थामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे ऽ अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।। ॐ स्वाहा।।४।।

(अश्वत्थम्) ॐ बृहस्पते ऽअतियदर्योऽअर्हाद्द्युमद्वि भाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवसऽऋतप्रजात् तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।। ॐ स्वाहा।।५।।

(उदुम्बरम्) ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्र—मन्धस ऽ इन्द्र स्येन्द्रिय मिदं पयोऽ मृतं मधु।। ॐ स्वाहा।।६।।

(शमीम्) ॐ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये शय्योरभि स्रवन्तुनः।। ॐ स्वाहा।।७।।

(दूर्वाम्) ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।। ॐ स्वाहा।।८।।

(दर्भम्) ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।। ॐ स्वाहा।।६।।

॥ अथ नवग्रहाधिदेवतानां होमः॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। ॐ स्वाहा।।१।।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणां मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मइषाण।। ॐ स्वाहा।।२।।

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य वाहूऽ उपस्तुत्यं महिजातं ते अर्वन्।। ॐ स्वाहा।।३।।

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा।। ॐ स्वाहा।।४।।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः सवुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमशतश्चव्विवः।। ॐ स्वाहा।।५।।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवेहवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। ॐ स्वाहा ।।६।।

ॐ असि यमोऽस्यादित्योऽअर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन। असि सोमेन समया विपृक्तऽआहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि।। ॐ स्वाहा।।७।।

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्याऽउन्नयामि।। समापोऽ अद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधीः।। ॐ स्वाहा।। ८।।
ॐ इन्धानास्त्वा शत ँ हिमाद्युमन्त ँसमिधीमहि। वयस्वन्तो वयस्कृत ँ सहस्वन्तः सहस्कृतम्। अग्ने सपत्नदम्भन– मदब्धासो ऽ अदाभ्यम्। चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय।। ॐ स्वाहा।।९।।

।।इतिनवग्रहाधिदेवतानां होमः।।

।। अथ नवग्रह प्रत्यधिदेवतानां होमः।।

ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ२ऽ आसादयादिह।। ॐ अग्नये स्वाहा।।१।।
ॐ अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तिष्वश्वा भवत वाजिनः। देवीरापो यो वऽऊर्मिः प्रतूर्तिः ककुन्मान् वाजसास्तेनायं वाजꣳसेत्।। ॐ अद्भ्यः स्वाहा।।२।।
ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनीं। यच्छानः शर्म सप्रथाः।। ॐ पृथ्व्यै स्वाहा।।३।।
ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमें त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़मस्य पा ꣳ सुरे स्वाहा।। ॐ विष्णवे स्वाहा।।४।। ॐ सजोषाऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमंपिव वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँ२ ऽरप मूधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः।। ॐ इन्द्राय स्वाहा।।५।।

ॐ अदित्यैरास्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः। पूषासिघर्मा–यदीष्व।। ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा।।६।।

ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽ अस्तु व्वय ँ स्याम पतयो रयीणाम्।। ॐ प्रजापतये स्वाहा।।७।।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवि मनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। ॐ सर्पेभ्यः स्वाहा।।८।।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः। स वुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विव्वः।। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।।६।।

।। अथ पंचलोकपाल देवता होमः।।

ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासिगर्भधम्।। ॐ गणपतये स्वाहा।।१।।

ॐ अम्बे ऽ अम्बिके ऽम्बालिके नमानयति कश्चन ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्।। ॐ दुर्गायै स्वाहा।।२।।

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो ऽ अस्मिन्त्सवने

मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः।। ॐ वायवे स्वाहा।।३।।

ॐ घृतं घृतपावनः पिबत वसाम्व्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश ऽआदिशो विदिशऽ उद्दिशो दिग्भ्यः।। ॐ आकाशाय स्वाहा।।४।।

ॐ यवांकशा मधुमत्यश्विनासूनृतावती तया यज्ञम्मिमिक्षताम्।। ॐ अश्विभ्याम् स्वाहा।।५।।

।। इति पंचलोकपाल होमः।।

।। अथ दश दिक्पालानां होमः।।

ॐ त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्तिनो मधवा धात्विन्द्रः।। ॐ इन्द्राय स्वाहा।।१।।

ॐ त्वन्नोऽ अग्ने तव देवपायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य त्राता तोकस्यं तनये गवामस्यनिमेष ँ रक्षमाणस्तव व्रते।। ॐ अग्नये स्वाहा।।२।।

ॐ यमायत्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे।। ॐ यमाय स्वाहा।।३।।

ॐ असुन्वन्तमयजमान मिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहित–स्करस्य अन्यमस्मदिच्छसात ऽ इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।ॐ निर्ऋतये स्वाहा।।४।।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ॐ स मा न आयुः प्रमोषीः।। ॐ वरुणाय स्वाहा।।५।।
ॐ आ नो नियुद्भि शतिनीभिरध्वर ॐ सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।। ॐ वायये स्वाहा।।६।।
ॐ वय ॐ सोमव्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।। ॐ कुवेराय स्वाहा।।७।।
ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।। ॐ ईशानाय स्वाहा।।८।। ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः श ॐ सते स्तुवते धायि पज्र ऽ इन्द्रजेष्ठा ऽ अस्माँ२ ऽ अवन्तु देवाः।। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।।९।।
ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।। ॐ अनन्ताय स्वाहा।।१०।।

।। इति दशदिक्पाल होमः।।

॥ अथ वास्तुहोमः॥

ॐ वास्तोस्पते प्रतिजानी ह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवो भवानः। यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।।

१. ॐ शिखिने स्वाहा। २. ॐ प्रजन्याय स्वाहा।
३. ॐ जयन्ताय स्वाहा। ४. ॐ कुलिशायुधाय स्वाहा।
५. ॐ सूर्याय स्वाहा। ६. ॐ सत्याय स्वाहा।
७. ॐ भृशाय स्वाहा। ८. ॐ आकाशाय स्वाहा।
९. ॐ वायवे स्वाहा। १०. ॐ पूष्णे स्वाहा।
११. ॐ वितथाय स्वाहा। १२. ॐ गृहक्षताय स्वाहा।
१३. ॐ यमाय स्वाहा। १४. ॐ गन्धर्वाय स्वाहा।
१५. ॐ भृंगराजाय स्वाहा। १६. ॐ मृगाय स्वाहा।
१७. ॐ पितृभ्यः स्वाहा। १८. ॐ दौवारिकाय स्वाहा।
१९. ॐ सुग्रीवाय स्वाहा। २०. ॐ पुष्पदंताय स्वाहा।
२१. ॐ वरुणाय स्वाहा। २२. ॐ असुराय स्वाहा।
२३. ॐ शोषाय स्वाहा। २४. ॐ पापाय स्वाहा।
२५. ॐ रोगाय स्वाहा। २६. ॐ अहये स्वाहा।
२७. ॐ मुख्याय स्वाहा। २८. ॐ भल्लाटाय स्वाहा।
२९. ॐ सोमाय स्वाहा। ३०. ॐ सर्पाय स्वाहा।

३१. ॐ आदित्यै स्वाहा। ३२. ॐ दित्यै स्वाहा।
३३. ॐ अद्भ्यः स्वाहा। ३४. ॐ सवित्राय स्वाहा।
३५. ॐ जयाय स्वाहा। ३६. ॐ रुद्राय स्वाहा।
३७. ॐ अर्यम्णे स्वाहा। ३८. ॐ सवित्रे स्वाहा।
३९. ॐ विवस्वते स्वाहा। ४०. ॐ विबुधाधिपाय स्वाहा।
४१. ॐ मित्राय स्वाहा। ४२. ॐ राजयक्ष्मणे स्वाहा।
४३. ॐ पृथ्वीधराय स्वाहा। ४४. ॐ आपवत्साय स्वाहा।
४५. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ४६. ॐ चरक्यै स्वाहा।
४७. ॐ विदार्यै स्वाहा। ४८. ॐ पूतनायै स्वाहा।
४९. ॐ पापराक्षस्यै स्वाहा। ५०. ॐ पूर्वे स्कंदाय स्वाहा।
५१. ॐ दक्षिणे अर्यम्णे स्वाहा। ५२. ॐ पश्चिमेजृम्भकाय स्वाहा।
५३. ॐ उत्तरे पिलिपिच्छाय स्वाहा। ५४. ॐ पूर्वे इन्द्राय स्वाहा।
५५. ॐ आग्नेयां अग्नये स्वाहा। ५६. ॐ दक्षिणे यमाय स्वाहा।
५७. ॐ नैर्ऋते नैर्ऋतये स्वाहा। ५८. ॐ पश्चिमे वरुणाय स्वाहा।
५९. ॐ वायव्य वायवे स्वाहा। ६०. ॐ उत्तरे कुबेराय स्वाहा।
६१. ॐ ईशान्यां ईश्वराय स्वाहा। ६२. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।
६३. ॐ अनंताय स्वाहा। ६४. ॐ वास्तु पुरुषाय स्वाहा।

।। अथ षोडष स्तंभ हवनम्।।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो बेन ऽआवः। स वुध्न्या ऽ उपमा ऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः।। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।।१।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्।
समूढ़मस्य पाँसुरे स्वाहा।। ॐ विष्णवे स्वाहा।।२।।

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। ॐ रुद्राय स्वाहा।।३।।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्र।। ॐ इन्द्राय स्वाहा।।४।।

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावा पृथिवि ऽ अन्तरिक्ष ँ सूर्य ऽ आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।। ॐ सूर्याय स्वाहा।।५।।

ॐ गणनान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे वसोमम। आहम जानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।। ॐ गणपतये स्वाहा।।६।।

ॐ यमायत्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा

सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः स ँ सपृशस्पाहि।
अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि।। ॐ यमाय स्वाहा।।७।।
ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽ उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्यवाहू ऽउपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्।। ॐ स्कन्दाय स्वाहा।।८।।
ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिविमनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। ॐ अनन्ताय स्वाहा।।६।।
ॐ वायुरग्रेगाः यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम्। शिवो नियुद्भिः शिवाभिः।। ॐ वायवे स्वाहा।।१०।।
ॐ सोम ँ राजानमवसेऽग्निमन्वारभामहे। आदित्यान् विष्णु ँ सूर्य ब्रह्माणं च बृहस्पति ँ स्वाहा।। ॐ सोमाय स्वाहा।।११।।
ॐ इमं में वरुण श्रुधिहवमद्या च मृडय त्वामवस्यु राचके।। ॐ वरुणाय स्वाहा।।१२।।
ॐ सु गा वो देवाः सदना ऽअकर्म य ऽ आजग्मेद ँ सवन जुषाणाः। भरमाणा वहमाना हवी ँष्यस्मे धत् वसवो वसूनि स्वाहा।। ॐ वसवे स्वाहा।।१३।।
ॐ सोमोधेनु ँ सोमो ऽअर्वन्तमाशु ँ सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति। सादन्यं विदथ्य ँसभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै।।ॐ धनदाय स्वाहा।।१४।।

ॐ बृहस्पते ऽ अति यदर्य्यो ऽअर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।। ॐ बृहस्पते स्वाहा।।१५।।

ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्। तस्मै विशः समनमंत पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्।। ॐ विश्वकर्मणे स्वाहा।।१६।।

।। चतुर्वेद हवनम्।।

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।। ॐ ऋग्वेदायः स्वाहा।।१।।

ॐ इषेत्वोर्जेत्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठ तमाय कर्मणऽ आप्यायध्वमध्न्याऽ इन्द्राय भागं प्रजावतीरन मीवाऽ अयक्ष्मा मा व स्तेन ऽईशत माघस ॐ सो ध्रुवा ऽअस्मिन् गोपतौ स्यात् वह्वीर्यजमानस्यपशून्पाहि।। ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा।।२।।

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानों हव्यदातये निहोता सत्सि बर्हिषिः।। सामवेदाय स्वाहा।।३।।

ॐ शंन्नो देवीरभिष्टयऽ आपोभवन्तु पीतये शं योरभिस्त्रवन्तु नः।। ॐ अथर्ववेदाय स्वाहा।।४।।

॥ सर्वतोभद्रदेवता होमः॥

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा।। ॐ स्वाहा।।

१. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। २. ॐ सोमाय स्वाहा।
३. ॐ ईशानाय स्वाहा। ४. ॐ इन्द्राय स्वाहा।
५. ॐ अग्नये स्वाहा। ६. ॐ यमाय स्वाहा।
७. ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ८. ॐ वरुणाय स्वाहा।
९. ॐ वायवे स्वाहा। १०. ॐ अष्टवसुभ्यः स्वाहा।
११. ॐ एकादश रुद्रेभ्यो स्वाहा। १२. ॐ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा।
१३. ॐ अश्विभ्यां स्वाहा। १४. ॐ विश्वेदेवेभ्यः स्वाहा।
१५. ॐ पितृभ्यः स्वाहा। १६. ॐ सप्तयक्षेभ्यो स्वाहा।
१७. ॐ भूतनागेभ्यः स्वाहा। १८.ॐ गन्धर्वप्सरोभ्यः स्वाहा।
१९. ॐ स्कंदाय स्वाहा। २०. ॐ नन्दिश्वरशूलाय स्वाहा।
२१. ॐ महाकालाय स्वाहा। २२. ॐ प्रजापतये स्वाहा।
२३. ॐ दुर्गायै स्वाहा। २४. ॐ विष्णवे स्वाहा।
२५. ॐ पितृभ्यः स्वाहा। २६. ॐ मृत्युरोगेभ्यो स्वाहा।
२७. ॐ गणपतये स्वाहा। २८. ॐ अद्भ्यः स्वाहा।
२९. ॐ मरुद्भ्यः स्वाहा। ३०. ॐ पृथिव्यै स्वाहा।
३१. ॐ सरिद्भ्यः स्वाहा। ३२. ॐ सप्तसागरेभ्यो स्वाहा।
३३. ॐ मेरवे स्वाहा। ३४. ॐ गदायै स्वाहा।

३५. ॐ त्रिशूलायै स्वाहा। ३६. ॐ वज्राय स्वाहा।
३७ ॐ शक्तये स्वाहा। ३८. ॐ दण्डाय स्वाहा।
३६ ॐ खड्गाय स्वाहा। ४०. ॐ पाशाय स्वाहा।
४१. ॐ अंकुशाय स्वाहा। ४२. ॐ गौतमाय स्वाहा।
४३. ॐ भारद्वाजाय स्वाहा। ४४.ॐ विश्वामित्राय स्वाहा।
४५. ॐ कश्यपाय स्वाहा। ४६. ॐ जमदग्नये स्वाहा।
४७. ॐ वशिष्ठाय स्वाहा। ४८. ॐ अत्रये स्वाहा।
४६. ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा। ५०. ॐ ऐन्द्र्यै स्वाहा।
५१. ॐ कौमार्यै स्वाहा। ५२. ॐ ब्राह्मयै स्वाहा।
५३. ॐ वाराह्यै स्वाहा। ५४. ॐ चामुण्डायै स्वाहा।
५५. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा। ५६. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा।

ॐ वैनायिक्यै स्वाहा।।

।। अथ लिंगतोभद्रदेवता होमः।।

१. ॐ असितांग भैरवाय स्वाहा। २. ॐ रूरुभैरवाय स्वाहा।
३. ॐ चण्ड भैरवाय स्वाहा। ४. ॐ क्रोध भैरवाय स्वाहा।
५. ॐ उन्मत भैरवाय स्वाहा। ६.ॐ कपाल भैरवाय स्वाहा।
७. ॐ भीषण भैरवाय स्वाहा। ८. ॐ संहार भैरवाय स्वाहा।
६. ॐ भवाय स्वाहा। १०.ॐ शर्वाय स्वाहा।
११. ॐ पशुपतये स्वाहा। १२.ॐ ईशानाय स्वाहा।
१३. ॐ रुद्राय स्वाहा। १४.ॐ उग्राय स्वाहा।

१५.ॐ भीमाय स्वाहा। १६.ॐ महते स्वाहा।
१७.ॐ अनन्ताय स्वाहा। १८.ॐ वासुकये स्वाहा।
१९.ॐ तक्षकाय स्वाहा। २०.ॐ कुलिशाय स्वाहा।
२१.ॐ कर्कोटकाय स्वाहा। २२.ॐ शंखपालाय स्वाहा।
२३.ॐ कम्बलाय स्वाहा। २४.ॐ अश्वतराय स्वाहा।
२५.ॐ शूलाय स्वाहा। २६.ॐ चन्द्रमौलिने स्वाहा।
२७.ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। २८.ॐ वृषभध्वजाय स्वाहा।
२९.ॐ त्रिलोचनाय स्वाहा। ३०.ॐ शक्तिधराय स्वाहा।
३१.ॐ महेश्वराय स्वाहा। ३२.ॐ शूलपाणये स्वाहा।

॥ चतुः षष्ठियोगिनि होमः॥

ॐ योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखायऽइन्द्र मूतये।। ॐ स्वाहा।।

१. ॐ दिव्ययोगायै स्वाहा। २.ॐ महायोगायै स्वाहा।
३. ॐ सिद्धियोगायै स्वाहा। ४. ॐ गणेश्वर्यै स्वाहा।
५. ॐ प्रेताक्ष्यै स्वाहा। ६. ॐ डाकिन्यै स्वाहा।
७. ॐ काल्यै स्वाहा। ८.ॐ कालरात्र्यै स्वाहा।
९. ॐ निशाचर्यै स्वाहा। १०.ॐ हुंकार्यै स्वाहा।
११. ॐ रुद्रवैताल्यै स्वाहा। १२.ॐ खर्पयै स्वाहा।
१३. ॐ भूतयामिन्यै स्वाहा। १४.ॐ उर्ध्वकेश्यै स्वाहा।
१५. ॐ विरूपाक्ष्यै स्वाहा। १६.ॐ शुष्कांग्यै स्वाहा।

१७. ॐ मांस भोजिन्यै स्वाहा। १८.ॐ फेत्कार्यै स्वाहा।
१६. ॐ वीरभद्राक्ष्यै स्वाहा। २०.ॐ धूम्राक्ष्यै स्वाहा।
२१. ॐ कलह प्रियायै स्वाहा। २२.ॐ रक्तायै स्वाहा।
२३. ॐ घोर रक्ताक्ष्यै स्वाहा। २४.ॐ बिरुपाक्ष्यै स्वाहा।
२५. ॐ भयंकर्यै स्वाहा। २६.ॐ चोरिकायै स्वाहा।
२७. ॐ मारिकायै स्वाहा। २८.ॐ चण्डिकायै स्वाहा।
२६. ॐ वाराह्यै स्वाहा। ३०.ॐ मुण्डधारिण्यै स्वाहा।
३१. ॐ भैरव्यै स्वाहा। ३२.ॐ चक्रपाण्यै स्वाहा।
३३. ॐ क्रोधायै स्वाहा। ३४.ॐ दुर्मुख्यै स्वाहा।
३५. ॐ प्रेतवाहिन्यै स्वाहा। ३६.ॐ कंटक्यै स्वाहा।
३७. ॐ दीर्घ लम्बोष्ट्यै स्वाहा। ३८.ॐ मालिन्यै स्वाहा।
३६. ॐ मंत्रयोगिन्यै स्वाहा। ४०.ॐ कालाग्न्यै स्वाहा।
४१. ॐ मोहिन्यै स्वाहा। ४२.ॐ चक्र्यै स्वाहा।
४३. ॐ कंकाल्यै स्वाहा। ४४.ॐ भुवनेश्वर्यै स्वाहा।
४५. ॐ कुण्डलाक्ष्यै स्वाहा। ४६.ॐ जुह्यै स्वाहा।
४७. ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा। ४८.ॐ यमदूत्यै स्वाहा।
४६. ॐ करालिन्यै स्वाहा। ५०.ॐ कौशिक्यै स्वाहा।
५१. ॐ भक्षिण्यै स्वाहा। ५२.ॐ यक्षिण्यै स्वाहा।
५३. ॐ कौमार्यै स्वाहा। ५४.ॐ यंत्रवाहिन्यै स्वाहा।
५५. ॐ विशालायै स्वाहा। ५६.ॐ कामुक्यैं स्वाहा।
५७. ॐ व्याघ्र्यै स्वाहा। ५८.ॐ यक्षिण्यै स्वाहा।

५९. ॐ प्रेतभूषण्यै स्वाहा। ६०.ॐ धूर्जट्यै स्वाहा।
६१. ॐ विकटायै स्वाहा। ६२.ॐ घोरायै स्वाहा।
६३. ॐ कपालायै स्वाहा। ६४.ॐ लांगली देव्यै स्वाहा।

।। इति योगिनी हवनम्।।

।। अथ क्षेत्रपाल होमः।।

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्मा द्वैस्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः। एमेनम वृधन्नमृताऽ अमर्त्यं वैश्वानरं क्षेत्रजित्याय देवाः।। ॐ स्वाहा।। ॐ क्षेत्रपालाय स्वाहा।।

१. ॐ अजराय स्वाहा। २. ॐ ब्यापकाय स्वाहा।
३. ॐ इन्द्रचौराय स्वाहा। ४. ॐ इन्द्रमूर्तये स्वाहा।
५. ॐ उक्षाय स्वाहा। ६. ॐ कूष्माण्डाय स्वाहा।
७. ॐ वरुणाय स्वाहा। ८. ॐ बटुकाय स्वाहा।
९. ॐ विमुक्ताय स्वाहा। १०.ॐ लिप्तकायाय स्वाहा।
११. ॐ लीलाकाय स्वाहा। १२. ॐ एक द्रंष्ट्राय स्वाहा।
१३ ॐ एरावताय स्वाहा। १४.ॐ औषधिघ्नाय स्वाहा।
१५ ॐ बन्धनाय स्वाहा। १६.ॐ दिव्य कायाय स्वाहा।
१७ ॐ कम्बलाय स्वाहा। १८. ॐ भीषणाय स्वाहा।
१९ ॐ गवयाय स्वाहा। २० ॐ घण्टाय स्वाहा।
२१ ॐ व्यालाय स्वाहा। २२ ॐ आणते स्वाहा।

२३. ॐ चन्द्र वारुणाय स्वाहा। २४. ॐ पटाटोपाय स्वाहा।
२५. ॐ जटालाय स्वाहा। २६. ॐ क्रतवे स्वाहा।
२७. ॐ घण्टेश्वराय स्वाहा। २८.ॐ विटंकाय स्वाहा।
२९. ॐ मणिमानाय स्वाहा। ३०.ॐ गणबन्धवे स्वाहा।
३१. ॐ डामराय स्वाहा। ३२.ॐ ढुण्डिकर्णाय स्वाहा।
३३. ॐ स्थविराय स्वाहा। ३४. ॐ दन्तुराय स्वाहा।
३५. ॐ धनदाय स्वाहा। ३६.ॐ नागकर्णाय स्वाहा।
३७. ॐ महाबलाय स्वाहा। ३८.ॐ फेत्काराय स्वाहा।
३९. ॐ चीत्काराय स्वाहा। ४०. ॐ सिंहाय स्वाहा।
४१. ॐ मृगाय स्वाहा। ४२. ॐ यक्षाय स्वाहा।
४३. ॐ मेघवाहनाय स्वाहा। ४४.ॐ तीक्ष्णौष्ठाय स्वाहा।
४५. ॐ अनलाय स्वाहा। ४६.ॐ शुष्कतुण्डाय स्वाहा।
४७. ॐ सुधालापाय स्वाहा। ४८. ॐ वर्वरकाय स्व[illegible]।
४९. ॐ पवनाय स्वाहा। ५०. ॐ पावनाय स्वाहा।
५१. ॐ युधामन्यवे स्वाहा।।

।। इति क्षेत्रपाल होम।।

॥ अथ प्रधान देवता होमः॥

जिस देवता का होम करना हो पहले षोडशाङ्ग न्यास अथवा षडङ्ग न्यास कर लेवें, प्रधान देवता होम में हमने विष्णु याग, गायत्री याग, शिव याग एवं दुर्गायाग का विधान लिखा है। सूक्त का हवन करने के साथ ही यहाँ अङ्गन्यास भी लिख दिये है पहले सूक्त से अङ्गन्यास कर फिर होम करे–

॥ अथ विष्णु याग॥

विनियोगः

ॐ अस्य श्री विष्णु सहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य भगवान् वेदव्यास ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः श्री कृष्णः परमात्मा देवता, अमृतांशूद्भवो भानुरिति बीजम्, देवकीनन्दनः स्रष्टेति शक्तिः, त्रिसामा– सामगः सामेति हृदयम् भृन्नन्दकी चक्रीति कीलकम्, सार्ङ्ग धन्वागदाः स्त्रम्, स्थाङ्गपाणिरक्षोभ्य इति कवचम्, उद्भवः क्षोभणोदेव इति परमो मंत्रः, श्रीविष्णु प्रीत्यर्थे होमे विनियोगः। एक आचमन जल छोड़ देवे।

।। ध्यानम्।।

शान्ताकारं भुजग शयनं पद्मनाभं सुरेशं।
विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्ण सुभांगम्।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं।
वन्दे विष्णुं भवभय हरं सर्वलोकैकनाथम्।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़मस्यपा ँ सुरे स्वाहा।। विष्णवे नमः।।

ॐ सहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमि ँ सर्व्वतस्पृत्वात्यतिष्ठदशाङ्गुलम्।। ॐ स्वाहा।।१।। वामकरे। ॐ पुरुष ऽएवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति।। ॐ स्वाहा।।२।। दक्षिण करे।। ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।। ॐ स्वाहा।। ३।। वामपादे।। ॐ त्रिपादूर्ध्वऽ उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽ अभि।। ॐ स्वाहा।।४।। दक्षिणे पादे।। ॐ ततो विराडजायत विराजो ऽ अधि पूरुषः। स जातोऽ अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः।। ॐ स्वाहा।।५।। वामजानुनि।। ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।। ॐ स्वाहा।।६।। दक्षिण जानुनि।।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽ ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दा ᳪसि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्मादजायत।। ॐ स्वाहा।।७।। वामकट्याम्।। ॐ तस्मादश्वा ऽअजायन्त ये के चो भयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता ऽ अजावयः।। ॐ स्वाहा।।८।। दक्षिणकट्याम। ॐ तं जज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेनदेवा ऽ अयजन्त साध्या ऽ ऋषयश्च ये।। ॐ स्वाहा।।६।। नाभौ।। ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादा ऽ उच्येते।। ॐ स्वाहा।।१०।। हृदि।। ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या शूद्रो ऽअजायत।। ॐ स्वाहा।।११ कण्ठे।। ॐ चन्द्रमां मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो ऽअजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॐ स्वाहा।।१२।। वाम बाहौ।। ॐ नाभ्या ऽ आसीदन्तरिक्ष ᳪ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रातथा लोकाँ २ऽ अकल्पयन्।। ॐ स्वाहा।।१३।। दक्षिण वाहौ।। ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो ऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽ इध्मः शरद्धविः।।ॐ स्वाहा।।१४।। मुखे।। ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना ऽ अवध्नम्

पुरूषं पशुम्।। ॐ स्वाहा।।१५।। अक्ष्णोः।। ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते हनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। ॐ स्वाहा।।१६।। मूर्ध्नि।।

।। अथ षडङ्ग न्यास।।

षडङ्ग का मात्र न्यास करे। हवन नहीं। ॐ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजान–मग्रे।। हृदये।। ॐ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेवविदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।। शिरसि।। ॐ प्रजापतिश्चरति गर्भे ऽअन्तरजायमानो बहुधा वि जायते। तस्ययोनि परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा। शिखायाम्।। ॐ यो देवेभ्य ऽ आतपति यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्रह्मये।। कवचायहुम्।। ॐ रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा ऽ अग्रे तदब्रुवन्। यस्त्वै वं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा ऽअसन्वशे।। नेत्रत्रयायवोषट्।। ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम। इष्णनिषाणा मुंमऽइषाण सर्वलोकंमऽइषाण।। ॐ अस्त्राय फट्।।

॥ अथ विष्णु सहस्त्र नामावलिः होमः॥

१. ॐ विश्वस्मै स्वाहा। ॐ विष्णवे स्वाहा। ॐ वषट्कारा‍य स्वाहा ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे स्वाहा। ॐ भूतकृते स्वाहा ॐ भूतभृते स्वाहा। ॐ भावाय स्वाहा। ॐ भूतात्मने स्वाहा। ॐ भूतभावनाय स्वाहा। ॐ पूतात्मने स्वाहा। ॐ परमात्मने स्वाहा। ॐ मुक्तानांपरमागतये स्वाहा। ॐ अव्ययाय स्वाहा। ॐ पुरुषाय स्वाहा। ॐ साक्षिणे स्वाहा। ॐ क्षेत्रज्ञाय स्वाहा। ॐ अक्षराय स्वाहा। ॐ योगाय स्वाहा। ॐ योगविदांनेत्रे स्वाहा। ॐ प्रधानपुरुषेश्वराय स्वाहा। ॐ नारसिंह वपुषे स्वाहा। ॐ श्रीमते स्वाहा। ॐ केशवाय स्वाहा। ॐ पुरुषोत्तमाय स्वाहा।। ॐ सर्वस्मै स्वाहा।।२५।। ॐ शर्वाय स्वाहा। ॐ शिवाय स्वाहा। ॐ स्थाणवे स्वाहा। ॐ भूतादये स्वाहा। ॐ अनिधयेऽव्ययाय स्वाहा।। ॐ संभवाय स्वाहा।ॐ भावनाय स्वाहा। ॐ भर्त्रे स्वाहा। ॐ प्रभवाय स्वाहा। ॐ प्रभवे स्वाहा। ॐ ईश्वराय स्वाहा। ॐ स्वयंभुवे स्वाहा। ॐ शंभवे स्वाहा। ॐ आदित्याय स्वाहा। ॐ पुष्कराक्षय स्वाहा। ॐ महास्वनाय स्वाहा। ॐ अनादिनिधनाय स्वाहा। ॐ धात्रे स्वाहा। ॐ विधात्रे

स्वाहा। ॐ धातुरुत्तमाय स्वाहा। ॐ अप्रमेयाय स्वाहा। ॐ हृषीकेशाय स्वाहा। ॐ पद्मनाभाय स्वाहा। ॐ अमर प्रभवे स्वाहा। ॐ विश्वकर्मणे स्वाहा।। ५०।। ॐ मनवे स्वाहा। ॐ त्वष्ट्रे स्वाहा। ॐ स्थविष्ठाय स्वाहा। ॐ स्थविरोध्रुवाय स्वाहा। ॐ अग्राह्याय स्वाहा। ॐ शाश्वताय स्वाहा। ॐ कृष्णाय स्वाहा। ॐ लोहिताक्षाय स्वाहा। ॐ प्रदर्तनाय स्वाहा। ॐ प्रभूताय स्वाहा। ॐ त्रिककुब्धाम्ने स्वाहा।ॐ पवित्राय स्वाहा। ॐ मगलायपरस्मै स्वाहा। ॐ ईशानाय स्वाहा। ॐ प्राणदायस्वाहा। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ ज्येष्ठाय स्वाहा। ॐ श्रेष्ठाय स्वाहा। ॐ प्रजापतये स्वाहा। ॐ हिरण्यगर्भाय स्वाहा।ॐ भूगर्भाय स्वाहा। ॐ माधवाय स्वाहा। ॐ मधुसूदनाय स्वाहा। ॐ ईश्वराय स्वाहा। ॐ विक्रमिणे स्वाहा।। ७५।। ॐ धन्विने स्वाहा। ॐ मेधाविने स्वाहा। ॐ विक्रमाय स्वाहा। ॐ क्रमाय स्वाहा। ॐ अनुत्तमाय स्वाहा।ॐ दुराधर्षाय स्वाहा। ॐ कृतज्ञाय स्वाहा। ॐ कृतये स्वाहा। ॐ आत्मवते स्वाहा। ॐ सुरेशाय स्वाहा। ॐ शरणाय स्वाहा। ॐ शर्मणे स्वाहा। ॐ विश्वरेतसे स्वाहा। ॐ प्रजाभवाय स्वाहा। ॐ अहये स्वाहा। ॐ संवत्सराय स्वाहा। ॐ व्यालाय स्वाहा। ॐ प्रत्ययाय स्वाहा।ॐ

सर्व दर्शनाय स्वाहा। ॐ अजाय स्वाहा। ॐ सर्वेश्वराय स्वाहा। ॐ सिद्धाय स्वाहा। ॐ सिद्धये स्वाहा। ॐ सर्वादये स्वाहा। ॐ अच्युताय स्वाहा।। १००।। ॐ वृषाकपये स्वाहा। ॐ अमेयात्मने स्वाहा। ॐ सर्वयोनिविनिः सृताय स्वाहा। ॐ वसवे स्वाहा। ॐ वसुमनसे स्वाहा। ॐ सत्याय स्वाहा। ॐ समात्मनें स्वाहा। ॐ संमिताय स्वाहा। ॐ समाय स्वाहा। ॐ अमोघाय स्वाहा। ॐ पुण्डरीकाक्षाय स्वाहा। ॐ वृषर्कमणे स्वाहा। ॐ वृषाकृतये स्वाहा। ॐ रुद्राय स्वाहा। ॐ बहुशिरसे स्वाहा। ॐ बभ्रवे स्वाहा। ॐ विश्वयोनये स्वाहा। ॐ शुचिश्रवसे स्वाहा। ॐ अमृताय स्वाहा। ॐ शाश्वतस्थाणवे स्वाहा। ॐ वरारोहाय स्वाहा। ॐ महातपसे स्वाहा। ॐ सर्वगाय स्वाहा। ॐ सर्वविद्भानवे स्वाहा। ॐ विष्वक्सेनाय स्वाहा।।१२५।। ॐ जनार्दनाय स्वाहा। ॐ वेदाय स्वाहा। ॐ वेदविदेस्वाहा। ॐ अव्यंगाय स्वाहा। ॐ वेदांगाय स्वाहा। ॐ वेदविदे स्वाहा। ॐ कवये स्वाहा। ॐ लोकाध्यक्षाय स्वाहा। ॐ सुराध्यक्षाय स्वाहा। ॐ धर्माध्यक्षाय स्वाहा। ॐ कृताऽकृताय स्वाहा। ॐ चतुरात्मने स्वाहा। ॐ चतुर्व्यूहाय स्वाहा। ॐ चर्तुष्ट्राय स्वाहा। ॐ चतुर्भुजाय स्वाहा। ॐ भ्राजिष्णवे स्वाहा।

ॐ भोजनाय स्वाहा। ॐ भोक्त्रे स्वाहा। ॐ सहिष्णवे स्वाहा। ॐ जगदादिजाय स्वाहा स्वाहा। ॐ अनघाय स्वाहा स्वाहा। ॐ विजयाय स्वाहा। ॐ जेत्रे स्वाहा। ॐ विश्वयोनये स्वाहा स्वाहा। ॐ पुनर्वसवे स्वाहा।।१५०।। ॐ उपेन्द्राय स्वाहा। ॐ वामनाय स्वाहा। ॐ प्रांशवे स्वाहा। ॐ अमोघाय स्वाहा। ॐ शुचये स्वाहा। ॐ ऊर्जिताय स्वाहा। ॐ अतीन्द्राय स्वाहा। ॐ संग्रहाय स्वाहा। ॐ सर्गाय स्वाहा। ॐ धृतात्मने स्वाहा। ॐ नियमायस्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ वेद्याय स्वाहा। ॐ वैद्याय स्वाहा। ॐ सदायोगिने स्वाहा। ॐ वीरघ्ने स्वाहा। ॐ माधवाय स्वाहा। ॐ मधवे स्वाहा। ॐ अतीन्द्रियाय स्वाहा। ॐ महामायाय स्वाहा। ॐ महोत्साहाय स्वाहा। ॐ महाबलाय स्वाहा। ॐ महाबुद्धये स्वाहा। ॐ महावीर्याय स्वाहा। ॐ महाशक्तये स्वाहा।।१७५।। ॐ महाद्युतये स्वाहा। ॐ अनिर्देश्यवपुषे स्वाहा। ॐ श्रीमते स्वाहा। ॐ अमेयात्मने स्वाहा। ॐ महाद्रिधृषे स्वाहा। ॐ महेश्वासाय स्वाहा। ॐ महाभर्त्रे स्वाहा। ॐ श्रीनिवासाय स्वाहा। ॐ सतांगतये स्वाहा। ॐ अनिरुद्धाय स्वाहा। ॐ सुरानन्दाय स्वाहा। ॐ गोविन्दाय स्वाहा। ॐ गोविंदाम्पतये स्वाहा। ॐ

मरीचये स्वाहा। ॐ दमनाय स्वाहा। ॐ हंसाय स्वाहा। ॐ सुपर्णाय स्वाहा। ॐ भुजगोत्तमाय स्वाहा। ॐ हिरण्यनाभाय स्वाहा। ॐ सुपतपसे स्वाहा। ॐ पद्मनाभाय स्वाहा। ॐ प्रजापतये स्वाहा। ॐ अमृत्यवे स्वाहा। ॐ सर्वदृशे स्वाहा। ॐ सिंहाय स्वाहा।।२००।। ॐ संघात्रे स्वाहा। ॐ संधिमते स्वाहा। ॐ स्थिराय स्वाहा। ॐ अजाय स्वाहा। ॐ दुर्मर्षणाय स्वाहा। ॐ शास्त्रे स्वाहा। ॐ विश्रुतात्मने स्वाहा। ॐ सुरारिघ्ने स्वाहा। ॐ गुरुवे स्वाहा। ॐ गुरुतमाय स्वाहा। ॐ धाम्ने स्वाहा। ॐ सत्याय स्वाहा। ॐ सत्य पराक्रमाय स्वाहा। ॐ निमिषाय स्वाहा। ॐ अनिमिषाय स्वाहा। ॐ स्त्रग्विणे स्वाहा। ॐ वाचस्पति रुदारधिये स्वाहा। ॐ अग्रण्ये स्वाहा। ॐ ग्रामणे स्वाहा। ॐ श्रीमते स्वाहा। ॐ न्यायाय स्वाहा। ॐ नेत्रे स्वाहा। ॐ समीरणाय स्वाहा। ॐ सहस्रमूर्ध्ने स्वाहा। ॐ विश्वात्मनें स्वाहा।।२२५।। ॐ सहस्त्राक्षाय स्वाहा। ॐ सहस्त्रपदे स्वाहा। ॐ आवर्त्तनाय स्वाहा। ॐ निवृत्तात्मने स्वाहा। ॐ संवृताय स्वाहा। ॐ संप्रमर्दनाय स्वाहा। ॐ अहः संवर्तकाय स्वाहा। ॐ वह्नये स्वाहा। ॐ अनिलाय स्वाहा। ॐ धरणीधराय स्वाहा। ॐ सुप्रसादाय स्वाहा। ॐ

प्रसन्नात्मनें स्वाहा। ॐ विश्वधृषे स्वाहा। ॐ विश्वभुजे स्वाहा। ॐ विभवे स्वाहा। ॐ सत्कर्त्रे स्वाहा। ॐ सत्कृताय स्वाहा। ॐ साधवे स्वाहा। ॐ जह्नवे स्वाहा। ॐ नारायणाय स्वाहा। ॐ नराय स्वाहा। ॐ असंख्येयाय स्वाहा। ॐ अप्रमेयात्मने स्वाहा। ॐ विशिष्टाय स्वाहा। ॐ शिष्टकृते स्वाहा।। २५०।। ॐ शुचये स्वाहा। ॐ शिद्धार्थाय स्वाहा। ॐ सिद्धिसंकल्पाय स्वाहा। ॐ सिद्धिदाय स्वाहा। ॐ सिद्धिसाधनाय स्वाहा। ॐ बृषाहिणे स्वाहा। ॐ वृषभाय स्वाहा। ॐ विष्णवे स्वाहा। ॐ वृषपर्वणे स्वाहा। ॐ वृषोदराय स्वाहा। ॐ वर्धनाय स्वाहा। ॐ वर्धमानाय स्वाहा। ॐ विविक्ताय स्वाहा। ॐ श्रुतिसागराय स्वाहा। ॐ सुभुजाय स्वाहा। ॐ दुर्धराय स्वाहा। ॐ वाग्मिनेस्वाहा। ॐ महेन्द्राय स्वाहा। ॐ वसुदाय स्वाहा। ॐ वसवे स्वाहा। ॐ नैकरूपाय स्वाहा। ॐ वृहद्रूपाय स्वाहा। ॐ शिपिविष्टाय स्वाहा। ॐ प्रकाशनाय स्वाहा। ॐ ओजस्तेजोद्युतिधराय स्वाहा।। २७५।। ॐ प्रकाशात्मने स्वाहा। ॐ प्रतापनाय स्वाहा। ॐ ऋद्धाय स्वाहा। ॐ स्पष्टाक्षराय स्वाहा। ॐ मंत्राय स्वाहा। ॐ चन्द्राशवे स्वाहा। ॐ भास्कारद्युतये स्वाहा। ॐ अमृतांशद्भवाय स्वाहा। ॐ

भानवे स्वाहा। ॐ शशिविन्दवे स्वाहा। ॐ सुरेश्वराय स्वाहा। ॐ औषधाय स्वाहा। ॐ जगतसेतवे स्वाहा। ॐ सत्यधर्म पराक्रमाय स्वाहा। ॐ भूतभव्यभवन्नाथाय स्वाहा। ॐ पवनाय स्वाहा। ॐ पावनाय स्वाहा। ॐ अनलाय स्वाहा। ॐ कामघ्ने स्वाहा। ॐ कामकृते स्वाहा। ॐ कान्ताय स्वाहा। ॐ कामाय स्वाहा। ॐ कामप्रदाय स्वाहा। ॐ प्रभवे स्वाहा। ॐ युगादिकृते स्वाहा।।३००।। ॐ युगावर्ताय स्वाहा। ॐ नैकमायाय स्वाहा। ॐ महाशनाय स्वाहा। ॐ अदृश्याय स्वाहा। ॐ अव्यक्तरूपाय स्वाहा। ॐ सहस्त्रजिते स्वाहा। ॐ अनंतजिते स्वाहा। ॐ इष्टाय स्वाहा। ॐ विशिष्टाय स्वाहा। ॐ शिष्टेष्टाय स्वाहा। ॐ शिखंण्डिने स्वाहा। ॐ नहुषाय स्वाहा। ॐ वृषाय स्वाहा। ॐ क्रोधघ्ने स्वाहा। ॐ क्रोधकृत्कत्रे स्वाहा। ॐ विश्ववाहवे स्वाहा। ॐ महीधराय स्वाहा। ॐ अच्युताय स्वाहा। ॐ प्रथिताय स्वाहा। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ प्राणदाय स्वाहा। ॐ वासवानुजाय स्वाहा। ॐ अपानिधये स्वाहा। ॐ अधिष्ठानाय स्वाहा। ॐ अप्रमत्ताय स्वाहा।। ३२५।। ॐ प्रतिष्ठिताय स्वाहा। ॐ स्कंदाय स्वाहा। ॐ स्कंदधराय स्वाहा। ॐ धुर्याय स्वाहा। ॐ वरदाय स्वाहा। ॐ वायुवाहनाय स्वाहा। ॐ वासुदेवाय

स्वाहा। ॐ बृहद् भानवे स्वाहा। ॐ आदिदेवाय स्वाहा। ॐ पुरंदराय स्वाहा। ॐ अशोकाय स्वाहा। ॐ तारणाय स्वाहा। ॐ ताराय स्वाहा। ॐ शूराय स्वाहा। ॐ शौरये स्वाहा। ॐ जनेश्वराय स्वाहा। ॐ अनुकूलाय स्वाहा। ॐ शतावर्त्ताय स्वाहा। ॐ पद्मिने स्वाहा। ॐ पद्म निभेक्षणाय स्वाहा। ॐ पद्मनाभाय स्वाहा। ॐ अरविन्दाक्षाय स्वांहा। ॐ पद्मगर्भाय स्वाहा। ॐ शरीरभृते स्वाहा। ॐ महर्द्धये स्वाहा।। ३५०।। ॐ ऋद्धाय स्वाहा। ॐ वृद्धात्मनें स्वाहा। ॐ महाक्षाय स्वाहा। ॐ गरुडध्वजाय स्वाहा। ॐ अतुलाय स्वाहा। ॐ शरभाय स्वाहा। ॐ भीमाय स्वाहा। ॐ समयज्ञाय स्वाहा। ॐ हर्विहरये स्वाहा। ॐ सर्वलक्षणलक्षण्याय स्वाहा। ॐ लक्ष्मीवते स्वाहा। ॐ समितिंजयाय स्वाहा। ॐ विक्षराय स्वाहा। ॐ रोहिताय स्वाहा। ॐ मार्गाय स्वाहा। ॐ हेतवे स्वाहा। ॐ दामोदराय स्वाहा। ॐ सहाय स्वाहा। ॐ महीधराय स्वाहा। ॐ महाभागाय स्वाहा। ॐ वेगवते स्वाहा। ॐ अमिताशनाय स्वाहा। ॐ उद्भवाय स्वाहा। ॐ क्षोभणाय स्वाहा। ॐ देवाय स्वाहा।। ३७५।। ॐ श्रीगर्भाय स्वाहा। ॐ परमेंश्वराय स्वाहा। ॐ करणाय स्वाहा। ॐ कारणाय स्वाहा। ॐ कर्त्रे स्वाहा। ॐ विकर्त्रे

स्वाहा। ॐ गहनाय स्वाहा। ॐ गुहाय स्वाहा। ॐ व्यवसायाय स्वाहा। ॐ व्यवस्थानाय स्वाहा। ॐ संस्थानाय स्वाहा। ॐ स्थानदाय स्वाहा। ॐ ध्रुवाय स्वाहा। ॐ परर्द्धये स्वाहा। ॐ परमस्पष्टाय स्वाहा। ॐ तुष्टाय स्वाहा। ॐ पुष्टाय स्वाहा। ॐ शुभेक्षणाय स्वाहा। ॐ रामाय स्वाहा। ॐ विरामाय स्वाहा। ॐ विरजाय स्वाहा। ॐ मार्गाय स्वाहा। ॐ नेयाय स्वाहा। ॐ न्याय स्वाहा। ॐ अन्याय स्वाहा।। ४००।। ॐ वीराय स्वाहा। ॐ शक्तिमतां श्रेष्ठाय स्वाहा। ॐ धर्माय स्वाहा। ॐ धर्मविदुत्तमाय स्वाहा। ॐ वैकुंण्ठाय स्वाहा। ॐ पुरुषाय स्वाहा। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ प्राणदाय स्वाहा। ॐ प्रणवाय स्वाहा। ॐ पृथवे स्वाहा। ॐ हिरण्य गर्भाय स्वाहा। ॐ शत्रुघ्नाय स्वाहा। ॐ व्याप्ताय स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ अधोक्षजाय स्वाहा। ॐ ऋतवे स्वाहा। ॐ सुदर्शनाय स्वाहा। ॐ कालाय स्वाहा। ॐ परमेष्ठिने स्वाहा। ॐ परिग्रहाय स्वाहा। ॐ उग्राय स्वाहा। ॐ संवत्सराय स्वाहा। ॐ दक्षाय स्वाहा। ॐ विश्रामाय स्वाहा। ॐ विश्वदक्षिणाय स्वाहा।। ४२५।। ॐ विस्ताराय स्वाहा। ॐ स्थावरस्थाणवे स्वाहा। ॐ प्रमाणाय स्वाहा। ॐ बीजमव्ययाय स्वाहा। ॐ अर्थाय स्वाहा। ॐ अनर्थाय

स्वाहा। ॐ महाकोशाय स्वाहा। ॐ महाभौगाय स्वाहा। ॐ महाधनाय स्वाहा। ॐ अनिर्विष्णाय स्वाहा। ॐ स्थविष्ठाय स्वाहा। ॐ अभुवे स्वाहा। ॐ धर्मयूपाय स्वाहा। ॐ महामखाय स्वाहा। ॐ नक्षत्रनेमये स्वाहा। ॐ नक्षत्रिणे स्वाहा। ॐ क्षमाय स्वाहा। ॐ क्षामाय स्वाहा। ॐ समीहनाय स्वाहा। ॐ यज्ञाय स्वाहा। ॐ ईज्याय स्वाहा। ॐ महेज्याय स्वाहा। ॐ क्रतवे स्वाहा। ॐ सत्राय स्वाहा। ॐ सतांगतये स्वाहा।। ४५०।। ॐ सर्वदर्शिने स्वाहा। ॐ विमुक्तामनें स्वाहा। ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा। ॐ ज्ञानोत्तमाय स्वाहा। ॐ सुव्रताय स्वाहा। ॐ सुमुखाय स्वाहा। ॐ सूक्ष्माय स्वाहा। ॐ सुघोषाय स्वाहा। ॐ सुखदाय स्वाहा। ॐ सुहृदे स्वाहा। ॐ मनोहराय स्वाहा। ॐ जितक्रोधाय स्वाहा। ॐ बीरबाहवे स्वाहा। ॐ विदारणाय स्वाहा। ॐ स्वापनाय स्वाहा। ॐ स्ववशाय स्वाहा। ॐ व्यापिनें स्वाहा। ॐ नैकात्मनें स्वाहा। ॐ नैककर्मकृते स्वाहा। ॐ वत्सराय स्वाहा। ॐ वत्सलाय स्वाहा। ॐ वत्सिने स्वाहा। ॐ रत्नगर्भाय स्वाहा। ॐ धनेंश्वराय स्वाहा। ॐ धर्मगुप्तयै स्वाहा।। ४७५।। ॐ धर्मकृते स्वाहा। ॐ धर्मिणे स्वाहा। ॐ सतेस्वाहा। ॐ असते स्वाहा। ॐ क्षराय स्वाहा। ॐ अक्षराय स्वाहा। ॐ अविज्ञात्रे

स्वाहा। ॐ सहस्त्राशवे स्वाहा। ॐ विधात्रे स्वाहा। ॐ कृतलक्षणाय स्वाहा। ॐ गभस्तिनेमये स्वाहा। ॐ सत्त्वस्थाय स्वाहा। ॐ सिंहाय स्वाहा। ॐ भूतमहेश्वराय स्वाहा। ॐ आदिदेवाय स्वाहा। ॐ महादेवाय स्वाहा। ॐ देवेशाय स्वाहा। ॐ देवभृद् गुरवे स्वाहा। ॐ उत्तराय स्वाहा। ॐ गोपतये स्वाहा। ॐ गोप्त्रे स्वाहा। ॐ ज्ञानगम्याय स्वाहा। ॐ पुरातनाय स्वाहा। ॐ शरीरभूतभृते स्वाहा। ॐ भोक्त्रे स्वाहा।। ५००।। ॐ कपीन्द्राय स्वाहा। ॐ भूरिदक्षिणाय स्वाहा। ॐ सोमपाय स्वाहा। ॐ अमृतपाय स्वाहा। ॐ सोमाय स्वाहा। ॐ पुरुजिते स्वाहा। ॐ पुरुषोत्तमाय स्वाहा। ॐ विनयाय स्वाहा। ॐ जयाय स्वाहा। ॐ सत्यसंघाय स्वाहा। ॐ दाशार्हाय स्वाहा। ॐ सात्त्वतां पतये स्वाहा। ॐ जीवाय स्वाहा। ॐ विनियिता साक्षिणे स्वाहा। ॐ मुकुंदाय स्वाहा। ॐ अमित विक्रमाय स्वाहा। ॐ अम्भोनिधये स्वाहा। ॐ अनन्तात्मनें स्वाहा। ॐ महोदधिशयाय स्वाहा। ॐ अंतकाय स्वाहा। ॐ अजाय स्वाहा। ॐ महार्हाय स्वाहा। ॐ स्वाभाव्याय स्वाहा। ॐ जितामित्राय स्वाहा। ॐ प्रमोदनाय स्वाहा। ॐ ५२५।। ॐ आंनन्दाय स्वाहा। ॐ नन्दनाय स्वाहा स्वाहा। ॐ नन्दाय स्वाहा। ॐ

सत्यधर्मणे स्वाहा। ॐ त्रिविक्रमाय स्वाहा। ॐ महर्षिकपिलाचार्याय स्वाहा। ॐ कृतज्ञाय स्वाहा। ॐ मेदिनीपतये स्वाहा। ॐ त्रिपदाय स्वाहा। ॐ त्रिदशाध्यक्षाय स्वाहा। ॐ महाश्रृंगाय स्वाहा। ॐ कृतांत कृते स्वाहा। ॐ महावराहाय स्वाहा। ॐ गोविंदाय स्वाहा। ॐ सुषेणाय स्वाहा। ॐ कनकांगदिनें स्वाहा। ॐ गुह्याय स्वाहा। ॐ गम्भीराय स्वाहा। ॐ गहनाय स्वाहा। ॐ गुप्ताय स्वाहा। ॐ चक्रगदाधराय स्वाहा। ॐ वेधसे स्वाहा। ॐ स्वांगाय स्वाहा। ॐ अजिताय स्वाहा। ॐ कृष्णाय स्वाहा। ॐ ५५०।। ॐ दृढाय स्वाहा। ॐ संकर्षणाय स्वाहा। ॐ अच्युताय स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ वारुणाय स्वाहा। ॐ वृक्षाय स्वाहा। ॐ पुष्कराक्षाय स्वाहा। ॐ महामन से स्वाहा। ॐ भगवते स्वाहा। ॐ भगध्ने स्वाहा। ॐ आनंदिने स्वाहा। ॐ वनमालिने स्वाहा। ॐ हलायुधाय स्वाहा। ॐ आदित्याय स्वाहा। ॐ ज्योतिरादित्याय स्वाहा। ॐ सहिष्णवे स्वाहा। ॐ गतिसत्तमाय स्वाहा। ॐ सुधन्वनें स्वाहा। ॐ खंण्डपरशवे स्वाहा। ॐ दारुणायस्वाहा। ॐ द्रविण प्रदाय स्वाहा। ॐ दिवस्पृशे स्वाहा। ॐ सर्वदृगव्यासाय स्वाहा। ॐ वाचस्पतये स्वाहा। ॐ अयोनिजाय

स्वाहा।। ५७५।। ॐ त्रिसाम्नै स्वाहा। ॐ सामगाय स्वाहा। ॐ सामाय स्वाहा। ॐ निर्वाणाय स्वाहा। ॐ भेषजाय स्वाहा। ॐ भिषजे स्वाहा। ॐ सन्यासकृते स्वाहा। ॐ शमाय स्वाहा। ॐ शांताय स्वाहा। ॐ निष्ठाशान्तिपरायणाय स्वाहा। ॐ शुभांगाय स्वाहा। ॐ शान्तिदाय स्वाहा। ॐ स्रष्टे स्वाहा। ॐ कुमुदाय स्वाहा। ॐ कुवलेशाय स्वाहा। ॐ गोहिताय स्वाहा। ॐ गोपतये स्वाहा। ॐ गोप्त्रे स्वाहा। ॐ वृषभाक्षाय स्वाहा। ॐ वृषप्रियाय स्वाहा। ॐ अनिवर्तिने स्वाहा। ॐ निवृत्तात्मनें स्वाहा। ॐ संक्षेप्त्रे स्वाहा। ॐ क्षेमकृते स्वाहा। ॐ शिवाय स्वाहा।। ६००।। ॐ श्रीवत्सवक्षसे स्वाहा। ॐ श्रीवासाय स्वाहा। ॐ श्रीपतये स्वाहा। ॐ श्रीमतांवराय स्वाहा। ॐ श्रीदाय स्वाहा। ॐ श्रीशाय स्वाहा। ॐ श्रीनिवासाय स्वाहा। ॐ श्री निधये स्वाहा। ॐ श्री विभावनाय स्वाहा। ॐ श्री धराय स्वाहा। ॐ श्रीकराय स्वाहा। ॐ श्रेयसे स्वाहा। ॐ श्रीमते स्वाहा। ॐ लोकत्रयाश्रयाय स्वाहा। ॐ स्वक्षाय स्वाहा। ॐ स्वंगाय स्वाहा। ॐ शतानंदाय स्वाहा। ॐ नंदिने स्वाहा। ॐ ज्योतिर्गणेश्वराय स्वाहा। ॐ विजितात्मनें स्वाहा। ॐ विधेयात्मने स्वाहा। ॐ सत्कीर्तये स्वाहा। ॐ छिन्नसंशयाय स्वाहा। ॐ

उदीर्णाग स्वाहा। ॐ सर्वतश्चक्षुषे स्वाहा।। ६२५।! ॐ अनीशाय स्वाहा। ॐ शाश्वतस्थिराय स्वाहा। ॐ भूशयाय स्वाहा। ॐ भूषणाय स्वाहा। ॐ भूतये स्वाहा। ॐ विशोकाय स्वाहा। ॐ शोकनाशनाय स्वाहा। ॐ अर्चिष्मते स्वाहा। ॐ अर्चिताय स्वाहा। ॐ कुंभाय स्वाहा। ॐ विशुद्धात्मनें स्वाहा। ॐ विशोधनाय स्वाहा। ॐ अनिरुद्धाय स्वाहा। ॐ अप्रतिरथाय स्वाहा। ॐ प्रद्युम्नाय स्वाहा। ॐ अमित विक्रमाय स्वाहा। ॐ कालनेमिघ्ने स्वाहा। ॐ वीराय स्वाहा। ॐ शौरये स्वाहा। ॐ शूरजनेश्वराय स्वाहा। ॐ त्रिलोकात्मनें स्वाहा। ॐ त्रिलोकेशाय स्वाहा। ॐ केशवाय स्वाहा। ॐ केशिघ्ने स़्वाहा। ॐ हरये स्वाहा।। ६५०।। ॐ कामदेवाय स्वाहा। ॐ कामपालाय स्वाहा। ॐ कामिने स्वाहा। ॐ कान्ताय स्वाहा। ॐ कृतागमाय स्वाहा। ॐ अनिर्देश्यव़पुषे स्वाहा। ॐ विष्णवे स्वाहा। ॐ वीराय स्वाहा। ॐ अनन्ताय स्वाहा। ॐ धनञ्जयाय स्वाहा। ॐ ब्रह्मण्याय स्वाहा। ॐ ब्रह्मकृते स्वाहा। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ ब्राह्मणे स्वाहा। ॐ ब्रह्म विवर्धनाय स्वाहा। ॐ ब्रह्मविदे स्वाहा। ॐ ब्राह्मणाय स्वाहा। ॐ ब्रह्मिणे स्वाहा। ॐ ब्रह्मज्ञाय स्वाहा। ॐ ब्राह्मण प्रियाय स्वाहा। ॐ महाक्रमाय स्वाहा। ॐ

महाकर्मणे स्वाहा। ॐ महातेजसे स्वाहा। ॐ महोरगाय स्वाहा। ॐ महाक्रतवे स्वाहा।। ६७५।। ॐ महायज्वने स्वाहा। ॐ महायज्ञाय स्वाहा। ॐ महाहविषे स्वाहा। ॐ स्तव्याय स्वाहा। ॐ स्तवप्रियाय स्वाहा। ॐ स्त्रोत्राय स्वाहा। ॐ स्तुतये स्वाहा। ॐ स्तोत्रे स्वाहा। ॐ रणप्रियाय स्वाहा। ॐ पूर्णाय स्वाहा। ॐ पूरयित्रे स्वाहा। ॐ पुण्याय स्वाहा। ॐ पुण्यकीर्तये स्वाहा। ॐ अनामयाय स्वाहा। ॐ मनोजवाय स्वाहा। ॐ तीर्थकराय स्वाहा। ॐ वसुरेतसे स्वाहा। ॐ वसु प्रदाय स्वाहा। ॐ वासुप्रदाय स्वाहा। ॐ वासुदेवाय स्वाहा। ॐ वसवे स्वाहा। ॐ वसुमनसे स्वाहा। ॐ हविषे स्वाहा। ॐ सद्गतये स्वाहा। ॐ सत्कृतये स्वाहा।।७००।। ॐ सत्ताये स्वाहा। ॐ सद्भूतये स्वाहा। ॐ सत्परायणाय स्वाहा। ॐ शूरसेनाय स्वाहा। ॐ यदुश्रेष्ठाय स्वाहा। ॐ सन्निवासाय स्वाहा। ॐ सुयामुनाये स्वाहा। ॐ भूतावासाय स्वाहा। ॐ वासुदेवाय स्वाहा। ॐ सर्वसुनिलाय स्वाहा। ॐ अनलाय स्वाहा। ॐ दर्पघ्ने स्वाहा। ॐ दर्पदाय स्वाहा। ॐ दृप्ताय स्वाहा। ॐ दुर्धराय स्वाहा। ॐ अपराजिताय स्वाहा। ॐ विश्वमूर्तये स्वाहा। ॐ महामूर्तये स्वाहा। ॐ दीप्तमूर्तये स्वाहा। ॐ अमूर्तिमते

स्वाहा। ॐ अनेकमूर्तये स्वाहा। ॐ अव्यक्ताय स्वाहा। ॐ शतमूर्तये स्वाहा। ॐ शताननाय स्वाहा। ॐ एकाय स्वाहा।। ७२५।। ॐ नैकाय स्वाहा। ॐ सवाय स्वाहा। ॐ काय स्वाहा। ॐ कस्मै स्वाहा। ॐ यस्मै स्वाहा। ॐ तस्मै स्वाहा। ॐ पदमनुत्तमाय स्वाहा। ॐ लोकबंधवे स्वाहा। ॐ लोकनाथाय स्वाहा। ॐ माधवाय स्वाहा। ॐ भक्तवत्सलाय स्वाहा। ॐ सुवर्ण वर्णाय स्वाहा। ॐ हेमांगाय स्वाहा। ॐ वरांगाय स्वाहा। ॐ चन्दनांगदिनें स्वाहा। ॐ वीरघ्ने स्वाहा। ॐ विषमाय स्वाहा। ॐ शून्याय स्वाहा। ॐ घृताशिषे स्वाहा। ॐ अचलाय स्वाहा। ॐ चलाय स्वाहा। ॐ अमानिने स्वाहा। ॐ मानदाय स्वाहा। ॐ मान्याय स्वाहा। ॐ लोकस्वामिने स्वाहा।। ७५०।। ॐ त्रिलोक वृषे स्वाहा। ॐ सुमेधसे स्वाहा। ॐ मेधजाय स्वाहा। ॐ धन्याय स्वाहा। ॐ सत्यमेधसे स्वाहा। ॐ धराधराय स्वाहा। ॐ तेजोवृषाय स्वाहा। ॐ द्युतिधराय स्वाहा। ॐ सर्वशस्त्रभृतांवराय स्वाहा। ॐ प्रग्रहाय स्वाहा। ॐ निग्रहाय स्वाहा। ॐ व्यग्राय स्वाहा। ॐ नैकश्रृंगाय स्वाहा। ॐ गदाग्रजाय स्वाहा। ॐ चतुर्मूर्तये स्वाहा। ॐ चतुर्बाहवे स्वाहा। ॐ चतुर्व्यूहाय स्वाहा। ॐ चतुर्गतये स्वाहा। ॐ चतुरात्मनें स्वाहा। ॐ चतुर्भावाय

स्वाहा। ॐ चतुर्वेदविदे स्वाहा। ॐ एकपदे स्वाहा। ॐ समार्वताय स्वाहा। ॐ निवृतात्मने स्वाहा। ॐ दुर्जयाय स्वाहा।। ७७५।। ॐ दुरतिक्रमाय स्वाहा। ॐ दुर्लभाय स्वाहा। ॐ दुर्गमाय स्वाहा। ॐ दुर्गाय स्वाहा। ॐ दुरावासाय स्वाहा। ॐ दुरारिघ्ने स्वाहा। ॐ शुभांगाय स्वाहा। ॐ लोकसारंगाय स्वाहा। ॐ सुतंतवे स्वाहा। ॐ तंतुवर्धनाय स्वाहा। ॐ इन्द्रकर्मणे स्वाहा। ॐ महाकर्मणे स्वाहा। ॐ कृतकर्मणे स्वाहा। ॐ कृतागमाय स्वाहा। ॐ उद्भवाय स्वाहा। ॐ सुंदराय स्वाहा। ॐ सुंदाय स्वाहा। ॐ रत्ननाभाय स्वाहा। ॐ सुलोचनाय स्वाहा। ॐ अर्काय स्वाहा। ॐ वाजसनाय स्वाहा। ॐ श्रृंगिणे स्वाहा। ॐ जयंताय स्वाहा। ॐ सर्वविज्जयिने स्वाहा। ॐ सुवर्णविदवे स्वाहा।।८००।। ॐ अक्षोभ्याय स्वाहा। ॐ सर्ववागीश्वरेश्वराय स्वाहा। ॐ महाह्रदाय स्वाहा। ॐ महागर्त्ताय स्वाहा। ॐ महाभूताय स्वाहा। ॐ महानिधये स्वाहा। ॐ कुमुदाय स्वाहा। ॐ कुंदराय स्वाहा। ॐ कुंदाय स्वाहा। ॐ पर्जन्याय स्वाहा। ॐ पावनाय स्वाहा। ॐ अनिलाय स्वाहा। ॐ अमृतांशाय स्वाहा। ॐ अमृतवपुषे स्वाहा। ॐ सर्वज्ञाय स्वाहा। ॐ सर्वतोमुखाय स्वाहा। ॐ सुलभाय स्वाहा। ॐ

सुव्रताय स्वाहा। ॐ सिद्धाय स्वाहा। ॐ शत्रुजिते स्वाहा। ॐ शत्रुतापनाय स्वाहा। ॐ न्यग्रोधाय स्वाहा। ॐ उदुंवराय स्वाहा। ॐ अश्वत्थाय स्वाहा। ॐ चाणूंराध्रनिषूदनाय स्वाहा। ॐ ८२५।। ॐ सहस्त्रार्चिषे स्वाहा। ॐ सप्तजिह्वाय स्वाहा। ॐ सप्तैधसे स्वाहा। ॐ सप्तवाहनाय स्वाहा। ॐ अमूर्तये स्वाहा। ॐ अनघाय स्वाहा। ॐ अचिंत्याय स्वाहा। ॐ भयकृते स्वाहा। ॐ भयनाशनाय स्वाहा। ॐ अणवे स्वाहा। ॐ बृहते स्वाहा। ॐ कृशाय स्वाहा। ॐ स्थूलाय स्वाहा। ॐ गुणभृते स्वाहा। ॐ निर्गुणाय स्वाहा। ॐ महते स्वाहा। ॐ अधृताय स्वाहा। ॐ स्वधृताय स्वाहा। ॐ स्वास्याय स्वाहा। ॐ प्राग्वंशाय स्वाहा। ॐ वंशवर्धनाय स्वाहा। ॐ भारभृते स्वाहा। ॐ कथिताय स्वाहा। ॐ योगिने स्वाहा। ॐ योगीशाय स्वाहा।। ८५०।। ॐ सर्वकामदाय स्वाहा। ॐ आश्रमाय स्वाहा। ॐ श्रमणाय स्वाहा। ॐ क्षामाय स्वाहा। ॐ सुपर्णाय स्वाहा। ॐ वायुवाहनाय स्वाहा। ॐ धनुर्धराय स्वाहा। ॐ धनुर्वेदाय स्वाहा। ॐ दंण्डाय स्वाहा। ॐ दमयित्रे स्वाहा। ॐ दमाय स्वाहा। ॐ अपराजिताय स्वाहा। ॐ सर्वसहाय स्वाहा। ॐ नियंत्रे स्वाहा। ॐ नियमाय स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ सत्ववते

स्वाहा। ॐ सात्विकाय स्वाहा। ॐ सत्याय स्वाहा। ॐ सत्यधर्मपरायणाय स्वाहा। ॐ अभिप्राय स्वाहा। ॐ प्रियार्हाय स्वाहा। ॐ अर्हाय स्वाहा। ॐ प्रियकृते स्वाहा। ॐ प्रीतिवर्धनाय स्वाहा।। ८७५।। ॐ विहायसगतये स्वाहा। ॐ ज्योतिषे स्वाहा। ॐ सुरुचये स्वाहा। ॐ हुतभुजे स्वाहा। ॐ विभवे स्वाहा। ॐ रवये स्वाहा। ॐ विरोचनाय स्वाहा। ॐ सूर्याय स्वाहा। ॐ सवित्रे स्वाहा। ॐ रविलोचनाय स्वाहा। ॐ अनन्ताय स्वाहा। ॐ हुतभुजे स्वाहा। ॐ भोक्त्रे स्वाहा। ॐ सुखदाय स्वाहा। ॐ नैकजाय स्वाहा। ॐ अग्रजाय स्वाहा। ॐ अनिर्विण्याय स्वाहा। ॐ सदामर्षिणे स्वाहा। ॐ लोकाधिष्ठानाय स्वाहा। ॐ अद्भुताय स्वाहा। ॐ सन्नामाय स्वाहा। ॐ सनातनतमाय स्वाहा। ॐ कपिलाय स्वाहा। ॐ कपये स्वाहा। ॐ अव्ययाय स्वाहा।।९००।। ॐ स्वस्तिदाय स्वाहा। ॐ स्वस्तिकृते स्वाहा। ॐ स्वस्तिने स्वाहा। ॐ स्वस्तिभुजे स्वाहा। ॐ स्वस्तिदक्षिणाय स्वाहा। ॐ अरौद्राय स्वाहा। ॐ कुण्डलिने स्वाहा। ॐ चक्रिणे स्वाहा। ॐ विक्रमिणे स्वाहा। ॐ ऊर्जितशासनाय स्वाहा। ॐ शब्दातिगाय स्वाहा। ॐ शब्दसहाय स्वाहा। ॐ शिशिराय स्वाहा। ॐ शर्वरीकराय स्वाहा।

ॐ अक्रूराय स्वाहा। ॐ पेशलाय स्वाहा। ॐ दक्षाय स्वाहा। ॐ दक्षिणाय स्वाहा। ॐ क्षमिणावराय स्वाहा। ॐ विद्वत्तमाय स्वाहा। ॐ वीतभयाय स्वाहा। ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय स्वाहा। ॐ उत्तारणाय स्वाहा। ॐ दुष्कृतघ्ने स्वाहा। ॐ पुण्याय स्वाहा।। ६२५।। ॐ दुःस्वप्न नाशनाय स्वाहा। ॐ वीरघ्ने स्वाहा। ॐ रक्षणाय स्वाहा। ॐ संताये स्वाहा। ॐ जीवनाय स्वाहा। ॐ पर्यवस्थिताय स्वाहा। ॐ अनंतरूपाय स्वाहा। ॐ अनंतश्रिते स्वाहा। ॐ जितमन्यवे स्वाहा। ॐ भयापहाय स्वाहा। ॐ चतुरस्राय स्वाहा। ॐ गभीरात्मने स्वाहा। ॐ विदिशाय स्वाहा। ॐ व्यादिशाय स्वाहा। ॐ दिशाय स्वाहा। ॐ अनादये स्वाहा। ॐ भुवे स्वाहा। ॐ भुविलक्ष्म्यै स्वाहा। ॐ सुवीराय स्वाहा। ॐ रुचिरांगदाय स्वाहा। ॐ जननाय स्वाहा। ॐ जनजन्मादये स्वाहा। ॐ भीमाय स्वाहा। ॐ भीमपराक्राय स्वाहा। ॐ आधारनिलयाय स्वाहा।। ६५०।। ॐ धात्रे स्वाहा। ॐ पुष्प हासाय स्वाहा। ॐ प्रजागराय स्वाहा। ॐ उर्ध्वगाय स्वाहा। ॐ सत्पथाचाराय स्वाहा। ॐ प्राणदाय स्वाहा। ॐ प्रणवाय स्वाहा। ॐ प्रणाय स्वाहा। ॐ प्रमाणाय स्वाहा। ॐ प्राणनिलयाय स्वाहा।

स्वाहा। ॐ सात्विकाय स्वाहा। ॐ सत्याय स्वाहा। ॐ सत्यधर्मपरायणाय स्वाहा। ॐ अभिप्राय स्वाहा। ॐ प्रियार्हाय स्वाहा। ॐ अर्हाय स्वाहा। ॐ प्रियकृते स्वाहा। ॐ प्रीतिवर्धनाय स्वाहा।। ८७५।। ॐ विहायसगतये स्वाहा। ॐ ज्योतिषे स्वाहा। ॐ सुरुचये स्वाहा। ॐ हुतभुजे स्वाहा। ॐ विभवे स्वाहा। ॐ रवये स्वाहा। ॐ विरोचनाय स्वाहा। ॐ सूर्याय स्वाहा। ॐ सवित्रे स्वाहा। ॐ रविलोचनाय स्वाहा। ॐ अनन्ताय स्वाहा। ॐ हुतभुजे स्वाहा। ॐ भोक्त्रे स्वाहा। ॐ सुखदाय स्वाहा। ॐ नैकजाय स्वाहा। ॐ अग्रजाय स्वाहा। ॐ अनिर्विण्याय स्वाहा। ॐ सदामर्षिणे स्वाहा। ॐ लोकाधिष्ठानाय स्वाहा। ॐ अद्भुताय स्वाहा। ॐ सन्नामाय स्वाहा। ॐ सनातनतमाय स्वाहा। ॐ कपिलाय स्वाहा। ॐ कपये स्वाहा। ॐ अव्ययाय स्वाहा।।९००।। ॐ स्वस्तिदाय स्वाहा। ॐ स्वस्तिकृते स्वाहा। ॐ स्वस्तिने स्वाहा। ॐ स्वस्तिभुजे स्वाहा। ॐ स्वस्तिदक्षिणाय स्वाहा। ॐ अरौद्राय स्वाहा। ॐ कुण्डलिने स्वाहा। ॐ चक्रिणे स्वाहा। ॐ विक्रमिणे स्वाहा। ॐ ऊर्जितशासनाय स्वाहा। ॐ शब्दातिगाय स्वाहा। ॐ शब्दसहाय स्वाहा। ॐ शिशिराय स्वाहा। ॐ शर्वरीकराय स्वाहा।

ॐ अक्रूराय स्वाहा। ॐ पेशलाय स्वाहा। ॐ दक्षाय स्वाहा। ॐ दक्षिणाय स्वाहा। ॐ क्षमिणावराय स्वाहा। ॐ विद्वत्तमाय स्वाहा। ॐ वीतभयाय स्वाहा। ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय स्वाहा। ॐ उत्तारणाय स्वाहा। ॐ दुष्कृतघ्ने स्वाहा। ॐ पुण्याय स्वाहा।। ६२५।। ॐ दुःस्वप्न नाशनाय स्वाहा। ॐ वीरघ्ने स्वाहा। ॐ रक्षणाय स्वाहा। ॐ संताये स्वाहा। ॐ जीवनाय स्वाहा। ॐ पर्यवस्थिताय स्वाहा। ॐ अनंतरूपाय स्वाहा। ॐ अनंतश्रिते स्वाहा। ॐ जितमन्यवे स्वाहा। ॐ भयापहाय स्वाहा। ॐ चतुरस्त्राय स्वाहा। ॐ गभीरात्मने स्वाहा। ॐ विदिशाय स्वाहा। ॐ व्यादिशाय स्वाहा। ॐ दिशाय स्वाहा। ॐ अनादये स्वाहा। ॐ भुवे स्वाहा। ॐ भुविलक्ष्म्यै स्वाहा। ॐ सुवीराय स्वाहा। ॐ रुचिरांगदाय स्वाहा। ॐ जननाय स्वाहा। ॐ जनजन्मादये स्वाहा। ॐ भीमाय स्वाहा। ॐ भीमपराक्राय स्वाहा। ॐ आधारनिलयाय स्वाहा।। ६५०।। ॐ धात्रे स्वाहा। ॐ पुष्प हासाय स्वाहा। ॐ प्रजागराय स्वाहा। ॐ उर्ध्वगाय स्वाहा। ॐ सत्पथाचाराय स्वाहा। ॐ प्राणदाय स्वाहा। ॐ प्रणवाय स्वाहा। ॐ प्रणाय स्वाहा। ॐ प्रमाणाय स्वाहा। ॐ प्राणनिलयाय स्वाहा।

स्वाहा। ॐ सात्विकाय स्वाहा। ॐ सत्याय स्वाहा। ॐ सत्यधर्मपरायणाय स्वाहा। ॐ अभिप्राय स्वाहा। ॐ प्रियार्हाय स्वाहा। ॐ अर्हाय स्वाहा। ॐ प्रियकृते स्वाहा। ॐ प्रीतिवर्धनाय स्वाहा।। ८७५।। ॐ विहायसगतये स्वाहा। ॐ ज्योतिषे स्वाहा। ॐ सुरुचये स्वाहा। ॐ हुतभुजे स्वाहा। ॐ विभवे स्वाहा। ॐ रवये स्वाहा। ॐ विरोचनाय स्वाहा। ॐ सूर्याय स्वाहा। ॐ सवित्रे स्वाहा। ॐ रविलोचनाय स्वाहा। ॐ अनन्ताय स्वाहा। ॐ हुतभुजे स्वाहा। ॐ भोक्त्रे स्वाहा। ॐ सुखदाय स्वाहा। ॐ नैकजाय स्वाहा। ॐ अग्रजाय स्वाहा। ॐ अनिर्विण्याय स्वाहा। ॐ सदामर्षिणे स्वाहा। ॐ लोकाधिष्ठानाय स्वाहा। ॐ अद्भुताय स्वाहा। ॐ सन्नामाय स्वाहा। ॐ सनातनतमाय स्वाहा। ॐ कपिलाय स्वाहा। ॐ कपये स्वाहा। ॐ अव्ययाय स्वाहा।।६००।। ॐ स्वस्तिदाय स्वाहा। ॐ स्वस्तिकृते स्वाहा। ॐ स्वस्तिने स्वाहा। ॐ स्वस्तिभुजे स्वाहा। ॐ स्वस्तिदक्षिणाय स्वाहा। ॐ अरौद्राय स्वाहा। ॐ कुण्डलिने स्वाहा। ॐ चक्रिणे स्वाहा। ॐ विक्रमिणे स्वाहा। ॐ ऊर्जितशासनाय स्वाहा। ॐ शब्दातिगाय स्वाहा। ॐ शब्दसहाय स्वाहा। ॐ शिशिराय स्वाहा। ॐ शर्वरीकराय स्वाहा।

ॐ अक्रूराय स्वाहा। ॐ पेशलाय स्वाहा। ॐ दक्षाय स्वाहा। ॐ दक्षिणाय स्वाहा। ॐ क्षमिणावराय स्वाहा। ॐ विद्वत्तमाय स्वाहा। ॐ वीतभयाय स्वाहा। ॐ पुण्यश्रवणकीर्तनाय स्वाहा। ॐ उत्तारणाय स्वाहा। ॐ दुष्कृतघ्ने स्वाहा। ॐ पुण्याय स्वाहा।। ६२५।। ॐ दुःस्वप्न नाशनाय स्वाहा। ॐ वीरघ्ने स्वाहा। ॐ रक्षणाय स्वाहा। ॐ संताये स्वाहा। ॐ जीवनाय स्वाहा। ॐ पर्यवस्थिताय स्वाहा। ॐ अनंतरूपाय स्वाहा। ॐ अनंतश्रिते स्वाहा। ॐ जितमन्यवे स्वाहा। ॐ भयापहाय स्वाहा। ॐ चतुरस्रांय स्वाहा। ॐ गभीरात्मने स्वाहा। ॐ विदिशाय स्वाहा। ॐ व्यादिशाय स्वाहा। ॐ दिशाय स्वाहा। ॐ अनादये स्वाहा। ॐ भुवे स्वाहा। ॐ भुविलक्ष्म्यै स्वाहा। ॐ सुवीराय स्वाहा। ॐ रुचिरांगदाय स्वाहा। ॐ जननाय स्वाहा। ॐ जनजन्मादये स्वाहा। ॐ भीमाय स्वाहा। ॐ भीमपराक्राय स्वाहा। ॐ आधारनिलयाय स्वाहा।। ६५०।। ॐ धात्रे स्वाहा। ॐ पुष्प हासाय स्वाहा। ॐ प्रजागराय स्वाहा। ॐ उर्ध्वगाय स्वाहा। ॐ सत्पथाचाराय स्वाहा। ॐ प्राणदाय स्वाहा। ॐ प्रणवाय स्वाहा। ॐ प्रणाय स्वाहा। ॐ प्रमाणाय स्वाहा। ॐ प्राणनिलयाय स्वाहा।

ॐ प्राणभृते स्वाहा। ॐ प्राणजीवनाय स्वाहा। ॐ तत्त्वाय स्वाहा। ॐ तत्त्वविदे स्वाहा। ॐ एकात्मने स्वाहा। ॐ जन्ममृत्युजरातिगाय स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वस्तरवे स्वाहा। ॐ ताराय स्वाहा। ॐ सवित्रे स्वाहा। ॐ प्रपितामहाय स्वाहा। ॐ यज्ञाय स्वाहा। ॐ यज्ञपतये स्वाहा। ॐ यज्वने स्वाहा। ॐ यज्ञांगाय स्वाहा। ॐ यज्ञवाहनाय स्वाहा।। ६७५।। ॐ यज्ञभृते स्वाहा। ॐ यज्ञकृते स्वाहा। ॐ यज्ञिने स्वाहा। ॐ यज्ञभुजे स्वाहा। ॐ यज्ञसाधनाय स्वाहा। ॐ यज्ञांतकृते स्वाहा। ॐ यज्ञगुह्याय स्वाहा। ॐ अन्नाय स्वाहा। ॐ अन्नादाय स्वाहा। ॐ आत्मयोनये स्वाहा। ॐ स्वयञ्जाताय स्वाहा। ॐ वैखानाय स्वाहा। ॐ सामंगायनाय स्वाहा। ॐ देवकीनन्दनाय स्वाहा। ॐ स्रष्ट्रे स्वाहा। ॐ क्षितीशाय स्वाहा। ॐ पापनाशनाय स्वाहा। ॐ शंखभृते स्वाहा। ॐ नंदकिने स्वाहा। ॐ चक्रिणे स्वाहा। ॐ सार्ङ्गधन्वने स्वाहा। ॐ गदाधराय स्वाहा। ॐ रथांग पाणये स्वाहा। ॐ अक्षोभ्याय स्वाहा। ॐ सर्वप्रहरणायुधाय स्वाहा।।१०००।। ॐ विष्णवे स्वाहा। ॐ परविष्णवे स्वाहा, ॐ महाविष्णवे स्वाहा।। अब पूर्ववत् अङ्गन्यास करे।

।। इति विष्णु सहस्रनामावलिहोम ।।

देवी भागवत पुराण के द्वादश स्कंध से

गायत्री सहस्रनाम पुण्य देने वाला, महासम्पत्तिदायक सम्पूर्ण पाप को नष्ट करने वाला, रोग मुक्त करने वाला है। स्वयं नारायण भगवान ने नारद को बताया।

(देवी भागवत)

श्री

"गायत्री याग"

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीगायत्री सहस्रनाम स्तोत्र मंत्रस्य ब्रह्माऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, दैवी गायत्री देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, श्री भगवती गायत्री प्रीत्यर्थे हवने विनियोगः।। पढ़कर जल छोड़ देवे। पुष्प लेकर ध्यान करें–

ध्यानम्

ॐ मुक्ताविद्रुम हेमनील धवलच्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै
र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्वार्थवर्णात्मिकाम्।।
गायत्रींवरदाभयाङ्कुशकशाः शुभ्रं कपालं गुणं।
शंखं चक्रमथारविन्द युगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे।।

माता गायत्री को ध्यान समर्पण कर हृदयादि न्यास कर लेवे–

ॐ तत्सवितुर् हृदयाय नमः। ॐ वरेणियं शिरसे स्वाहा। ॐ भर्गोदेवस्य शिखायै वषट्। ॐ धी महि कवचाय हुम। ॐ धियो योनः नेत्र त्रयाय वौषट्। ॐ प्रचोदयात् अस्त्राय फट्। पुनः कर न्यास कर लेवें।

ॐ तत्सवितुर् अङ्गुष्ठाभ्यांनमः। ॐ वरेणियं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ भर्गोदेवस्य मध्यमाभ्यां नमः। ॐ धीमहि अनामिकाभ्यांनमः। धियो यो नः कनिष्ठिकाभ्यां नमः। प्रचोदयात्। करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः। सुविधानुसार श्री सूक्त से न्यास होम दुर्गायाग विधान से करें–

॥ गायत्री सहस्त्र नामहवनम्॥

ॐ अचिन्त्यलक्षणायै स्वाहा। ॐ अव्यक्तायै स्वाहा। ॐ अर्थमातृमहेश्वर्यै स्वाहा। ॐ अमृतार्णवमध्यस्थायै स्वाहा। ॐ अजितायै स्वाहा। ॐ अपराजितायै स्वाहा। ॐ अणिमादिगुणाधारायै स्वाहा। ॐ अर्कमण्डलसंस्थितायै स्वाहा। ॐ अजरायै स्वाहा। ॐ अजायै स्वाहा। ॐ अपरायै स्वाहा। ॐ अधर्मायै स्वाहा। ॐ अक्षसूत्र धरायै स्वाहा। ॐ अधरायै स्वाहा। ॐ अकारादिक्षकारान्तायै स्वाहा। ॐ अरिषड्वर्गभेदिन्यै स्वाहा। ॐ अंजनादिप्रतीकाशायै स्वाहा। ॐ अंजनाद्रि निवासिन्यै स्वाहा। ॐ अदित्यै

स्वाहा। ॐ अजपायै स्वाहा। ॐ अविद्यायै स्वाहा। ॐ अरविन्दनिभेक्षणायै स्वाहा। ॐ अन्तर्बहिः स्थितायै स्वाहा। ॐ अविद्याध्वंसिन्यै स्वाहा। ॐ अन्तरात्मिकायै स्वाहा।।२५।। ॐ अजायै स्वाहा। ॐ अजमुखावासायै स्वाहा। ॐ अरविन्दनिभाननायै स्वाहा। ॐ अर्धमात्रायैं स्वाहा। ॐ अर्थदानज्ञायै स्वाहा। ॐ अरिमण्डलमर्दिन्यै स्वाहा। ॐ असुरघ्न्यै स्वाहा। ॐ अमावास्यायै स्वाहा। ॐ अलक्ष्मीघ्नन्त्यै स्वाहा। ॐ अजार्चितायै स्वाहा। ॐ आदिलक्ष्म्यै स्वाहा। ॐ आदिशक्त्यै स्वाहा। ॐ आकृत्यै स्वाहा। ॐ आयताननायै स्वाहा। ॐ आदित्यपदवीचारायै स्वाहा। ॐ आदित्य परिसेवितायै स्वाहा। ॐ आचार्यायै स्वाहा। ॐ आवर्तनायै स्वाहा। ॐ आचारायै स्वाहा। ॐ आदिमूर्ति निवासिन्यै स्वाहा। ॐ आग्नेयै स्वाहा। ॐ आमर्यै स्वाहा। ॐ आद्यायै स्वाहा। ॐ आराध्यायै स्वाहा। ॐ आसनस्थितायै स्वाहा।। ५०।। ॐ आधारनिलयायै स्वाहा। ॐ आधारायै स्वाहा। ॐ आकाशान्तनिवासिन्यै स्वाहा। ॐ आद्याक्षर समायुक्तायै स्वाहा। ॐ अन्तराकाशरुपिण्यै स्वाहा। ॐ आदित्यमण्डलगतायै स्वाहा। ॐ आन्तरध्वान्त–नाशिन्यै स्वाहा। ॐ इन्दिरायै स्वाहा। ॐ इष्टायै

स्वाहा। ॐ इन्दीवरनिभेक्षणायै स्वाहा। ॐ इरावत्यै स्वाहा। ॐ इन्द्रपदायै स्वाहा। ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा। ॐ इन्दुरूपिण्यै स्वाहा। ॐ इक्षुकोदण्डसंयुक्तायै स्वाहा। ॐ इषुसन्धान कारिण्यै स्वाहा। ॐ इन्द्रनील समाकारायै स्वाहा। ॐ इडा पिङ्गलरूपिण्यै स्वाहा। ॐ इन्द्राक्ष्यै स्वाहा। ॐ ईश्वरीदेव्यै स्वाहा। ॐ ईहात्रयविवर्जितायै स्वाहा। ॐ उमायै स्वाहा। ॐ उषायै स्वाहा। ॐ उडुनिभायै स्वाहा।। ७५।। ॐ उर्वारुकफलाननायै स्वाहा। ॐ उडुप्रभायै स्वाहा। ॐ उडुमत्यै स्वाहा। ॐ उडुपायै स्वाहा। ॐ उडुमध्यगायै स्वाहा। ॐ ऊर्ध्वायै स्वाहा। ॐ उर्ध्वकेश्यै स्वाहा। ॐ ऊर्ध्वाधोगतिभेदिन्यै स्वाहा। ॐ ऊर्ध्वबाहुप्रियायै स्वाहा। ॐ ऊर्मिमालावाग्ग्रंथ दायिन्यै स्वाहा। ॐ ऋतायै स्वाहा। ॐ ऋषये स्वाहा। ॐ ऋतुमत्यै स्वाहा। ॐ ऋषिदेवनमस्कृतायै स्वाहा। ॐ ऋग्वेदायै स्वाहा। ॐ ऋणहंत्र्यै स्वाहा। ॐ ऋषिमण्डल चारिण्यै स्वाहा। ॐ ऋद्धिदायै स्वाहा। ॐ ऋजुमार्गस्थायै स्वाहा। ॐ ऋजुधर्मायै स्वाहा। ॐ ऋतुप्रदायै स्वाहा। ॐ ऋग्वेदनिलयायै स्वाहा। ॐ ऋज्व्यै स्वाहा। ॐ लुप्तधर्मप्रवर्तिन्यै स्वाहा। ॐ लूतारिवरसंभूतायै स्वाहा।।१००।। ॐ लूतादिविषहारिण्यै स्वाहा।

ॐ एकाक्षरायै स्वाहा। ॐ एकमात्रायै स्वाहा। ॐ एकायै स्वाहा। ॐ एकैकनिष्ठितायै स्वाहा। ॐ एन्द्रयै स्वाहा। ॐ ऐरावतारुढायै स्वाहा। ॐ ऐहिकामुष्मिकप्रदायै स्वाहा। ॐ ओंकारायै स्वाहा। ॐ औषध्यै स्वाहा। ॐ ओतायै स्वाहा। ॐ ओतप्रोत निवासिन्यै स्वाहा। ॐ और्वायै स्वाहा। ॐ औषधसम्पन्नायै स्वाहा। ॐ औपासनफलप्रदायै स्वाहा। ॐ अण्डमध्यस्थितदेव्यै स्वाहा। ॐ आःकारमनुरुपिण्यै स्वाहा। ॐ कात्यायन्यै स्वाहा। ॐ कालरात्र्यै स्वाहा। ॐ कामाक्ष्यै स्वाहा। ॐ कामसुन्दर्यै स्वाहा। ॐ कमलायै स्वाहा। ॐ कामिन्यै स्वाहा। ॐ कान्तायै स्वाहा। ॐ कामदायै स्वाहा।। १२५।। ॐ कालकण्ठिन्यै स्वाहा। ॐ करिकुम्भस्तनभरायै स्वाहा। ॐ करवीरसुवासिन्यै स्वाहा। ॐ कल्याण्यै स्वाहा। ॐ कुण्डलवत्यै स्वाहा। ॐ कुरुक्षेत्रनिवासिन्यै स्वाहा। ॐ कुरुविन्ददलाकारायै स्वाहा। ॐ कुण्डल्यै स्वाहा। ॐ कुमुदालयायै स्वाहा। ॐ कालजिह्वायै स्वाहा। ॐ करालास्यायै स्वाहा। ॐ कालिकायै स्वाहा। ॐ कालरुपिण्यै स्वाहा। ॐ कमनीयगुणायै स्वाहा। ॐ कान्त्यै स्वाहा। ॐ कलाधारायै स्वाहा। ॐ कुमुद्वत्यै स्वाहा। ॐ कौशिक्यै स्वाहा।

ॐ कमलाकारायै स्वाहा। ॐ कामचारप्रभञ्जिन्यै स्वाहा। ॐ कौमार्यै स्वाहा। ॐ करुणापाङ्ग्यै स्वाहा। ॐ ककुबन्तायै स्वाहा। ॐ करिप्रियायै स्वाहा। ॐ केसर्यै स्वाहा।। १५०।। केशवनुतायै स्वाहा। ॐ कदम्बकुसुमप्रियायै स्वाहा। ॐ कालिन्द्यै स्वाहा। ॐ कालिकायै स्वाहा। ॐ काञ्च्यै स्वाहा। ॐ कलशोद्भवसंस्तुतायै स्वाहा। ॐ काममात्रे स्वाहा। ॐ क्रतुमत्यै स्वाहा। ॐ कामरुपायै स्वाहा। ॐ कृपावत्यै स्वाहा। ॐ कुमार्यै स्वाहा। ॐ कुण्डनिलयायै स्वाहा। ॐ किरात्यै स्वाहा। ॐ कीरवाहनायै स्वाहा। ॐ कैकेयै स्वाहा। ॐ कोकिलालापायै स्वाहा। ॐ केतक्यै स्वाहा। ॐ कुसुमप्रियायै स्वाहा। ॐ कमण्डलुधरायै स्वाहा। ॐ काल्यै स्वाहा। ॐ कर्मनिर्मूलकारिण्यै स्वाहा। ॐ कलहंसगत्यै स्वाहा। ॐ कक्षायै स्वाहा। ॐ कृतकौतुकमङ्गलायै स्वाहा। ॐ कस्तूरी तिलकायै स्वाहा।।१७५।। ॐ कम्रायै स्वाहा। ॐ करीन्द्रगमनायै स्वाहा। ॐ कुहै स्वाहा। ॐ कर्पूरलेपनायै स्वाहा। ॐ कृष्णायै स्वाहा। ॐ कपिलायै स्वाहा। ॐ कुहराश्रयायै स्वाहा। ॐ कूटस्थायै स्वाहा। ॐ कुधरायै स्वाहा। ॐ कम्रायै स्वाहा। ॐ कुक्षिस्था

खिलविष्टपायै स्वाहा। ॐ खड्गखेटकरायै स्वाहा। ॐ खर्वायै स्वाहा। ॐ खेचर्यै स्वाहा। ॐ खगवाहनायै स्वाहा। ॐ खट्वाङ्गधारिण्यै स्वाहा। ॐ ख्यातायै स्वाहा। ॐ खगराजोपरिस्थतायै स्वाहा। ॐ खलघ्न्यै स्वाहा। ॐ खण्डितजरायै स्वाहा। ॐ खण्डाख्यानप्रदायिन्यै स्वाहा। ॐ खण्डेन्दुतिलकायै स्वाहा। ॐ गङ्गायै स्वाहा। ॐ गणेशगुहपूजितायै स्वाहा। ॐ गायत्र्यै स्वाहा।। २००।। ॐ गोमत्यै स्वाहा। ॐ गीतायै स्वाहा। ॐ गान्धार्यै स्वाहा। ॐ गानलोलुपायै स्वाहा। ॐ गौतम्यै स्वाहा। ॐ गामिन्यै स्वाहा। ॐ गाधायै स्वाहा। ॐ गन्धर्वाप्सरसेवितायै स्वाहा। ॐ गोविन्दचरणाक्रान्तायै स्वाहा। ॐ गुणत्रयविभावितायै स्वाहा। ॐ गन्धर्व्यै स्वाहा। ॐ गह्वर्यै स्वाहा। ॐ गोत्रायै स्वाहा। ॐ गिरीशायै स्वाहा। ॐ गहनायै स्वाहा। ॐ गम्यै स्वाहा। ॐ गुहावासायै स्वाहा। ॐ गुणवत्यै स्वाहा। ॐ गुरुपापप्रणाशिन्यै स्वाहा। ॐ गुर्व्यै स्वाहा। ॐ गुणवत्यै स्वाहा। ॐ गुह्यायै स्वाहा। ॐ गोप्तव्यायै स्वाहा। ॐ गुणदायिन्यै स्वाहा। ॐ गिरिजायै स्वाहा।। २२५।। ॐ गुह्यमातङ्ग्यै स्वाहा। ॐ गरुडध्वजवल्लभायै स्वाहा। ॐ गर्वापहारिण्यै स्वाहा। ॐ गोदायै स्वाहा। ॐ

गोकुलस्थायै स्वाहा। ॐ गदाधरायै स्वाहा। ॐ
गोकुलस्थायै स्वाहा। ॐ गदाधरायै स्वाहा। ॐ
गोकर्णनिलयासक्तायै स्वाहा। ॐ गुह्यमण्डलवर्तिन्यै स्वाहा। ॐ धर्मदायै स्वाहा। ॐ धनदायै स्वाहा। ॐ घण्टायै स्वाहा। ॐ घोरदानवमर्दिन्यै स्वाहा। ॐ घृणिमन्त्रमय्यै स्वाहा। ॐ घोषायै स्वाहा। ॐ घनसंपातदायिन्यै स्वाहा। ॐ घण्टारवप्रियायै स्वाहा। ॐ घ्राणायै स्वाहा। ॐ घृणिसन्तुष्टिकारिण्यै स्वाहा। ॐ घनारिमण्डलाये स्वाहा। ॐ घूर्णायै स्वाहा। ॐ घृताच्यै स्वाहा। ॐ घनवेगिन्यै स्वाहा। ॐ ज्ञानधातुमय्यै स्वाहा। ॐ चर्चायै स्वाहा। ॐ चर्चितायै स्वाहा।। २५० ।। ॐ चारुहासिन्यै स्वाहा। ॐ चटुलायै स्वाहा। ॐ चण्डिकायै स्वाहा। ॐ चित्रायै स्वाहा। ॐ चित्रमाल्यविभूषितायै स्वाहा। ॐ चतुर्भुजायै स्वाहा। ॐ चारुदन्तायै स्वाहा। ॐ चातुर्यै स्वाहा। ॐ चरितदायै स्वाहा। ॐ चूलिकायै स्वाहा। ॐ चित्रवस्रान्तायै स्वाहा। ॐ चन्द्रमः कर्णकुण्डलायै स्वाहा। ॐ चन्द्रहासायै स्वाहा। ॐ चारुदात्र्यै स्वाहा। ॐ चकोर्यै स्वाहा। ॐ चन्द्रहासिन्ये स्वाहा। ॐ चन्द्रिकायै स्वाहा। ॐ चन्द्रधात्र्यै स्वाहा। ॐ चौर्यै स्वाहा। ॐ चौरायै स्वाहा। ॐ चण्डिकायै स्वाहा।

ॐ चञ्चद्वाग्वादिन्यै स्वाहा। ॐ चन्द्रचूडायै स्वाहा। ॐ चोरविनाशिन्यै स्वाहा। ॐ चारुचन्दनलिप्ताङ्ग्यै स्वाहा।। २७५।। ॐ चञ्चच्चामरवीजितायै स्वाहा। ॐ चारुतमध्यायै स्वाहा। ॐ चारुगत्यै स्वाहा। ॐ चन्दिलायै स्वाहा। ॐ चन्द्ररुपिण्यै स्वाहा। ॐ चारुहोमप्रियायै स्वाहा। ॐ चार्वाचरितायै स्वाहा। ॐ चक्रबाहुकार्यै स्वाहा। ॐ चन्द्रमण्डलमध्यस्थायै स्वाहा। ॐ चन्द्रमण्डलदर्पणायै स्वाहा। ॐ चक्रवाकस्तन्यै स्वाहा। ॐ चेष्टायै स्वाहा। ॐ चित्रायै स्वाहा। ॐ चारुविलासिन्यै स्वाहा। ॐ चित्स्वरूपायै स्वाहा। ॐ चन्द्रवत्यै स्वाहा। ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। ॐ चन्दनप्रियायै स्वाहा। ॐ चोदयित्र्यै स्वाहा। ॐ चिरप्रज्ञायै स्वाहा। ॐ चातकायै स्वाहा। ॐ चारुहेतुक्यै स्वाहा। ॐ छत्रयातायै स्वाहा। ॐ छत्रधरायै स्वाहा। ॐ छायायै स्वाहा।। ३००।। ॐ छन्दः परिच्छदायै स्वाहा। ॐ छायादेव्यै स्वाहा। ॐ छिद्रनखायै स्वाहा। ॐ छत्रेन्द्रियविसर्पिण्यै स्वाहा। ॐ छन्दोऽनुष्टुप्प्रतिष्ठान्तायै स्वाहा। ॐ छिद्रोपद्रवभेदिन्यै स्वाहा। ॐ छेदायै स्वाहा। ॐ छत्रेश्वर्यै स्वाहा। ॐ छिन्नायै स्वाहा। ॐ छुरिकायै स्वाहा। ॐ छेदनप्रियायै स्वाहा। ॐ जनन्यै स्वाहा। ॐ जन्मरहितायै स्वाहा। ॐ जातवेदायै

स्वाहा। ॐ जगन्मय्यै स्वाहा। ॐ जाह्नव्यै स्वाहा। ॐ जटिलायै स्वाहा। ॐ जेत्र्यै स्वाहा। ॐ जरामरणवर्जितायै स्वाहा। ॐ जम्बूद्वीपवत्यै स्वाहा। ॐ ज्वालायै स्वाहा। ॐ जयन्त्यै स्वाहा। ॐ जलशालिन्यै स्वाहा। ॐ जितेन्द्रियायै स्वाहा। ॐ जितक्रोधायै स्वाहा।। ३२५।। ॐ जितामित्रायै स्वाहा। ॐ जगत्प्रियायै स्वाहा। ॐ जातरूपमय्यै स्वाहा। ॐ जिह्वायै स्वाहा। ॐ जानक्यै स्वाहा। ॐ जगत्यै स्वाहा। ॐ जरायै स्वाहा। ॐ जनित्र्यै स्वाहा। ॐ जह्नुतनयायै स्वाहा। ॐ जगत्त्रयहितैषिण्यै स्वाहा। ॐ ज्वालामुख्यै स्वाहा। ॐ जपवत्यै स्वाहा। ॐ ज्वरघ्न्यै स्वाहा। ॐ जितविष्टपायै स्वाहा। ॐ जिताक्रान्तमय्यै स्वाहा। ॐ ज्वालायै स्वाहा। ॐ जाग्रत्यै स्वाहा। ॐ ज्वरदेवतायै स्वाहा। ॐ ज्वलन्त्यै स्वाहा। ॐ जलदायै स्वाहा। ॐ ज्येष्ठायै स्वाहा। ॐ ज्याघोषास्फोटदिङ्मुख्यै स्वाहा। ॐ जम्भिन्यै स्वाहा। ॐ जृम्भणायै स्वाहा। ॐ जृम्भायै स्वाहा।।३५०।। ॐ ज्वलन्माणिक्यकुण्डलायै स्वाहा। ॐ झिंझिंकायै स्वाहा। ॐ झणनिर्घोषायै स्वाहा। ॐ झंझामारुतवेगिन्यै स्वाहा। ॐ झल्लरीवाद्यकुशलायै स्वाहा। ॐ ञरुपायै स्वाहा। ॐ ञभुजास्मृतायै स्वाहा।

ॐ टङ्कवाणसमायुक्तायै स्वाहा। ॐ टङ्किन्यै स्वाहा। ॐ टङ्कभेदिन्यै स्वाहा। ॐ टङ्किगणकृताघोषायै स्वाहा। ॐ टङ्कनीयमहोरसायै स्वाहा। ॐ टंकारकारिणीदेव्यै स्वाहा। ॐ ठठशब्दनिनादिन्यै स्वाहा। ॐ डामर्यै स्वाहा। ॐ डाकिन्यै स्वाहा। ॐ डिम्भायै स्वाहा। ॐ डुण्डुमारैकनिर्जितायै स्वाहा। ॐ डामरीतंत्रमार्ग–स्थायै स्वाहा। ॐ डमड्डमरुनादिन्यै स्वाहा। ॐ डिण्डीरवसहायै स्वाहा। ॐ डिंभलसत्क्रीड़ापरायणायै स्वाहा। ॐ ढुण्ढिविध्नेशजनन्यै स्वाहा। ॐ ढक्काहस्तायै स्वाहा। ॐ ढिलिव्रजायै स्वाहा।।३७५।। ॐ नित्यज्ञानायै स्वाहा। ॐ निरुपमायै स्वाहा। ॐ निर्गुणायै स्वाहा। ॐ नर्मदायै स्वाहा। ॐ नद्यै स्वाहा। ॐ त्रिगुणायै स्वाहा। ॐ त्रिपदायै स्वाहा। ॐ तन्त्र्यै स्वाहा। ॐ तुलस्यै स्वाहा। ॐ तरुणायै स्वाहा। ॐ तरवे स्वाहा। ॐ त्रिविक्रमपदाक्रान्तायै स्वाहा। ॐ तुरीयपदगामिन्यै स्वाहा। ॐ तरुणादित्यसंकाशायै स्वाहा। ॐ तामस्यै स्वाहा। ॐ तुहिनायै स्वाहा। ॐ तुरायै स्वाहा। ॐ त्रिकालज्ञान संपनायै स्वाहा। ॐ त्रिवल्यै स्वाहा। ॐ त्रिलोचनायै स्वाहा। ॐ त्रिशक्त्यै स्वाहा। ॐ त्रिपुरायै स्वाहा। ॐ तुङ्गायै स्वाहा। ॐ तुरङ्गवदनायै स्वाहा। ॐ तिमिङ्गिलगिलायै

स्वाहा।।४००।। ॐ तीव्रायै स्वाहा। ॐ त्रिस्रोतायै स्वाहा। ॐ तामसादिन्यै स्वाहा। ॐ तन्त्रमंत्र विशेषज्ञायै स्वाहा। ॐ तनुमध्यायै स्वाहा। ॐ त्रिविष्टपायै स्वाहा। ॐ त्रिसन्ध्यायै स्वाहा। ॐ त्रिस्तन्यै स्वाहा। ॐ तोषासंस्थायै स्वाहा। ॐ तालप्रतापिन्यै स्वाहा। ॐ ताटंकिन्यै स्वाहा। ॐ तुषाराभायै स्वाहा। ॐ तुहिनाचलवासिन्यै स्वाहा। ॐ तन्तुजालसमायुक्तायै स्वाहा। ॐ तारहारावलिप्रियायै स्वाहा। ॐ तिलहोमः प्रियायै स्वाहा। ॐ तीर्थायै स्वाहा। ॐ तमालकुसुमाकृत्यै स्वाहा। ॐ तारकायै स्वाहा। ॐ त्रियुत्तायै स्वाहा। ॐ तन्व्यै स्वाहा। ॐ त्रिशंकुपरिवारितायै स्वाहा। ॐ तलोदर्यै स्वाहा। ॐ तिलाभूषायै स्वाहा। ॐ ताटङ्कप्रियवाहिन्यै स्वाहा।। ४२५।। ॐ त्रिजटायै स्वाहा। ॐ तित्तिर्यै स्वाहा। ॐ तृष्णायै स्वाहा। ॐ त्रिविधायै स्वाहा। ॐ तरुणाकृत्यै स्वाहा। ॐ तप्तकांचनसंकाशायै स्वाहा। ॐ तप्तकाञ्चन भूषणायै स्वाहा। ॐ त्रैयम्बकायै स्वाहा। ॐ त्रिवर्गायै स्वाहा। ॐ त्रिकालज्ञानदायिन्यै स्वाहा। ॐ तर्पणायै स्वाहा। ॐ तृप्तिदायै स्वाहा। ॐ तृप्तायै स्वाहा। ॐ तामस्यै स्वाहा। ॐ तुंबुरुस्तुतायै स्वाहा। ॐ ताक्ष्र्यस्थायै स्वाहा। ॐ त्रिगुणाकारायै स्वाहा।

ॐ त्रिभग्यै स्वाहा। ॐ तन्वल्लर्यै स्वाहा। ॐ थात्कार्यै स्वाहा। ॐ थारवायै स्वाहा। ॐ थान्तायै स्वाहा। ॐ दोहिन्यै स्वाहा। ॐ दीनवत्सलायै स्वाहा। ॐ दानवान्तकर्यै स्वाहा।। ४५०।। ॐ दुर्गायै स्वाहा। ॐ दुर्गासुरनिबर्हिण्यै स्वाहा। ॐ देवरित्यै स्वाहा। ॐ दिवारात्र्यै स्वाहा। ॐ द्रौपद्यै स्वाहा। ॐ दुन्दुभिस्वनायै स्वाहा। ॐ देवयान्यै स्वाहा। ॐ दुरावासायै स्वाहा। ॐ दारिद्रयोद्भेदिन्यै स्वाहा। ॐ दिवायै स्वाहा। ॐ दामोदरप्रियायै स्वाहा। ॐ दीप्तायै स्वाहा। ॐ दिग्वासायै स्वाहा। ॐ दिग्विमोहिन्यै स्वाहा। ॐ दण्डाकारण्यनिलयायै स्वाहा। ॐ दण्डिन्यै स्वाहा। ॐ देवपूजितायै स्वाहा। ॐ देववन्द्यायै स्वाहा। ॐ दिविषदार्यै स्वाहा। ॐ द्वेषिण्यै स्वाहा। ॐ दानवाकृतये स्वाहा। ॐ दीनानाथस्तुतायै स्वाहा। ॐ दीक्षायै स्वाहा। ॐ देवतास्वरूपिण्यै स्वाहा। ॐ धात्र्यै स्वाहा। ॐ ४७५।। धनुर्धरायै स्वाहा। ॐ धेनवे स्वाहा। ॐ धारिण्यै स्वाहा। ॐ धर्मचारिण्यै स्वाहा। ॐ धरंधरायै स्वाहा। ॐ धराधरायै स्वाहा। ॐ धनदायै स्वाहा। ॐ धान्यदोहिन्यै स्वाहा। ॐ धर्मशीलायै स्वाहा। ॐ धनाध्यक्षायै स्वाहा। ॐ धनुर्वेदविशारदायै स्वाहा। ॐ धृत्यै स्वाहा। ॐ धन्यायै

स्वाहा। ॐ धृतपदायै स्वाहा। ॐ धर्मराजप्रियायै स्वाहा। ॐ ध्रुवायै स्वाहा। ॐ धूमावत्यै स्वाहा। ॐ धूमकेश्यै स्वाहा। ॐ धर्मशास्त्रप्रकाशिन्यै स्वाहा। ॐ नन्दायै स्वाहा। ॐ नन्दप्रियायै स्वाहा। ॐ निद्रायै स्वाहा। ॐ ननुतायै स्वाहा। ॐ नन्दनात्मिकायै स्वाहा। ॐ नर्मदायै स्वाहा।।५००।। ॐ नलिन्यै स्वाहा। ॐ नीलायै स्वाहा। ॐ नीलकण्ठसमाश्रयायै स्वाहा। ॐ नारायणप्रियायै स्वाहा। ॐ नित्यायै स्वाहा। ॐ निर्मलायै स्वाहा। ॐ निगुर्णायै स्वाहा। ॐ निधये स्वाहा। ॐ निराधारायै स्वाहा। ॐ निरुपमायै स्वाहा। ॐ नित्यशुद्धायै स्वाहा। ॐ निरञ्जनायै स्वाहा। ॐ नादबिन्दुकलातीतायै स्वाहा। ॐ नादबिन्दु–कलात्मिकायै स्वाहा। ॐ नृसिंहिन्यै स्वाहा। ॐ नगधरायै स्वाहा। ॐ नृपनागविभूषितायै स्वाहा। ॐ नरक्लेशशमन्यै स्वाहा। ॐ नारायणपदोद्भवायै स्वाहा। ॐ निरवद्यायै स्वाहा। ॐ निराकारायै स्वाहा। ॐ नारदप्रियकारिण्यै स्वाहा। ॐ नानाज्योतिःसमाख्यातायै स्वाहा। ॐ निधिदायै स्वाहा। ॐ निर्मलात्मिकायै स्वाहा।।५२५।। ॐ नवसत्र धारायै स्वाहा। ॐ नीतयै स्वाहा। ॐ निरुपद्रवकारिण्यै स्वाहा। ॐ नन्दजायै स्वाहा। ॐ नवरत्नाढ्यायै स्वाहा। ॐ नैमिषा–

रण्यवासिन्यै स्वाहा। ॐ नवनीतप्रियायै स्वाहा। ॐ नार्यै स्वाहा। ॐ नीलजीमूतनिस्वनायै स्वाहा। ॐ निशेषिण्यै स्वाहा। ॐ नदी रुपायै स्वाहा। ॐ नीलग्रीवायै स्वाहा। ॐ निशेश्वर्यै स्वाहा। ॐ नामावल्यै स्वाहा। ॐ निशुंभघ्न्यै स्वाहा। ॐ नागलोक निवासिन्यै स्वाहा। ॐ नवजांबूनदप्रख्यायै स्वाहा। ॐ नागलोकाधि देवतायै स्वाहा। ॐ नूपुराक्रान्त–चरणायै स्वाहा। ॐ नरचित्तप्रमोदि न्यै स्वाहा। ॐ निमग्नारक्तनयनायै स्वाहा। ॐ निर्घातसमनिस्वनायै स्वाहा। ॐ नन्दनोद्यानिलयायै स्वाहा। ॐ निर्व्यूहोपरिचारिण्यै स्वाहा। ॐ पार्वत्यै स्वाहा।। ५५० ।। परमोदारायै स्वाहा। ॐ परब्रह्मात्मिकायै स्वाहा। ॐ परायै स्वाहा। ॐ पञ्चकोशविनिर्मुक्तायै स्वाहा। ॐ पञ्चपातकनाशिन्यै स्वाहा। ॐ परिचितविधानज्ञायै स्वाहा। ॐ पञ्चिकायै स्वाहा। ॐ पञ्चरूपिण्यै स्वाहा। ॐ पूर्णिमायै स्वाहा। ॐ परमायै स्वाहा। ॐ प्रीत्यै स्वाहा। ॐ परतेजः प्रकाशिन्यै स्वाहा। ॐ पुराण्यै स्वाहा। ॐ पौरुष्यै स्वाहा। ॐ पुण्यायै स्वाहा। ॐ पुण्डरीकनिभेक्षणायै स्वाहा। ॐ पातालतलनिर्मग्नायै स्वाहा। ॐ प्रीतायै स्वाहा। ॐ प्रीतिविवर्धिन्यै स्वाहा। ॐ पावन्यै स्वाहा। ॐ पादसहितायै स्वाहा। ॐ

पेशलायै स्वाहा। ॐ पवनाशिन्यै स्वाहा। ॐ प्रजापतये स्वाहा। ॐ परिश्रांतायै स्वाहा।। ५७५।। पर्वतस्तनमंण्डलायै स्वाहा। ॐ पद्मप्रियायै स्वाहा। ॐ पद्मसंस्थायै स्वाहा। ॐ पद्माक्ष्यै स्वाहा। ॐ पद्म संभवायै स्वाहा। ॐ पद्मपत्रायै स्वाहा। ॐ पद्मपदायै स्वाहा। ॐ पद्मिन्यै स्वाहा। ॐ प्रियभाषिण्यै स्वाहा। ॐ पशुपाशविनिर्मुहक्तायै स्वाहा। ॐ पुरंध्रयै स्वाहा। ॐ पुरवासिन्यै स्वाहा। ॐ पुष्कलायै स्वाहा। ॐ पुरुषायै स्वाहा। ॐ पर्वायै स्वाहा। ॐ पारिजातकुसुम प्रियायै स्वाहा। ॐ पतिव्रतायै स्वाहा। ॐ पवित्रांग्यै स्वाहा। ॐ पुष्पहासपरायणायै स्वाहा। ॐ प्रज्ञावतीसुतायै स्वाहा। ॐ पौत्र्यै स्वाहा। ॐ पुत्रपुज्यायै स्वाहा। ॐ पयस्विन्यै स्वाहा। ॐ पट्टिपाशधरायै स्वाहा। ॐ पङ्क्त्यै स्वाहा।। ६००।। पितृलोक प्रदायिन्यै स्वाहा। ॐ पुराण्यै स्वाहा। ॐ पुण्यशीलायै स्वाहा। ॐ प्रणतार्तिविनाशिन्यै स्वाहा। ॐ प्रद्युम्नजनन्यै स्वाहा। ॐ पुष्टायै स्वाहा। ॐ पितामहपरिग्रहायै स्वाहा। ॐ पुण्डरीकपुरावासायै स्वाहा। ॐ पुण्डरीकसमाननायै स्वाहा। ॐ पृथुजंघायै स्वाहा। ॐ पृथुभुजायै स्वाहा। ॐ पृथुपादायै स्वाहा। ॐ पृथूदर्यै स्वाहा। ॐ प्रवालशोभायै स्वाहा। ॐ

पिंगाक्ष्यै स्वाहा। ॐ पीतवाससे स्वाहा। ॐ प्रचापलायै स्वाहा। ॐ प्रसवायै स्वाहा। ॐ पुष्टिदायै स्वाहा। ॐ पुण्यायै स्वाहा। ॐ प्रतिष्ठायै स्वाहा। ॐ प्रणवागत्यै स्वाहा। ॐ पञ्चवर्णायै स्वाहा। ॐ पञ्चवाण्यै स्वाहा। ॐ पञ्चिकायै स्वाहा।। ६२५।। ॐ पञ्जरस्थितायै स्वाहा। ॐ परमायायै स्वाहा। ॐ परज्योतिषे स्वाहा। ॐ परप्रीतये स्वाहा। ॐ परागतये स्वाहा। ॐ पराकाष्ठायै स्वाहा। ॐ परेशान्यै स्वाहा। ॐ पावन्यै स्वाहा। ॐ पावकद्युतये स्वाहा। ॐ पुण्यभद्रायै स्वाहा। ॐ परिच्छेद्यायै स्वाहा। ॐ पुष्पहासायै स्वाहा। ॐ पृथूदर्यै स्वाहा। ॐ पीतांग्ये स्वाहा। ॐ पीतवसनायै स्वाहा। ॐ पीतशय्यायै स्वाहा। ॐ पिशाचिन्यै स्वाहा। ॐ पीतक्रियायै स्वाहा। ॐ पिशाचघ्न्यै स्वाहा। ॐ पाटलाक्ष्यै स्वाहा। ॐ पटुक्रियायै स्वाहा। ॐ पंचभक्षप्रियाचारायै स्वाहा। ॐ पूतनाप्राणघातिन्यै स्वाहा। ॐ पुंनागवनमध्यस्थायै स्वाहा। ॐ पुण्यतीर्थनिषेवितायै स्वाहा।। ६५०।। ॐ पञ्चाङ्ग्यै स्वाहा। ॐ पराशक्त्यै स्वाहा। ॐ परमाह्लादकारिण्यै स्वाहा। ॐ पुष्पकाण्डस्थितायै स्वाहा। ॐ पूषायै स्वाहा। ॐ पोषिताखिलविष्टपायै स्वाहा। ॐ पानप्रियायै स्वाहा। ॐ पञ्चशिखायै स्वाहा। ॐ

पन्नगोपरिशायिन्यै स्वाहा। ॐ पञ्चमात्रात्मिकायै स्वाहा। ॐ पृथ्व्यै स्वाहा। ॐ पथिकायै स्वाहा। ॐ पृथुदोहिन्यै स्वाहा। ॐ पुराणन्यायमीमांसायै स्वाहा। ॐ पाटल्यै स्वाहा। ॐ पुष्पगन्धिन्यै स्वाहा। ॐ पुण्यप्रजायै स्वाहा। ॐ परदात्र्यै स्वाहा। ॐ परमार्गैकगोचरायै स्वाहा। ॐ प्रवालशोभायै स्वाहा। ॐ पूर्णाशायै स्वाहा। ॐ प्रणवायै स्वाहा। ॐ पल्लवोदर्यै स्वाहा। ॐ फलिन्यै स्वाहा। ॐ फलदायै स्वाहा।। ६७५।। ॐ फल्गवे स्वाहा। ॐ फूत्कार्यै स्वाहा। ॐ फलकाकृत्यै स्वाहा। ॐ फणीन्द्रभोगशयनायै स्वाहा। ॐ फणिमण्डलमण्डितायै स्वाहा। ॐ बालबालायै स्वाहा। ॐ बहुमतायै स्वाहा। ॐ बालातपनिभांशुकायै स्वाहा। ॐ बलभद्रप्रियायै स्वाहा। ॐ बन्द्यायै स्वाहा। ॐ वड़वायै स्वाहा। ॐ बुद्धिसंस्तुतायै स्वाहा। ॐ बन्दिदेव्यै स्वाहा। ॐ बिलवत्यै स्वाहा। ॐ बडिशघ्न्यै स्वाहा। ॐ बलिप्रियायै स्वाहा। ॐ बान्धव्यै स्वाहा। ॐ बोतितायै स्वाहा। ॐ बुद्ध्यै स्वाहा। ॐ बन्धूककुसुमप्रियायै स्वाहा। ॐ बालभानुप्रभाकारायै स्वाहा। ॐ ब्राह्मयै स्वाहा। ॐ ब्राह्मणदेवतायै स्वाहा। ॐ बृहस्पतिस्तुतायै स्वाहा। ॐ वृन्दायै स्वाहा।। ७००।। ॐ वृन्दावन विहारिण्यै स्वाहा। ॐ बालाकिन्यै स्वाहा। ॐ

बिलाहारायै स्वाहा। ॐ बिलवासायै स्वाहा। ॐ बहूदकायै स्वाहा। ॐ बहुनेत्रायै स्वाहा। ॐ बहुपदायै स्वाहा। ॐ बहुकर्णावतंसिकायै स्वाहा। ॐ बहुबाहुयुतायै स्वाहा। ॐ बीज रुपिण्यै स्वाहा। ॐ बहुरुपिण्यै स्वाहा। ॐ बिन्दुनादकलातीतायै स्वाहा। ॐ बिन्दुनादस्वरुपिण्यै स्वाहा। ॐ बद्धगोधां-गुलित्राणायै स्वाहा। ॐ बदर्याश्रमवासिन्यै स्वाहा। ॐ वृन्दारकायै स्वाहा। ॐ बृहत्स्कन्धायै स्वाहा। ॐ बृहतीबाणपातिन्यै स्वाहा। ॐ वृन्दाध्यक्षायै स्वाहा। ॐ बहुनुतायै स्वाहा। ॐ वनितायै स्वाहा। ॐ बहुविक्रमायै स्वाहा। ॐ वद्धपद्मामासनासीनायै स्वाहा। ॐ बिल्वपत्रतलस्थितायै स्वाहा। ॐ बोधिद्रुमनि-जावासायै स्वाहा।७२५।। ॐ बडिस्थायै स्वाहा। ॐ बिन्दुदर्पणायै स्वाहा। ॐ बालायै स्वाहा। ॐ बाणासनवत्यै स्वाहा। ॐ वडवानलवेगिन्यै स्वाहा। ॐ ब्रह्माण्डबहिरन्तः स्थायै स्वाहा। ॐ ब्रह्मकंकणसूत्रिण्यै स्वाहा। ॐ भवान्यै स्वाहा। ॐ भीषणवत्यै स्वाहा। ॐ भाविन्यै स्वाहा। ॐ भयहारिण्यै स्वाहा। ॐ भद्रकाल्यै स्वाहा। ॐ भुजंगाक्ष्यै स्वाहा। ॐ भारत्यै स्वाहा। ॐ भारताशयायै स्वाहा। ॐ भैरव्यै स्वाहा। ॐ भीषणाकारायै स्वाहा। ॐ भूतिदायै

स्वाहा। ॐ भूतिमालिन्यै स्वाहा। ॐ भामिन्यै स्वाहा। ॐ भोगानिरतायै स्वाहा। ॐ भद्रदायै स्वाहा। ॐ भूरिविक्रमायै स्वाहा। ॐ भूतवासायै स्वाहा। ॐ भृगुलतायै स्वाहा।। ७५०।। ॐ भार्गव्यै स्वाहा। ॐ भूसुरार्चितायै स्वाहा। ॐ भागीरथ्यै स्वाहा। ॐ भोगवत्यै स्वाहा। ॐ भवनस्थायै स्वाहा। ॐ भिषग्वरायै स्वाहा। ॐ भामिन्यै स्वाहा। ॐ भोगिन्यै स्वाहा। ॐ भाषायै स्वाहा। ॐ भवान्यै स्वाहा। ॐ भूरिदक्षिणायै स्वाहा। ॐ भर्गात्मिकायै स्वाहा। ॐ भीमवत्यै स्वाहा। ॐ भवबन्धविमोचिन्यै स्वाहा। ॐ भजनीयायै स्वाहा। ॐ भूतधात्रीरंजितायै स्वाहा। ॐ भुवनेश्वर्यै स्वाहा। ॐ भुजङ्गवलयायै स्वाहा। ॐ भीमायै स्वाहा। ॐ भेरुण्डायै स्वाहा। ॐ भागधेयिन्यै स्वाहा। ॐ मात्रे स्वाहा। ॐ मायायै स्वाहा। ॐ मधुमत्यै स्वाहा। ॐ मधुजिह्वायै स्वाहा।।७७५।। ॐ मधुप्रियायै स्वाहा। ॐ महादेव्यै स्वाहा। ॐ महाभागयै स्वाहा। ॐ मालिन्यै स्वाहा। ॐ मींनलोचनायै स्वाहा। ॐ मायातीतायै स्वाहा। ॐ मधुमत्यै स्वाहा। ॐ मधुमांसायै स्वाहा। ॐ मधुद्रवायै स्वाहा। ॐ मानव्यै स्वाहा। ॐ मधुसंभूतायै स्वाहा। ॐ मिथिलापुरवासिन्यै स्वाहा। ॐ मधुकैटर्भसंहर्त्र्यै स्वाहा। ॐ मेदिन्यै स्वाहा। ॐ

मेघमालिन्यै स्वाहा। ॐ मन्दौदर्यै स्वाहा। ॐ महामायायै स्वाहा। ॐ मैथिल्यै स्वाहा। ॐ मसृणप्रियायै स्वाहा। ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा। ॐ महाकाल्यै स्वाहा। ॐ महाकन्यायै स्वाहा। ॐ महेश्वर्यै स्वाहा। ॐ माहेन्द्रयै स्वाहा। ॐ मेरुतनयायै स्वाहा।।८००।। ॐ मन्दारकुसुमर्चितायै स्वाहा। ॐ मञ्जुमञ्जीरचरणायै स्वाहा। ॐ मोक्षदायै स्वाहा। ॐ मञ्जुभाषिण्यै स्वाहा। ॐ मधुर द्राविण्यै स्वाहा। ॐ मुद्रायै स्वाहा। ॐ मलयायै स्वाहा। ॐ मलयान्वितायै स्वाहा। ॐ मेधायै स्वाहा। ॐ मरकतश्यामायै स्वाहा। ॐ मागध्यै स्वाहा। ॐ मेनकात्मजायै स्वाहा। ॐ महामार्यै स्वाहा। ॐ महावीरायै स्वाहा। ॐ महाश्यामायै स्वाहा। ॐ मनुस्तुतायै स्वाहा। ॐ मातृकायै स्वाहा। ॐ मिहिराभासायै स्वाहा। ॐ मुकुन्दपदविक्रमायै स्वाहा। ॐ मूलाधारस्थितायै स्वाहा। ॐ मुग्धायै स्वाहा। ॐ मणिपूरकवासिन्यै स्वाहा। ॐ मृगाक्ष्यै स्वाहा। ॐ महिषारूढायै स्वाहा। ॐ महिषासुरमर्दिन्यै स्वाहा।।८२५।। ॐ योगासनायै स्वाहा। ॐ योगगम्यायै स्वाहा। ॐ योगायै स्वाहा। ॐ यौवनकाश्रयायै स्वाहा। ॐ यौवन्यै स्वाहा। ॐ युद्धमध्यस्थायै स्वाहा। ॐ यमुनायै स्वाहा। ॐ युगधारिण्यै स्वाहा। ॐ यक्षिण्यै स्वाहा। ॐ

योगयुक्तायै स्वाहा। ॐ यक्षराजप्रसूतिन्यै स्वाहा। ॐ यात्रायै स्वाहा। ॐ यानविधानज्ञायै स्वाहा। ॐ यदुवंशसमुद्भवायै स्वाहा। ॐ यकारादिहकारांतायै स्वाहा। ॐ याजुष्यै स्वाहा। ॐ यज्ञरुपिण्यै स्वाहा। ॐ यामिन्यै स्वाहा। ॐ योगनिरतायै स्वाहा। ॐ यातुधानभयंकर्यै स्वाहा। ॐ रुक्मिण्यै स्वाहा। ॐ रमण्यै स्वाहा। ॐ रामायै स्वाहा। ॐ रेवत्यै स्वाहा। ॐ रेणुकायै स्वाहा।। ८५०।। ॐ रत्यै स्वाहा। ॐ रौद्रयै स्वाहा। ॐ रौद्रप्रियाकारायै स्वाहा। ॐ राममात्रे स्वाहा। ॐ रतिप्रियायै स्वाहा। ॐ रोहिण्यै स्वाहा। ॐ राज्यदायै स्वाहा। ॐ रेवायै स्वाहा। ॐ रमायै स्वाहा। ॐ राजीवलोचनायै स्वाहा। ॐ राकेश्यै स्वाहा। ॐ रूपसम्पनायै स्वाहा। ॐ रत्नसिंहासनस्थितायै स्वाहा। ॐ रक्तमाल्याम्बरधरायै स्वाहा। ॐ रक्तगन्धानुलेपनायै स्वाहा। ॐ राजहंससमारुढ़ायै स्वाहा। ॐ रंभायै स्वाहा। ॐ रक्तबलिप्रियायै स्वाहा। ॐ रमणीय युगाधारायै स्वाहा। ॐ राजिताखिल–भूतलायै स्वाहा। ॐ रुरुचर्मपरीधानायै स्वाहा। ॐ रथिन्यै स्वाहा। ॐ रत्नमालिकायै स्वाहा। ॐ रोगेश्यै स्वाहा। ॐ रोगशमन्यै स्वाहा।। ८७५।। ॐ राविण्यै स्वाहा। ॐ रोमहर्षिण्यै स्वाहा। ॐ रामचंद्रपदाक्रांतायै

स्वाहा। ॐ रावणच्छेदकारिण्यै स्वाहा। ॐ रत्नवस्त्रपरिच्छन्नायै स्वाहा। ॐ रथस्थायै स्वाहा। ॐ रुक्मभूषणायै स्वाहा। ॐ लज्जाधिदेवतायै स्वाहा। ॐ लोलायै स्वाहा। ॐ ललितायै स्वाहा। ॐ लिङ्गधारिण्यै स्वाहा। ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा। ॐ लोलायै स्वाहा। ॐ लुप्त विषायै स्वाहा। ॐ लोकिन्यै स्वाहा। ॐ लोकविश्रुतायै स्वाहा। ॐ लज्जायै स्वाहा। ॐ लंबोदरीदैव्यै स्वाहा। ॐ ललनायै स्वाहा। ॐ लोकधारिण्यै स्वाहा। ॐ वरदायै स्वाहा। ॐ वन्दितायै स्वाहा। ॐ विद्यायै स्वाहा। ॐ वैष्णव्यै स्वाहा। ॐ विमलाकृत्यै स्वाहा।।६००।। ॐ वाराह्यै स्वाहा। ॐ विरजायै स्वाहा। ॐ वर्षायै स्वाहा। ॐ वरलक्ष्म्यै स्वाहा। ॐ विलासिन्यै स्वाहा। ॐ विनतायै स्वाहा। ॐ व्योममध्यस्थायै स्वाहा। ॐ वारिजासनसंस्थितायै स्वाहा। ॐ वारुण्यै स्वाहा। ॐ वेणुसंभूतायै स्वाहा। ॐ वीतिहोत्रायै स्वाहा। ॐ विरूपिण्यै स्वाहा। ॐ वायुमण्डलमध्यस्थायै स्वाहा। ॐ विष्णुरूपायै स्वाहा। ॐ विधिप्रियायै स्वाहा। ॐ विष्णुपत्न्यै स्वाहा। ॐ विष्णुमत्यै स्वाहा। ॐ विशालाक्ष्यै स्वाहा। ॐ वसुन्धरायै स्वाहा। ॐ वामदेवप्रियायै स्वाहा। ॐ वेलायै स्वाहा। ॐ वज्रिण्यै स्वाहा। ॐ वसुदोहिन्यै स्वाहा। ॐ

वेदाक्षरपरीताङ्ग्यै स्वाहा। ॐ वाजपेयफलप्रदायै स्वाहा।। ६२५।। ॐ वासव्यै स्वाहा। ॐ वामजनन्यै स्वाहा। ॐ बैकुण्ठनिलयायै स्वाहा। ॐ वरायै स्वाहा। ॐ व्यासप्रियायै स्वाहा। ॐ वर्मधरायै स्वाहा। ॐ बाल्मीकिपरिसेवितायै स्वाहा। ॐ शाकम्भर्यै स्वाहा। ॐ शिवायै स्वाहा। ॐ शान्तायै स्वाहा। ॐ शारदायै स्वाहा। ॐ शरणागतये स्वाहा। ॐ शातोदर्यै स्वाहा। ॐ शुभाचारायै स्वाहा। ॐ शुम्भासुरविमर्दिन्यै स्वाहा। ॐ शोभावत्यै स्वाहा। ॐ शिवाकारायै स्वाहा। ॐ शंकरार्ध शरीरिण्यै स्वाहा। ॐ शोणायै स्वाहा। ॐ शुभाशयायै स्वाहा। ॐ शुभ्रायै स्वाहा। ॐ शिरःसधानकारिण्यै स्वाहा। ॐ शरावत्यै स्वाहा। ॐ शरानन्दायै स्वाहा। ॐ शरज्ज्योत्स्नायै स्वाहा।।६५०।। ॐ शुभाननायै स्वाहा। ॐ शरभायै स्वाहा। ॐ शूलिन्यै स्वाहा। ॐ शुद्धायै स्वाहा। ॐ शबर्यै स्वाहा। ॐ शुकवाहनायै स्वाहा। ॐ श्रीमत्यै स्वाहा। ॐ श्रीधरानन्दायै स्वाहा। ॐ श्रवणानन्ददायिन्यै स्वाहा। ॐ शर्वाण्यै स्वाहा। ॐ शर्वरीवन्द्यायै स्वाहा। ॐ षड्भाषायै स्वाहा। ॐ षड्ऋतुप्रियायै स्वाहा। ॐ षडाधारस्थितादेव्यै स्वाहा। ॐ षण्मुखप्रियकारिण्यै स्वाहा। ॐ षडङ्गरूपसुमति–सुरासुरनमस्कृतायै स्वाहा।

ॐ सरस्वत्यै स्वाहा। ॐ सदाधारायै स्वाहा। ॐ सर्वमङ्गलकारिण्यै स्वाहा। ॐ सामगानप्रियायै स्वाहा। ॐ सूक्ष्मायै स्वाहा। ॐ सावित्र्यै स्वाहा। ॐ सामसम्भवायै स्वाहा। ॐ सर्वावासायै स्वाहा। ॐ सदानन्दायै स्वाहा।। ६७५।। ॐ सुस्तन्यै स्वाहा। ॐ सागराम्बरायै स्वाहा। ॐ सर्वैश्वर्यप्रियायै स्वाहा। ॐ सिद्ध्यै स्वाहा। ॐ साधुबन्धुपराक्रमायै स्वाहा। ॐ सप्तर्षिमण्डलगतायै स्वाहा। ॐ सोममण्डलवासिन्यै स्वाहा। ॐ सर्वज्ञायै स्वाहा। ॐ सान्द्रकरुणायै स्वाहा। ॐ समानाधिकवर्जितायै स्वाहा। ॐ सर्वोत्तुङ्गायै स्वाहा। ॐ संगहीनायै स्वाहा। ॐ सद्गुणायै स्वाहा। ॐ सकलेष्टदायै स्वाहा। ॐ सरघायै स्वाहा। ॐ सूर्यतनयायै स्वाहा। ॐ सुकेश्यै स्वाहा। ॐ सोमसंहत्यै स्वाहा। ॐ हिरण्यवर्णायै हरिण्यै स्वाहा। ह्रींकार्यै स्वाहा। ॐ हंसवाहिन्यै स्वाहा। ॐ क्षौमवस्त्रपरीताङ्ग्यै स्वाहा। ॐ क्षीराब्धितन्यायै स्वाहा। ॐ क्षमायै स्वाहा।। १०००।। ॐ गायत्र्यै स्वाहा। ॐ सावित्र्यै स्वाहा। ॐ पार्वत्यै स्वाहा। ॐ सरस्वत्यै स्वाहा। ॐ वेदगर्भायै स्वाहा। ॐ वरारोहायै स्वाहा। ॐ श्री गायत्र्यै स्वाहा। ॐ पराम्बिकायै स्वाहा।।१००८।।

अब पुनः हृदयादि न्यास पूर्ववत कर लेवे।

।।इति गायत्री सहस्रनाम हवनम्।।

॥ अथ रुद्रयाग न्यासविधानम्॥

'ध्यानम्'

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधर मुकुटं पञ्चवक्त्रंत्रिनेत्रं।
शूलं बज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षभागे वहन्तम्।।
नागंपाशं च घंटां डमरुकसहितं सांकुशं वामभागे।
नाना लंकारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि।।
ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।
ॐ श्री साम्ब सदाशिवाय नमः।।

॥ अथ न्यास होमः॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोतऽइषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।। ॐ स्वाहा।।१।। वाम करे।

ॐ यातेरुद्र शिवा तनूरधोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।। ॐ स्वाहा।।२।।
दक्षिण करे।।

ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे। शिवांगिरित्रतां कुरु मा हि ँ सीः पुरुषं जगत्।। ॐ स्वाहा।।३।।
वामपादे।।

ॐ शिवेनवचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ँ सुमना ऽअसत्।। ॐ स्वाहा।।४।।
दक्षिण पादे।।

ॐ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव।। ॐ स्वाहा।।५।। वामजानौ।।

ॐ असौ यस्ताम्रो ऽअरुण ऽउत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैन ᳪ रुद्रा ऽ अभितो दिक्षुश्रिताः सहस्रशो ऽवैषा ᳪ हेड ऽ ईमहे।। ॐ स्वाहा।।६।। दक्षिण जानौ।।

ॐ असौ यो ऽ वसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा ऽ अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः।। ॐ स्वाहा।।७।। वामकट्याम्।।

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये ऽ अस्य सत्वानो ऽ हं तेभ्यो ऽ करं नमः।। ॐ स्वाहा।।८।। दक्षिण कट्याम्।।

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त ऽइषवःऽपरा ता भगवोवप।।ॐ स्वाहा।।९।। नाभौ।।

ॐ विज्यं धनुः कपर्द्दिनो विशल्योवाणवाँ२ऽउत। अनेशन्नस्य या ऽइषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः।। ॐ स्वाहा।।१०।। हृदये।।

ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वत—स्त्वमयक्ष्मया परिभुज।। ॐ स्वाहा।।११।। वाम कुक्षौ।।

ॐ परिते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथोयऽ

इषुधिस्तवारे ऽअस्मन्निधेहि तम्।। ॐ स्वाहा।।१२।।
दक्षिण कुक्षौ।।

ॐ अवतत्य धनुष्ट्व ꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।। ॐ स्वाहा।। १३।। कण्ठे।।

ॐ नमस्त ऽ आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो वाहुभ्यां तव धन्वने।। ॐ स्वाहा।। १४।।
मुखे।।

ॐ मां नो महान्तमुत मा नो ऽअर्भकं मा नऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोतं मातरं मा नः प्रियास्तन्नो रुद्र रीरिषः।। ॐ स्वाहा।।१५।।
अक्षणो।।

ॐ मानस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मानो ऽ अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।। ॐ स्वाहा।। १६।।
मूर्ध्नि।।

।। अथ षडङ्गन्यास।।

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टंयज्ञ ँ समिमन्दधातु। विश्वे देवास ऽ इहमादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ।। ॐ हृदयाय नमः।।१।।

ॐ अवोद्ध्यग्निः समिधाजनानाम्प्रतिधेनुमिवाय–तीमुषासम्। यह्वाऽइव प्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रतेनाकमच्छ।। ॐ शिरसे स्वाहा।।२।।

ॐ मूर्द्धानन्दिवो ऽअरतिम्पृथिव्यावैश्वानरमृत ऽ आजातमग्निम्। कवि ँ सम्म्राजमतिथिञ्जनाना–मासन्नापात्रञ्जन यन्तदेवाः।। ॐ शिखायैवषट्।।३।।

ॐ मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामि सोमस्त्वाराजामृतेना–नुवस्ताम्। उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वानु देवामदन्तु।। ॐ कवचाय हुम्।।४।।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतोमुखोविश्वतोबाहुरुतविश्वतस्पात्। सम्बाहुब्भ्यान्धमतिसम्पतत्त्रैर्द्यावाभूमिजनयन्देव ऽ एकः।। ॐ नेत्रत्रयायवौषट्।।५।।

ॐ मानस्तोकेतनयेमानऽ आयुषिमानो गोषुमानो ऽअश्वेषुरीरिषः। मानोव्वीरान् रुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वाहवामहे।। ॐ अस्त्राय फट्।।६।।

॥ अथ रुद्रयाग॥

अथ प्रथमोऽध्यायः

(पाठ सुविधार्थ पूर्ण रुद्राष्टाध्यायी सहित)

ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणांत्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।। ॐ स्वाहा।।१।।

(ॐ अम्बे ऽ अम्बिके ऽ म्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपीलवासिनीम्।। ॐ स्वाहा।।) यहाँ से पाठमात्र–ॐ गायत्रीत्रिष्टुवृजगत्य–नुष्टुप्पङ्क्त्या सह। बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तु त्वा।।२।। ॐ द्विपदा याश्चतुष्पदात्रिपदा याश्च षट्पदाः।। विच्छन्दा याश्च सच्छन्दाः सूचीभिः शम्यन्तु त्वा।।३।। ॐ सहस्तोमाः सहछन्दसऽ आवृतः सहप्रमाऽ ऋषयः सप्तदैव्याः। पूर्व्वेषां पंथा मनुदृश्यधीरा ऽअन्वालेभिरे रत्थ्योनरस्मिन्।।४।। पुनः यहाँ, से हवन शुरु करे–

ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्ग मंज्योतिषां ज्जोतिरेकन्तन्मे मनः शिवसङ्कल्प–

मस्तु।। ॐ स्वाहा।। ५।। ॐ येन कर्माण्य पशो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्तिव्विदथेषुधीराः। यदपूर्व्व–यक्षमन्तः प्रजानान्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। ॐ स्वाहा।।६।। यत्प्रज्ञानमुतचेतो– धृतिश्चयज्ज्योति–रन्तरमृतम्प्रजासु। यस्मान्नऽऋतेकिञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। ॐ स्वाहा।।७।। ॐ येनेदं भूतम्भुवनम्भविष्यत्परिगृही तममृतेन सर्व्वम्। येन यज्ञस्तायतेसप्तहोता तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। ॐ स्वाहा।।८।। ॐ यस्मिन्नृचः सामयजू ᳪ षियस्मिन्प्रतिष्ठितारथनाभाविवाराः। यस्मिँश्चित ᳪ सर्व्वमोतम्प्रजानान्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। ॐ स्वाहा।।६।। ॐ सुषारथिरश्वानिवयन्मनुष्यान्नेनीयते–भीशुभिर्व्वाजिन ऽइव। हृत्प्रतिष्ठंयदजिरञ्जविष्ठन्तन्में मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।। ॐ स्वाहा।।१०।। इति प्रथमोऽध्याय।।१।।

अथ द्वितीयऽध्याय

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। स भूमि ꣳ सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।। ॐ स्वाहा।।१।। ॐ पुरुषऽएवेद ꣳ सर्वं यद्‌भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।। ॐ स्वाहा।।२।। ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।। ॐ स्वाहा।।३।। ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा–भवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने ऽअभि।। ॐ स्वाहा।।४।। ततो विराडजायतविराजोऽअधि पूरुषः। सजातो ऽअत्यरिच्यत पश्चाद्‌भूमि मथोपुरः।। ॐ स्वाहा।।५।। तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।। ॐ स्वाहा।।६।। ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दा ꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्त–स्मादजायत ।। ॐ स्वाहा।।७।। ॐ तस्मादश्वा ऽ अजायन्तयेके चोभयादतः। गावो हजज्ञिरे तस्मात्त–स्माज्जाता ऽ अजावयः।। ॐ स्वाहा।।८।। ॐ तंजज्ञं वर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा ऽ अयजन्त साध्याऽऋषयश्च ये ।। ॐ स्वाहा।।९।। ॐ यत्पुरुषं

व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा ऽ उच्येते ।। ॐ स्वाहा।।१०।। ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्यः कृतः। उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां ँ शूद्रो ऽ अजायत।। ॐ स्वाहा।।११।। ॐ चन्द्रमां मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो ऽ अजायत्। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।। ॐ स्वाहा।।१२।। ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ऽ अकल्पयन्।। ॐ स्वाहा।।१३।। ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः।। ॐ स्वाहा।।१४।। ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना ऽ अवध्नन् पुरुषं पशुम् ।। ॐ स्वाहा।।१५।। ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः।। ॐ स्वाहा।।१६।।

पुनः पाठ मात्रम्–

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे।।१७।। वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमा–दित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति

नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।१८।। ॐ प्रजापतिश्चरति गर्भेऽ अन्तरजायमानो बहुधा वि जायते। तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन्ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा।।१९।। ॐ योदेवेभ्य ऽ आतपति यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये।।२०।। ॐ रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा ऽअग्रे तदब्रुवन्। यस्त्यैवं ब्राह्मणो विद्यातस्य देवा ऽअसन्वशे।।२१।। ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पन्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णनिषाणामुं मऽइषाण सर्वलोकं मऽइषाण ।।

इति द्वितीयोध्ऽयाय।।२।।

अथ तृतीयोऽध्यायः

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोऽनिमिष ऽएकबीरः शत ँ सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः ।। ॐ स्वाहा।।१।।

ॐ संक्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्चवनेन घृष्णुना। तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा ।। ॐ स्वाहा।।२।।

ॐ स इषुहस्तेः स निषङ्गिभिर्वशी स ँ स्त्रष्टा स युध ऽइन्द्रोगणेन। स ँ सृष्टजित् सोमपा बाहुशर्ध्युग्रधन्वा

प्रतिहिताभिरस्ता ।। ॐ स्वाहा।।३।।
ॐ बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहा मित्राँ२ ऽअपवाधमानः। प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेद्ध्यविता रथानाम् ।। ॐ स्वाहा।।४।।
बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमानऽ उग्रः। अभिवीरो ऽ अभिसत्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमातिष्ठ गोवित् ।। ॐ स्वाहा।।५।।
ॐ गोत्रभिदं गोविदं बज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा। इम ँ सजाता ऽअनु वीरयध्वमिन्द्र ँ सरवायो ऽ अनु स ँ रभध्वम् ।। ॐ स्वाहा।।६।।
ॐ अभि गोत्राणि सहसा गाहमानो ऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्र। दुश्चवनः पृतनाषाडयुध्योऽस्माक ँ सेना अवतु प्र युत्सु ।। ॐ स्वाहा।।७।।
ॐ इन्द्र ऽ आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽ एतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ।। ॐ स्वाहा।।८।।
ॐ इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ ऽआदित्यानां मरुता ँ शर्द्ध उग्रम्। महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात् ।। ॐ स्वाहा।।९।।
ॐ उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्वनां मामकानां मना ँ सि। उद्वृत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतां

यन्तु घोषाः ।। ॐ स्वाहा।।१०।।
ॐ अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या ऽ इषवस्ता जयन्तु। अस्माकं वीरा ऽ उत्तरे भवन्त्वस्माँ २ ऽ उ देवा ऽ अवताहवेषु।। ॐ स्वाहा।।११।।
ॐ अमीषां चितं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि। अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम्।। ।। ॐ स्वाहा।।१२।। पुनः यहाँ से पाठ मात्र–
ॐ अवसृष्टा परापत शरव्ये ब्रह्मस ཾ शिते। गच्छा–मित्रान् प्रपद्यस्व मामिषां कञ्चनोच्छिषः।।१३।।
ॐ प्रेताजयता नर ऽ इन्द्रो वः शर्म्म यच्वतु। उग्रा वः सन्तु बाहवो ऽना. धृष्या यथासथ ।।१४।।
ॐ असौ या सेना मरुतः परेषामभ्यैति नऽ ओजसा स्पर्द्धमाना। तां गूहत तमसापव्रतेन यथामी अन्यो ऽ अन्यन्न जानन्।।१५।।
ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखाऽइव। तन्न ऽ इन्द्रोबृहस्पतिरदितिः शर्म्म यच्वतु विश्वाहा शर्म्म यच्छतु।।१६।। मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्। उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवा मदन्तु।।१७।।

इति तृतीयोऽध्याय।।३।।

पुनः हवन यहाँ से प्रारम्भ करे–

अथ चतुर्थोऽध्याय

ॐ विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्द्दधद्यज्ञपतावविति–
हुतम्। वातजूतो यो ऽ अभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष
पुरुधा वि राजति ।। ॐ स्वाहा।।१।।

ॐ उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्य्यम्।। ॐ स्वाहा।।२।।

ॐ येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ२ऽ अनु।
त्वं वरुण पश्यसि।। ॐ स्वाहा।।३।।

दैव्यावध्वर्यू ऽ आ गत ꣳ रथेन सूर्यत्वचा। मध्वा यज्ञ
ꣳसमञ्जाथे। तं प्रत्कनथाऽयं व्वेनश्चित्रं देवानाम्।।
ॐ स्वाहा।।४।।

ॐ तं प्रत्क्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषद
ꣳ स्वर्विदम्। प्रतीचीनं वृजनं दोहसे धुनिमाशु
जयन्तमनु यासुवर्द्धसे।। ॐ स्वाहा।।५।।

ॐ अयंवेनश्चोदयत् पृश्निगर्ब्भा ज्योतिर्जरायू रजसो
विमाने। इममपा ꣳ सङ्गमे सूर्य्यस्य शिशुं न विप्रा
मतिभीरिहन्ति।। ॐ स्वाहा।।६।।

ॐ चित्रं देवाना मुदगादिनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः
आप्रा द्यावापृथिवी ऽ अन्तरिक्ष ꣳ सूर्य्य ऽ आत्मा

जगत स्तस्थुषश्च ।। ॐ स्वाहा।।७।।
ॐ आनऽ इडाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव ऽ एतु। अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा ।। ॐ स्वाहा।।८।।
ॐ यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा ऽ अभि सूर्य्य। सर्वन्तदिन्द्र ते वशे।। ॐ स्वाहा।।६।।
ॐ तरिणविश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य्य। विश्वमा भासि रोचनम् ।। ॐ स्वाहा।।१०।।
ॐ तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततं सं जभार। यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै।। ॐ स्वाहा।।११।।
ॐ तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्य्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे। अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः संभरन्ति।। ॐ स्वाहा।।१२।। वण्महाँ२ऽअसि सूर्य्य वडादित्य महाँ२ऽअसि। महस्ते सतो महिमा पनस्यते ऽद्धा देव महाँ २ऽअसि ।। ॐ स्वाहा।।१३।। बट् सूर्य्य श्रवसा महाँ २ऽ असि सत्रा देव महाँ २ऽ असि। मह्वा देवानामसुर्य्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम्।। ॐ स्वाहा।।१४।। ॐ श्रायन्त ऽ इव सूर्य्य विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत। वसूनि जाते जनमान ऽ ओजसा प्रति भागं न दीधिम् ।। ॐ स्वाहा।।१५।। ॐ अद्या

देवा ऽउदिता सूर्य्यस्य निरꣳहसः पिपृता निरवद्यात्। तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी ऽ उत द्यौः ।। ॐ स्वाहा ।।१६।। ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो यति भुवनानि पश्यन् ।। ॐ स्वाहा ।।१७।।

इति चतुर्थोऽध्यायः ।।४।।

।।अथ पञ्चमोऽध्यायः।।

।। ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः।।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्न्यव ऽउतो तऽ इषवे नमः।
वाहुभ्यांमुत ते नमः।। ॐ स्वाहा।।१।।

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।। ॐ स्वाहा।।२।।

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते व्विभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरु मा हि ꣳ सीः पुरुषं जगत् ।। ॐ स्वाहा।।३।।

ॐ शिवेन व्वचसा त्त्वाँ गिरिशाच्छा व्वदामसि। यथा नः सर्व्वमिज्जगद यक्ष्य ꣳ सुमना ऽअसत् ।। ॐ स्वाहा।।४।।

ॐ अध्यवोचदवित्का प्रथमोदैव्योभिषक्। अहींश्च

सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च यातु धान्यो ऽ धराचीः परा सुव ।। ॐ स्वाहा।।५।।

ॐ असौ यस्ताम्रोऽ अरुण ऽ उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैन ᳪ रुद्रा ऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवेषा ᳪ हेड ईमहे।। ॐ स्वाहा।।६।।

ॐ असौ यो ऽवसर्प्पति नीलग्रीवो व्विलोहितः। उतैनङ्गोपा ऽ अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः।। ॐ स्वाहा।।७।।

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये ऽ अस्य सत्वानो ऽ हन्तेब्भ्यो ऽकरन्नमः।। ॐ स्वाहा।।८।।

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्क्न्योर्ज्ज्यामि। याश्च ते हस्त ऽ इषवः परा ता भगवो व्वप।। ॐ स्वाहा।।९।।

ॐ विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्योबाणवाँ२ऽ उत। अनेशन्नस्य या ऽ इषव ऽ आभुरस्य निषङ्गधिः ।। ॐ स्वाहा।।१०।।

ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुजः।। ॐ स्वाहा।।११।।

ॐ परिते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो यऽ इषुधिस्तवारे ऽअस्मन्निधेहि तम्।। ॐ स्वाहा।।१२।।

ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्व ँ सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ।। ॐ स्वाहा।।१३।।

ॐ नमस्त ऽ आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाब्भ्या मुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्न्वने ।। ॐ स्वाहा।।१४।।

ॐ मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्ब्भकं मा न ऽउक्षन्तमुत मा न ऽ उक्षितम्। मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्प्रियास्तन्न्वो रुद्ररीरिषः ।। ॐ स्वाहा।।१५।।

ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि मा नो गोषु मा नो ऽ अश्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।। ॐ स्वाहा।।१६।।

ॐ नमो हिरण्ण्यवाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्चपतये नमः।। ॐ स्वाहा।।१७।। ॐ नमो वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः पशूनाम्पतये नमः।। ॐ स्वाहा।।१८।। ॐ नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमः।। ॐ स्वाहा।।१६।। ॐ नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्ट्ठानाम्पतये नमः।। ॐ स्वाहा।।२०।। ॐ नमो बब्भ्लुशाय व्याधिनेन्नानाम्पतये नमः।। स्वाहा।।२१।। ॐ नमो भवस्य हेत्त्यै जगताम्पतये नमः।। ॐ स्वाहा।।२२।। ॐ नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमः।। ॐ स्वाहा।।२३।। ॐ नमः सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः।।

ॐ स्वाहा।।२४।। ॐ नमो रोहिताय स्त्थपतये वृक्षाणाम्यपतये नमः।। ॐ स्वाहा।।२५।। ॐ नमो भुवन्तये व्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमः।। ॐ स्वाहा।।२६।। ॐ नमो मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमः।। ॐ स्वाहा।।२७।। ॐ नमऽउच्चैर्घोषायाक्क्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः।। ॐ स्वाहा।।२८।। ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमः।। ॐ स्वाहा।।२९।। ॐ नमः सहमानाय निव्व्याधिनऽ– आव्व्याधिनीनाम्पतये नमः।। ॐ स्वाहा।।३०।। ॐ नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमः।। ॐ स्वाहा।।३१।। ॐ नमो निचेरवे परिचरायारण्ण्यानाम्पतये नमः।। ॐ स्वाहा।।३२।। ॐ नमो व्वञ्चते परिव्वञ्चते स्तायूनाम्पतये नमः।। ॐ स्वाहा।।३३।। ॐ नमो निषङ्गिणऽइषुधिमते तस्कराणाम्पये नमः।। ॐ स्वाहा।।३४।। ॐ नमः सृकायिभ्यो जिघा ँ सद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमः।। ॐ स्वाहा।।३५।। ॐ नमो ऽ सिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो व्विकृन्तानाम्पतये नमः।। ॐ स्वाहा।।३६।। ॐ नमऽ उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमः।। ॐ स्वाहा।।३७।। ॐ नमऽइषुमद्भ्यो धान्न्वायिभ्यश्च वो नमः।। ॐ स्वाहा।।३८।। ॐ नमऽ आतन्नवानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमः।। ॐ स्वाहा।।३९।। ॐ नमऽ आयच्छद्भ्योऽ

स्यद्‌भ्यश्च वो नमः।। ॐ स्वाहा।।४०।।
ॐ नमः विसृजद्‌भ्यो विद्ध्यद्भ्यश्च वो नमः। ॐ स्वाहा।।४१।। ॐ नमः स्वपद्‌भ्यो जाग्रद्‌भ्यश्च वो नमः।।ॐ स्वाहा।।४२।। ॐ नमः शयानेभ्यऽ आसीनेभ्यश्च वो नमः।।ॐ स्वाहा।।४३।। ॐ नमःस्तिष्ठद्‌भ्यो धावद्‌भ्यश्च वो नमः।।ॐ स्वाहा।।४४।। ॐ नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमः।।ॐ स्वाहा।।४५।। ॐ नमो ऽश्वेभ्यो ऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः।।ॐ स्वाहा।।४६।। ॐ नमःऽ आव्याधिनीभ्यो विविद्ध्यन्ती–भ्यश्च वो नमः।।ॐ स्वाहा।।४७।। ॐ नमः ऽ उगणाभ्यस्तृ ᳪ हतीभ्यश्च वो नमः।।ॐ स्वाहा।।४८।। ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमः।। ॐ स्वाहा।।४९।। ॐ नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्चवो वो नमः।। ॐ स्वाहा।।५०।। ॐ नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमः।। ॐ स्वाहा।।५१।। ॐ नमो विरुपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः।। ॐ स्वाहा।।५२।। ॐ नमो सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमः।। ॐ स्वाहा।।५३।। ॐ नमो रथिभ्यो ऽ अरथेभ्यश्च वो नमः।। ॐ स्वाहा।।५४।। ॐ नमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमः।। ॐ स्वाहा।।५५।। ॐ नमो महद्‌भ्यो ऽ अर्भकेभ्यश्च वो नमः।। ॐ स्वाहा।।५६।। ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमः।। ॐ

स्वाहा।।५७।। ॐ नमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च वो नमः।। ॐ स्वाहा।।५८।। ॐ निषादेभ्यः पुञ्जिष्टेभ्यश्च वो नमः।। ॐ स्वाहा।।५९।। ॐ नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः।। ॐ स्वाहा।।६०।। ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमः।। ॐ स्वाहा।।६१।। ॐ नमो भवाय च रुद्राय च।। ॐ स्वाहा।।६२।। ॐ नमः शर्व्वाय च पशुपतये च।। ॐ स्वाहा।।६३।। ॐ नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च।। ॐ स्वाहा।।६४।। ॐ नमः कपर्द्दिने च व्युप्तकेशाय च।। ॐ स्वाहा।।६५।। ॐ नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च।। ॐ स्वाहा।।६६।। ॐ नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च।। ॐ स्वाहा।।६७।। ॐ नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च।। ॐ स्वाहा।।६८।। ॐ नमो ह्रस्वाय च वामनाय च।। ॐ स्वाहा।।६९।। ॐ नमो बृहते च वर्षीयसे च।। ॐ स्वाहा।।७०।। ॐ नमो वृद्धाय च सवृधे च।। ॐ स्वाहा।।७१।। ॐ नमो ऽ ग्र्याय च प्रथमाय च।। ॐ स्वाहा।।७२।। ॐ नम ऽआशवे चाजिराय च।। ॐ स्वाहा।।७३।। ॐ नमः शीघ्ष्याय च शीभ्याय च।। ॐ स्वाहा।।७४।। ॐ नमऽ ऊर्म्म्याय चावस्वन्याय च।। ॐ स्वाहा।।७५।। ॐ नमो नादेयाय च द्वीप्याय च।। ॐ स्वाहा।।७६।। ॐ नमो ज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च।। ॐ स्वाहा।।७७।। ॐ नमः पूर्व्वजाय चापरजाय च।। ॐ स्वाहा।।७८।।

ॐ नमो मद्ध्य माय चा पगल्भाय च।। ॐ स्वाहा।।७६।।
ॐ नमो जघन्न्याय च बुद्ध्न्याय च।। ॐ स्वाहा।।८०।।
ॐ नमः सोब्भ्याय च प्रतिसर्य्याय च।। ॐ स्वाहा।।८१।।
ॐ नमोयाम्याय च क्षेम्याय च।। ॐ स्वाहा।।८२।।
ॐ नमः श्लोक्क्याय चावसान्न्याय च।। ॐ स्वाहा।।८३।।
ॐ नमः ऽ उर्वर्य्याय च खल्याय च।। ॐ स्वाहा।।८४।।
ॐ नमो व्वन्न्याय च कक्क्षाय च।। ॐ स्वाहा।।८५।।
ॐ नमः श्रवाय च प्प्रतिश्रवाय च।। ॐ स्वाहा।।८६।।
ॐ नमऽ आशुषेणाय चाशुरथाय च।। ॐ स्वाहा।।८७।।
ॐ नमः शूराय चावभेदिने च।। ॐ स्वाहा।।८८।।
ॐ नमः बिल्मिने च कवचिने च।। ॐ स्वाहा।।८६।।
ॐ नमो व्वर्म्मिणे च व्वरुथिने च।। ॐ स्वाहा।।६०।।
ॐ नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च।। ॐ स्वाहा।।६१।।
ॐ नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्न्याय च।। ॐ स्वाहा।।६२।।
ॐ नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च।। ॐ स्वाहा।।६३।।
ॐ नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च।। ॐ स्वाहा।।६४।।
ॐ नमः स्तीक्क्ष्णेषवे चायुधिने च।। ॐ स्वाहा।।६५।।
ॐ नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च।। ॐ स्वाहा।।६६।।
ॐ नमः स्त्रुत्याय च पत्थ्याय च ।। ॐ स्वाहा।।६७।।
ॐ नमः काट्ट्याय च नीप्प्याय च ।। ॐ स्वाहा।।६८।।
ॐ नमः कुल्याय च सरस्याय च ।। ॐ स्वाहा।।६६।।
ॐ नमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च ।। ॐ स्वाहा।।१००।।

ॐ नमः कूप्याय चावट्टयाय च ।। ॐ स्वाहा।।१०१।।
ॐ नमो व्वीध्र्याय चातप्याय च ।। ॐ स्वाहा।।१०२।।
ॐ नमो मेग्घ्याय च व्विद्युत्याय च ।। ॐ स्वाहा।।१०३।।
ॐ नमो व्वर्ष्याय चावर्ष्याय च ।। ॐ स्वाहा।।१०४।।
ॐ नमो व्वात्त्याय च रेष्म्याय च ।। ॐ स्वाहा।।१०५।।
ॐ नमो व्वास्तव्व्याय च व्वास्तुपाय च ।। ॐ स्वाहा।।१०६।।
ॐ नमः सोमाय च रुद्राय च ।। ॐ स्वाहा।।१०७।।
ॐ नमस्ताम्म्राय चारुणाय च ।। ॐ स्वाहा।।१०८।।
ॐ नमः सङ्ग्वे च पशुपतये च ।। ॐ स्वाहा।।१०६।।
ॐ नमऽ उग्ग्राय च भीमाय च ।। ॐ स्वाहा।।११०।।
ॐ नमोऽग्ग्रेवधाय च दूरेवधाय च ।। ॐ स्वाहा।।१११।।
ॐ नमो हन्त्रे च हनीयसे च ।। ॐ स्वाहा।।११२।।
ॐ नमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः।। ॐ स्वाहा।।११३।।
ॐ नमस्ताराय ।। ॐ स्वाहा।।११४।। ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च ।। ॐ स्वाहा।।११५।। ॐ नमः शङ्कराय च मयस्क्कराय च ।। ॐ स्वाहा।।११६।। ॐ नमः शिवाय च शिवतराय च ।। ॐ स्वाहा।।११७।। ॐ नमः पार्य्याय चावार्य्याय च ।। ॐ स्वाहा।।११८।। ॐ नमः प्प्रतरणाय चोत्तरणाय च ।। ॐ स्वाहा।।११६।। ॐ नमस्तीर्त्थ्याय च कूल्ल्याय च ।। ॐ स्वाहा।।१२०।। ॐ नमः शष्प्याय च फेन्न्याय च ।। ॐ स्वाहा।।१२१।। ॐ नमः सिकत्त्याय च प्रवाह्याय च।। ॐ स्वाहा।।१२२।। ॐ नमः कि ँ

शिलाय च क्षयणाय च ।।ॐ स्वाहा।।१२३।। ॐ नमः कपर्दिने च पुलस्तये च ।।ॐ स्वाहा।।१२४।। ॐ नमऽ इरिण्याय च प्रपत्थ्याय च ।।ॐ स्वाहा।।१२५।। ॐ नमो ब्रज्ज्याय च गोष्ठ्याय च ।। ॐ स्वाहा।।१२६।। ॐ नमस्तल्प्याय च गेह्याय च ।। ॐ स्वाहा।।१२७।। ॐ हृदृयाय च निवेष्प्यायच। ॐ स्वाहा।।१२८।। ॐ नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च ।। ॐ स्वाहा।।१२६।। ॐ नमः शुष्क्याय च हरित्याय च ।। ॐ स्वाहा।।१३०।। ॐ नमः पा ᳬ सव्याय च रजस्याय च ।। ॐ स्वाहा।।१३१।। ॐ नमो लोप्याय चोलप्याय च ।। ॐ स्वाहा।। १३२।। ॐ नमऽ ऊर्व्याय च सूर्व्याय च।। ॐ स्वाहा।।१३३।। ॐ नमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च।। ॐ स्वाहा।।१३४।। ॐ उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च। ॐ स्वाहा।।१३५।। ॐ नमऽ आखिदते च प्रखिदते च।। ॐ स्वाहा।। १३६।। ॐ नम ऽ इषुकृदब्भ्यो धनुष्कृद्ब्भ्यश्च वो नमः।। ॐ स्वाहा।।१३७।। ॐ नमो वः किरिकेब्भ्यो देवाना ᳬ हृदयेब्भ्यः।। ॐ स्वाहा।।१३८।। ॐ नमो विचिन्वत्केब्भ्यो देवाना ᳬ हृदयेब्भ्यः ।। ॐ स्वाहा।।१३६।। ॐ नमो विक्षिणत्केब्भ्यो देवाना ᳬ हृदयेब्भ्यः ।। ॐ स्वाहा।।१४०।। ॐ नमऽ आनिर्हतेब्भ्यो देवाना ᳬ हृदयेब्भ्यः।। ॐ स्वाहा।। १४१।।

ॐ दापेऽ अन्धसस्प्पते दरिद्र नील लोहित। आसाम्प्रजाना–
मेषाम्पशूनाम्मा भेर्म्मा रोङ् मो च नः किञ्चना–
ममत्।।ॐ।। स्वाहा।।१४२।। ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्प्रभरामहे मतीः। यथा समसद् द्विपदे चतुष्प्पदे व्विश्वं पुष्ट्टं ग्ग्रामे ऽ अस्मिन्ननातुरम्।। ॐ स्वाहा।। १४३।। ॐ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा व्विश्वाहा भेषजी। शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीव से।।ॐ स्वाहा।।१४४।। ॐ परि नो रुद्रस्य हेतिर्व्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्म्मतिरघायोः। अव स्त्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड।।ॐ स्वाहा।।१४५।। ॐ मीढुष्ट्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव। परमे व्वृक्ष ऽआयुधन्निधाय कृतिं व्वसान ऽ आचर पिनाकम्बिभ्रदागहि।। ॐ स्वाहा।।१४६।। ॐ व्विकिरिद्र व्विलोहित नमस्तेऽ अस्तु भगवः। यास्ते सहस्र ꣳहेतयोऽन्न्यमस्म्मन्निवपन्तु ताः।। ॐ स्वाहा।।१४७।। ॐ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः। तासामीसानो भगवः पराचीना मुखा कृधि।। ॐ स्वाहा।। १४८।। ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽ अधि भूम्म्याम्। तेषा ꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्न्वानि तन्न्मसि।।ॐ स्वाहा।।१४६।। ॐ अस्मिन्न्महत्यर्ण्णवे–

ऽन्तरिक्षे भवाऽअधि। तेषा ꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। ॐ स्वाहा।।१५०।। ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिव ꣳ रुद्द्राऽउपश्रिताः। तेषा ꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।ॐ स्वाहा।।१५१।। ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वा अधः क्षमाचराः। तेषा ꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।ॐ स्वाहा।।१५२।।

ॐ ये व्वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा व्विलोहिताः। तेषाꣳ सहस्रयोजने ऽव धन्न्वानि तन्मसि।। ॐ स्वाहा।।१५३।। ॐ ये भूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्दिनः। तेषा ꣳ सहस्रयोजने ऽव धन्वानि तन्मसि।।ॐस्वाहा।।१५४।। ॐ ये पथाम्पथिरक्षयऽ ऐलवृदा ऽआयुर्य्युधः। तेषा ꣳ सहस्रयोजने ऽव धन्वानि तन्मसि।।ॐ स्वाहा।।१५५।। ॐ ये तीर्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषाँ सहस्रयोजने ऽव धन्वानि तन्मसि।।ॐस्वाहा।।१५६।। ॐ येऽन्नेषु व्विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्। तेषा ꣳ सहस्रयोजने ऽव धन्वानि तन्मसि।।ॐ स्वाहा।।१५७।। ॐ यऽ एतावन्तश्च भूया ꣳसश्च दिशो रुद्रा व्वितस्थिरे। तेषा ꣳ सहस्रयोजने ऽव धन्वानि तन्मसि।।ॐ स्वाहा।।१५८।। ॐ नमोऽस्तु रुद्रेब्भ्यो ये दिवि येषां

व्वर्षमिषवः। तेब्भ्यो दश प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीदद्रशोद्ध्वाः।
तेब्भ्यो नमोऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्म्मो यश्च नो द्वेष्ट्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः।। ॐ स्वाहा।।१५९।। ॐ नमोऽस्तु रुद्रेब्भ्यो येऽन्तरिक्षे येषां व्वातऽइषवः। तेब्भ्यो दश प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्ध्वाः। तेब्भ्यो नमोऽअस्तुते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्म्मो यश्च नो द्वेष्ट्टि तमेषाञ्जम्भेदद्ध्मः।।ॐ स्वाहा।।१६०।। ॐ नमोऽस्तु रुद्रेब्भ्यो ये पृथिव्व्यां येषामन्नमिषवः। तेब्भ्यो दश प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशो द्ध्वाः। तेब्भ्यो नमो ऽअस्तु ते नो ऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः।। ॐ स्वाहा।।१६१।। ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः।।

।। इति पञ्चमोऽध्यायः।।५।।

।।अथ षष्ठोऽध्यायः।।

पाठमात्रम्—

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः। ॐ व्वय ꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।१।। एष ते रुद्र भागः सह स्वस्राम्बिकया तं जुषस्व स्वाहा। एष ते रुद्र भाग ऽ आखुस्ते पशुः।।२।। ॐ अवरुद्रमदीमह्यवं देवं त्र्यम्बकम्। यथा नो वस्यसस्करद्यथा नः श्रेयसस्करद्यथा नो व्यवसाययात्।।३।। ॐ भेषजमसि भेषजं गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजम्। सुखमेषाय मेष्यै।।४।। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽ मृतात्।। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः।।५।। ॐ एतते रुद्रावसंतेन परो मूजवतोऽतीहि। अवततधन्वापिनाकावसः कृत्तिवासा ऽअहि ꣳसन्नः शिवोऽतीहि।।६।। ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। येद्देवेषुत्र्यायुषं तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम्।।७।। ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते ऽअस्तु मा मा हि ꣳ सीः निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय।।८।।

।। इति षष्ठोऽध्यायः।।६।।

॥अथ सप्तमोऽध्यायः॥

पाठमात्रम्

ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च। सासह्वाँश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा।।१।। ॐ अग्नि ँ हृदयेनाशनि ँ हृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं यक्ना। शर्वं मतस्नाभ्यामीशानं मन्युना महादेव मन्तः पर्शव्येनोग्रं देवं वनिष्ठुना वशिष्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम्।।२।। ॐ उग्रं लोहितेन मित्र ँ सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो वलेन साध्यान् प्रमुदा। भवस्य कण्ठ्य ँ रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यमहादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्।।३।। ॐ लोमभ्यः स्वाहा लोमभ्यः स्वाहा त्वचे स्वाहा त्वचे स्वाहा लोहिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा मा ँ सेभ्यः स्वाहा मा ँ सेभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहा स्नानवभ्यः स्वाहास्थभ्यः स्वाहास्थभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा। रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा।।४।। ॐ आयासाय स्वाहा प्रायासाय स्वाहा संयासाय स्वाहा वियासाय स्वाहोद्यासाय स्वाहा। शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा।।५।। ॐ तपसे

स्वाहा तप्यते स्वाहा तप्यमानाय स्वाहा तप्ताय स्वाहा घर्माय स्वाहा निष्कृत्यै स्वाहा प्रायश्चित्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा।।६।। ॐ यमाय स्वाहान्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा। ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्या ꣳ स्वाहा।।७।।

इति सप्तमोऽध्यायः।।७।।

।।अथाष्टमोऽध्यायः।।

पुनः हवन प्रारंभ करें–

ॐ वाजश्चमे प्रसवश्व में प्रयतिश्च प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च में स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ स्वाहा।।१।।

ॐ प्राणश्च मे ऽपानश्च मे व्यानश्च में ऽसुश्च मे चितं चम ऽआधीतं च मे वाक् च में मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे वलं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ स्वाहा।।२।।

ॐ ओजश्च मे सहश्च मऽआत्मा चमे तनूश्च मे शर्म चमे वर्म च मेऽङ्गानि च मे ऽस्थीनि च मे परू ꣳषि च मे शरीराणि च म ऽ आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन

कल्पन्ताम्।। ॐ स्वाहा।।३।।

ज्यैष्ठ्यं चम ऽ आधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽमश्च मेऽ भश्च में जेमा च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे वृद्धं चमे वृद्धिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।ॐ स्वाहा।।४।।

२. पुनः पञ्चम अध्याय के प्रारम्भ (ॐ नमस्ते रुद्र०) से शुरु कर १६१ आहुति देवे। पुनः—

ॐ सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च में धनं च मे विश्वं च में महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।ॐ स्वाहा।।५।।

ॐ ऋतंच मेऽमृतं च मेऽयक्ष्मं च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेऽनमित्रं च मेऽभयं च मे सुखं च मे शयनं च मे सूषाश्च मे सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॐ स्वाहा।।६।।

ॐ यन्ताच मे धर्ता चमे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च में प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ स्वाहा।।७।।

ॐ शं च मे मयश्च मे प्रियंच मेऽनुकामश्च मे कामश्च

मे सौमनसश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे भद्रंच में श्रेयश्च मे वसीयश्च में यशश्च में यज्ञेन कल्पन्ताम्।।ॐ स्वाहा।।८।।

३. पुनः पञ्चम अध्याय—नमस्तेरुद्र० से १६१ आहुति देवे। पुनः—

ॐ ऊर्क् च मे सूनृता च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतं च मे मधु च मे सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्च में वृष्टिश्च मे जैत्रं च म ऽऔद्भिद्यं चमे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ स्वाहा।।९।। रयिश्चमे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे विभु च मे प्रभु चमे पूर्णं चमे पूर्णतरं च मे कुयवं च मेऽक्षितं च मेऽन्नं च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।ॐ स्वाहा।।१०।।

वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च में सुगं च मे सुपथ्यं च म ऽऋद्धं च मऽ ऋद्धिश्च मे क्लृप्तं च मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।ॐ स्वाहा।।११।।

ॐ ब्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च में खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मे ऽणवश्च मे श्यामाकाश्चमें नीवाराश्चमे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।ॐ स्वाहा।।१२।।

४. पुनः पञ्चम अध्याय–नमस्ते रुद्र० से १६१ आहुति देवे। पुनः–

ॐ अस्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यं च मेऽयश्च मे श्यामं च मे लोहञ्च मे सीसं च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।ॐ स्वाहा।।१३।।

ॐ अग्निश्च मे ऽआपश्च मे वीरुधश्च मऽओषधयश्च मे कृष्टपच्याश्च मे ऽकृष्टपच्याच मे ग्राम्याश्च मे पशव ऽआरण्याश्च मे वित्तञ्चमे वित्तिश्च मे भूतञ्च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ स्वाहा।। १४।।

ॐ वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमश्च म ऽ इत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।ॐ स्वाहा।।१५।।

५. पुनः पञ्चम अध्याय–नमस्तेरुद्र० से १६१ आहुति देवे। पुनः–

ॐ अग्निश्च मे ऽइन्द्रश्च में सोमश्च म इन्द्रश्च मे सविता च म ऽइन्द्रश्च मे सरस्वती च म ऽ इन्द्रश्च मे पूषा च म इन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।ॐ स्वाहा।।१६।।

ॐ मित्रश्च मे इन्द्रश्च मे वरुणश्च म ऽ इन्द्रश्च मे धाता च म ऽ इद्रश्च मे त्वष्टा च म इद्रश्च मे मरुतश्च म ऽ इन्द्रश्च मे विश्वे च मे देवा इन्द्रश्च मे

यज्ञेनकल्पन्ताम्।।ॐ स्वाहा।।१७।।

ॐ पृथिवी च म ऽ इन्द्रश्च मे ऽन्तरिक्षं चम ऽइन्द्रश्च मे द्यौश्च म इन्द्रश्च मे समाश्चम ऽइन्द्रश्च मे नक्षत्राणि चम ऽ इन्द्रश्च मे दिशश्च मऽ इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ स्वाहा।।१८।।

६. पुन पञ्चम अध्याय – नमस्तेरुद्रं० से १६१ आहुति देवे। पुनः–

ॐ अ ंॅ शुश्च मे रश्मिश्च मे ऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म ऽ उपाँशुश्च मे ऽन्तर्यामश्च म ऽऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुणश्च म ऽ आश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ स्वाहा।।१६।।

ॐ आग्रयणश्च मे वैश्वदेवश्च मे ध्रुवश्च मे वैशानरश्च मऽ ऐन्द्राग्नश्च मे महावैश्वदेवश्च मे मरुत्वतीयाश्च मे निष्केवल्यश्च मे सावित्रश्च मे सारस्वतश्च मे पात्क्नीवतश्च मे हारियोजनश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।ॐ स्वाहा।।२०।।

ॐ स्त्रुचश्च मे चमसाश्च मे वायव्यानि च मे द्रोणकलशश्च मे ग्रावाणश्च मे ऽधिषवणे च मे पूतभृच्च म ऽ आधवनी यश्च मे वेदिश्च मे बर्हिश्च मे ऽवभृथश्च मे स्वगाकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।ॐ स्वाहा।।२१।।

७. पुनः पञ्चम अध्याय – नमस्तेरुद्र० से १६१ आहुति देवे। पुनः–

ॐ अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मे ऽ दितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।ॐ स्वाहा।।२२।।

ॐ व्रतं च म ऽ ऋतवश्च मे तपश्च मे संवत्सरश्च मे ऽ होरात्रे ऽ ऊर्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।ॐ स्वाहा।।२३।।

८. पुनः पञ्चम अध्याय – नमस्तेरुद्र० से १६१ आहुति देवे। पुनः–

ॐ एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्तच मे सप्त च मे नव च मे नव च म ऽ एकादश च म ऽ एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च म ऽ एकवि ᳫं शतिश्च म ऽ एकवि ᳫं शतिश्च मे त्रयोवि ᳫं शतिश्च मे त्रयोवि ᳫं शतिश्च मे पञ्चवि ᳫं शतिश्च मे पञ्चवि ᳫं शतिश्च मे सप्तवि ᳫं शतिश्च मे सप्तवि ᳫं शतिश्च मे नववि ᳫं शतिश्च मे नविवि ᳫं शतिश्च म ऽ एक त्रि ᳫं शश्च म ऽ एक

त्रि ँ शश्च मे त्रयस्त्रि ँ शश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।ॐ स्वाहा।।२४।।

६. पुन पञ्चम अध्याय – नमस्तेरुद्र० से १६१ आहुति देवे। पुनः–

ॐ चतस्रश्च मे ऽष्टौ च मे ऽष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च मे षोडश चमे षोडश च मे वि ँ शतिश्च मे वि ँ शतिश्च मे चतुर्वि ँ शतिश्च मे चतुर्वि ँ शतिश्च मे ऽष्टावि ँ शतिश्च मे ऽष्टावि ँ शतिश्च मे द्वात्रि ँ शच्च मे द्वात्रि ँ शच्च मे षट्त्रि ँ शच्च मे षट्त्रि शच्च मे चत्वारि ँ शच्च मे चत्वारि ँ शच्च मे चतुश्चत्वारि ँ शच्च मे चतुश्चत्वारि ँ शच्च में ऽष्टा चत्वारि ँ शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। ॐ स्वाहा।।२५।।

१०. पुनः पञ्चम अध्याय– नमस्तेरुद्र० से १६१ आहुति देवे। पुनः–

ॐ त्र्यविश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्यवाट् च मे तुर्यौही च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।ॐ स्वाहा।।२६।।

ॐ पष्ठ्वाट् च मे पष्ठोही च म ऽउक्षा च मे वशाच मे ऽऋषभश्च मे वेहच्च मे ऽनड्वाँश्च मे धेनुश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।ॐ स्वाहा।।२७।।

११. पुनः ॐ यज्जाग्रत० के ६ मंत्र से आहुति देवे।
ॐ सहस्त्रशीर्षा के १६ मंत्र से आहुति देवे।
ॐ अदभ्यः सम्भृतः० के ६ मंत्र से आहुति देवे।
ॐ आशुः शिशान० के १२ मंत्र से आहुति देवे।
ॐ विभ्राड बृहत० के १७ मंत्र से आहुति देवे।
ॐ नमस्तेरुद्र० के १६१ मंत्र से आहुति देवे।

पुनः— ॐ वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहा पिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे स्वाहा ऽ हर्पतये स्वाहा हे मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैन ०ं शिनाय स्वाहा विन ०ं शिन ऽ आन्त्यायनाय स्वाहान्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा। इयं ते राण्मित्राय यन्तासियमन ऽ ऊर्जे त्वा वृष्ट्यै त्वा प्रजानां त्वाधिपत्याय।।ॐ स्वाहा।।

ॐ आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पता ०ं श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतांमात्मा यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां ज्योर्तियज्ञेन कल्पता ०ं स्वर्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्। स्तोमश्च यजुश्च ऽ ऋक च साम च बृहच्च रथन्तरञ्च। स्वर्देवाऽ अगन्मामृताऽ अभूम प्रजापतेः प्रजा ऽअभूम वेट् स्वाहा।।ॐ स्वाहा।।

।। इत्यष्टमोऽध्याय।।८।।

॥अथ शान्त्यऽध्यायः॥

ॐ ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजुः प्र पद्ये साम प्राणं प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये। वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ।।ॐ स्वाहा।।१।।

ॐ यन्मे छिन्द्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वाति तृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु। शं नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः।।
ॐ स्वाहा।।२।।

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।ॐ स्वाहा।।३।।

ॐ कया नश्चित्र ऽ आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।। ॐ स्वाहा।।४।।

ॐ कस्त्वा सत्यो मदानां म ꣳ हिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु।। ॐ स्वाहा।।५।।

ॐ अभी षु णः सखीनामविता जरितृणाम्। शतं भवास्यूतिभिः।। ॐ स्वाहा।।६।।

ॐ कया त्वं न ऽ ऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन्। कया स्तोतृभ्य ऽ आ भर ।। ॐ स्वाहा।।७।।

ॐ इन्द्रो विश्वस्य राजति। शन्नोऽअस्तु द्विपदेशं चतुष्पदे।। ॐ स्वाहा।।८।।

शन्नो मित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमा। शन्न ऽ

इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णु रुरुक्रमः।। ॐ स्वाहा।।६।।

ॐ शन्नोवातः पवता ॐ शन्नस्तपतु सूर्य्यः। शन्नः कनिक्र दद्देवः पर्जन्यो ऽ अभि वर्षतु ।। ॐ स्वाहा।।१०।।

ॐ अहानि शं भवन्तु नः श ॐ रात्रीः प्रति धीयताम्। शन्न ऽ इन्द्राग्नि भवतामवोभिः शन्नऽ इन्द्रावरुणा रातहव्या। शन्न ऽ इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः।। ॐ स्वाहा।।११।।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शंयोरभि स्रवन्तु नः।। ॐ स्वाहा।।१२।।

ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म स प्रथाः।। ॐ स्वाहा।।१३।।

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऽ ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे ।। ॐ स्वाहा।।१४।।

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः ।। ॐ स्वाहा।।१५।।

तस्मा ऽ अरं गमाम वो यस्यक्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः ।। ॐ स्वाहा।।१६।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ॐ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शन्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिब्रह्म शान्तिः सर्व ॐ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः

सा मा शान्तिरेधि।। ॐ स्वाहा।।१७।।

ॐ दृते दृ ꣳ ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।। ॐ स्वाहा।।१८।।

दृते दृ ꣳ ह मा। ज्योक्ते संदृशि जीव्यासं ज्योक्ते संदृशि जीव्यासम् ।। ॐ स्वाहा।।१९।।

ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽ अस्त्वर्चिषे। अन्याँस्ते ऽ अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽ अस्मभ्य ꣳशिवोभव।। ॐ स्वाहा।।२०।।

ॐ नमस्तेऽअस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे। नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः सीमहसे।। ॐ स्वाहा।।२१।।

ॐ यतो यतः समीहसे ततो नोऽ अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ।। ॐ स्वाहा।।२२।।

ॐ सुमित्रिया न ऽ आप ऽ ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।। ॐ स्वाहा।।२३।।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतं मदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।। ॐ स्वाहा।।२४।।

।। इति शान्त्यध्यायः।।

॥ अथ स्वति प्रार्थनामंत्राः (पाठमाऽम्)॥

ॐ स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यों ऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।१।।

ॐ पयः पृथिव्यां पय ऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पय स्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।२।।

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ।।३।।

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवता ऽऽ दित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता।।४।।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।।५।।

ॐ वाम देवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ।।६।।

ॐ अघोरेभ्यो ऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः

सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते ऽ अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।७।।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि।। तन्नोरुद्रः प्रचोदयात।।८।।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्व भूतानाम्।। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो ऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे ऽअस्तु सदा शिवोऽम्।।६।।

ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्ते ऽअस्तुमामाहि ᳪ सीः।। निवर्त्तयाम्यायुषे ऽन्नाद्यायप्रजननायरा–यस्पोषायसु प्रजास्त्वायसुवीर्य्याय।।१०।।

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रंतन्नऽआसुव।।११।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ᳪ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ᳪ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।१२।।

ॐ सर्वेषां वा एष व्वेदाना ᳪ रसो यत्साम सर्व्वेषामेवैनमेतद्व्देदाना ᳪ रसेनाभिषिञ्चति।।१३।।

।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

इति स्वस्ति प्रार्थना मन्त्राः।।

अब पुनः पूर्ववत अङ्गन्यास करे।

।। इति रुद्रयाग विधानम्।।

॥ अथ दुर्गायाग न्यास विधानम्॥

दुर्गा याग में पहले कवच, अर्गला, कीलक का पूर्ण पाठ कर लेवें, तत्पश्चात् दाहिने हाथ मे जल लेकर विनियोग हेतु जल पृथिवी पर छोड देवे–

विनियोगः–ॐ अस्य श्री नवार्णमंत्रस्य ब्रह्मविष्णु–रुद्राऋषयः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुपश्छन्दांसि, श्री महाकाली– महालक्ष्मी–महासरस्वत्यौ देवताः ऐं बीजम् ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्री महाकाली– महालक्ष्मी–महासरस्वती–प्रीत्यर्थे न्यासे विनियोग'।। जल छोड़ कर निम्नवत् न्यास करे–

ॐ ब्रह्म–विष्णु–रुद्र ऋषिभ्यो नमः शिरसि।

ॐ गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दोभ्यो नमः, मुखे।

ॐ महाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वती देवताभ्यो नमः, हृदि। ॐ ऐं बीजाय नमः, गुह्ये। ॐ ह्री शक्तये नमः, पादयो। ॐ क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे नमः सर्वाङ्गे।। जल लेकर हाथ धोवैं।

करादिन्यासः–करन्यास मे पहले अंगुलियो व हथेलियों व उनके पृष्ठ भाग का स्पर्श निम्नवत् करे–

ॐ ऐं, अङ्गुष्ठाभ्यांनमः।। तर्जनियों से अँगूठों का स्पर्श।

ॐ ह्रीं, तर्जनीभ्यां नमः।। अँगूठों से तर्जनियों का स्पर्श।

ॐ क्लीं, मध्यमाभ्यां नमः।। अँगूठों से मध्यमाओं-का स्पर्श।

ॐ चामुण्डायै, अनामिकाभ्यां नमः।। अँगूठो से अनामिकाओं का स्पर्श।

ॐ विच्चे, कनिष्ठिकाभ्यां नमः।। अँगूठों से कनिष्ठिका का स्पर्श।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।। करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

पढ़कर हथेलियों व उनके पृष्ठभाग का स्पर्श करे।

हृदयादिन्यासः— (दाहिने हाथ की अंगुलियों से)

ॐ ऐं हृदयाय नमः। से हृदय का स्पर्श।

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। शिर का स्पर्श।

ॐ क्लीं शिखायैवषट्। शिखा का स्पर्श।

ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्। दोनो बाहुओ का स्पर्श।

ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्।।नेत्रो का स्पर्श

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। अस्त्राय फट्।।

कहकर बांये हाथ की हथेली पर दायें हाथ को सिर के ऊपर घुमाकर अनामिका मध्यमा अंगुलियों से ताली बजाये।

अक्षर न्यासः— (दाहिने हाथ की अंगुलियों से)

ॐ ऐं नमः, शिखायाम्। शिखा का स्पर्श

ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे। दक्षिण नेत्र का स्पर्श।

ॐ क्लीं नमः, वाम नेत्रे वाम नेत्र का स्पर्श।
ॐ चां नमः, दक्षिण कर्णे। दक्षिण कान का स्पर्श।
ॐ मुं नमः, वाम कर्णे। वाम कान का स्पर्श।
ॐ डां नमः,दक्षिण नासायाम्। दक्षिण नाक के छिद्र का स्पर्श।
ॐ यैं नमः वाम नासायाम्। वाम नाक के छिद्र का स्पर्श।
ॐ विं नमः, मुखे। मुख का स्पर्श।
ॐ च्चे नमः गुह्ये। गुदा का स्पर्श करे।
पुनः जल लेकर हाथ धोवें।

एवं विन्यस्थाऽष्टवारं मूलेन व्यापकं कुर्यात्।।

इस प्रकार न्यास कर मूलमंत्र (ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चे) से आठ वार दोनों हाथों द्वारा मस्तक से पैरो तक समस्त अंगों का स्पर्श करे।

दिङ् न्यास—

ॐ ऐं प्राच्यै नमः। से पूर्व की ओर।
ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः। से अग्निकोण में।
ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः से दक्षिण को।
ॐ ह्रीं नैऋत्यै नमः। से नैऋत्य में।
ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। से पश्चिम में।
ॐ क्लीं वायव्यै नमः। से वायव्य में।
ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। से उत्तर में।

ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ईशान मे।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। उपर को
ॐ ऐं ह्री क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः।। पढ़कर भूमि की ओर नमस्कार करें।

।। एकादश न्यास।।

नवचण्डी, शतचण्डी, सहस्त्र चण्डी प्रयोग हेतु यहाँ पर एकादश न्यास दिये हैं चाहें तो एकादश न्यास सुविधानुसार कर लेवें–

१. मातृका न्यास– मातृका न्यास देव तुल्य बनने के लिये किया जाता है– (दाहिने हाथ की अंगुलियों से शरीर का स्पर्श)

ॐ अं नमो मूर्ध्नि।
ॐ आं नमो ललाटे।
ॐ इं नमो दक्षिणनेत्रे।
ॐ ईं नमो वाम नेत्रे।
ॐ उं नमो दक्षिणे कपोले।
ॐ ऊ नमो वामकपोले।
ॐ ऋ नमो दक्षिण कर्णे।
ॐ ॠं नमो वाम कर्णे।
ॐ लृं नमो दक्षिणनासापुटै।

ॐ लॄं नमो वामनासापुटै।

ॐ एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे।

ॐ ऐं नमः अधरोष्ठे।

ॐ ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ।

ॐ औं नमः अधौदन्त पङ्क्तौ।

ॐ अं नमः जिह्वायाम्।

ॐ अः नमः तालुनि।

ॐ कं नमो दक्षिणबाहुमूले।

ॐ खं नमो दक्षिणकर्पूरे।

ॐ गं नमो दक्षिणमणिबन्धे।

ॐ घं नमो दक्षिणङ्गुलिमूले।

ॐ ङं नमो दक्षिणङ्गुल्यग्रे।

ॐ चं नमो वामबाहुमूले।

ॐ छं नमो वाम कर्पूरे।

ॐ जं नमो वाममणिवन्धे।

ॐ झं नमो वामाङ्गुलि मूले।

ॐ ञं नमो वामाङगुल्यग्रे।

ॐ टं नमो दक्षिण पाद मूले।

ॐ ठं नमो दक्षिण जानुनि।

ॐ डं नमो दक्षिणपादगुल्फे।

ॐ ढं नमो दक्षिणपादाङ्गुलिमूले।
ॐ णं नमो दक्षिणपादाङ्गुल्यग्रे।
ॐ तं नमो वामपाद मूले।
ॐ थं नमो वामजानुनि।
ॐ दं नमो वामपाद गुल्फे।
ॐ धं नमो वामपादाङ्गुलिमूले।
ॐ नं नमो वामपादांगुल्यग्रे।
ॐ पं नमो दक्षिण पार्श्वे।
ॐ फं नमो वाम पार्श्वे।
ॐ बं नमो पृष्ठे।
ॐ भं नमो नाभौ।
ॐ मं नमः उदरे।
ॐ यं नमः हृदये।
ॐ रं नमः असृजि।
ॐ लं नमः मांसे।
ॐ वं नमः स्नायुषु।
ॐ शं नमः हृदयादिदक्षहस्तान्ते।
ॐ षं नमः हृदयादिवामहस्तान्ते।
ॐ सं नमः हृदयादि दक्षपादान्ते।
ॐ हं नमः हृदयादि वामपादान्ते।
ॐ क्षं नमः सर्वत्र।

२. सारस्वतो न्यासः— वाणी के द्वारा किये संचित पाप को नष्ट करने के लिए 'सारस्वतो न्यास' किया जाता है।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अंङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं करतलाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कर पृष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं मणिबन्धाभ्यां नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रदयाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिरसे नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं शिखायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कवचाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नेत्रत्रयाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अस्त्राय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पूर्वायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं अग्नये नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दक्षिणायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नित्रऋतये नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं पश्चिमायै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं वायवे नमः।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं उत्तरायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ईशानाय नमः।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ऊर्ध्वायै नमः।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं भूम्यै नमः।

३. मातृगण न्यास :– त्रैलोक्य में विजय देने वाला निर्भय और सम्पूर्ण देवो का प्रिय बनने के लिए यह न्यास किया जाता है। ॐ ह्रीं ब्राह्मी पूर्वस्यां मांपातु।
ॐ ह्री माहेश्वरी मां आग्नेयां पातु।
ॐ ह्री कौमारी मां दक्षिणे पातु।
ॐ ह्री वैष्णवी मां नैर्ऋत्यां पातु।
ॐ ह्री वाराही मां पश्चिमे पातु।
ॐ ह्री नारसिंही मां वायव्यां पातु।
ॐ ह्री इन्द्राणी मां उत्तरे पातु।
ॐ ह्री चामुण्डा मां ईशान्यां पातु।
ॐ ह्री व्योमेश्वरी मां उर्ध्वं पातु।
ॐ ह्री सप्त द्वीपेश्वरी मां भुवि पातु।
ॐ ह्री नागेश्वरी मां पाताले पातु।

४. नन्दजादि न्यासः– जरामृत्यु नाश के लिए तथा इस न्यास को करने से अग्नि जल से निर्भयता प्राप्त होती है।

कमलांकुश मण्डिता नन्दजा पूर्वांगं मे पातु।
खड्गपात्र धरा रक्तदन्तिका दक्षिणाङ्गं में पातु।
पुष्प पल्लव मूलादि हस्ता शाकम्भरी पश्चिमाङ्ग में पातु।
धनुर्वाण धरा दुर्गा वामाङ्ग मे पातु।
शिरः पात्रकरा भीमा मस्तकाच्चरणावधि मां पातु।
चित्रकान्तिभृद् भ्रामारी चरणान्मस्तकातं में पातु।

५. अभेद्योन्यासः— सर्व वशीकरण हेतु यह न्यास किया जाता है—

ॐ ऐं पादादिनाभि पर्यन्तं बह्मा मां पातु।
ॐ श्रीं नाभेर्विशुद्धि पर्यन्तं जनार्दनो मां पातु।
ॐ हं सौं विशुद्धैः शिखापर्यन्तं त्रिलोचनोरुद्रो मां पातु।
ॐ ऐं हंसौ में पद द्वयं पातु।
ॐ श्रीं वैनतेयो में कर द्वयं पातु।
ॐ हंसौ वृषभः चक्षुषी में पातु।
ॐ ह्रीं गजाननः सर्वाङ्ग में पातु
ॐ ह्रीं आनन्दमयोहरिः परापरौ देहभागौ मे पातु।

६. महालक्ष्म्यादि न्यासः— सद्गति प्राप्ती बैकुण्ठ सुख प्राप्त एवं सर्वकष्ट शान्ति के लिए यह न्यास किया जाता है।

ॐ ह्रीं अष्टादश भुजा महालक्ष्मीः मध्यमाङ्ग मां पातु।
ॐ ऐं अष्ट भुजा सरस्वती उर्ध्वं मां पातु।
ॐ क्लीं त्रिंशलोचना महाकाली अधो मां पातु।
ॐ क्षौं सिंहो हस्तद्वयं मां पातु।
ॐ ऐं परमहंसोऽक्षिमण्डलं मां पातु।
ॐ महिषारूढोयमः पद द्वयं मां पातु।
ॐ हं सौं महेशश्चण्डिकायुक्तः सर्वाङ्ग मां पातु।

७. **मूलाक्षर न्यासः—** सब रोग दूर करने व आरोग्यता प्राप्ति हेतु यह न्यास किया जाता है।

ॐ ऐं नमो ब्रह्मरन्ध्रे।
ॐ ह्रीं नमो दक्षिण नेत्रे।
ॐ क्लीं नमो वामनेत्रे।
ॐ चां नमो दक्षिण कर्णे।
ॐ मुं नमो वाम कर्णे।
ॐ डां नमो दक्षिण नासपुटे।
ॐ यैं नमो वामनासपुटे
ॐ विं नमो मुखे।
ॐ च्चे नमो गुह्ये।

८. **विलोभाक्षर न्यासः—** यह न्यास दुःख दूर करने एवं सुख की प्राप्तिं के लिए किया जाता है।

ॐ च्चे नमः गुह्ये।

ॐ विं नमो मुखे।

ॐ यैं नमो वामनासपुटे।

ॐ डां नमो दक्षिण नासपुटे।

ॐ मुं नमो वाम कर्णे।

ॐ चां नमो दक्षिण कर्णे।

ॐ क्लीं नमो वामनेत्रे।

ॐ ह्री नमो दक्षिण नेत्रे।

ॐ ऐं नमो ब्रह्मरन्ध्रे।

९. मूलन्यासः— देवता प्राप्ति हेतु यह न्यास किया जाता है।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। मस्तका चरणान्तं।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। चरणान्मस्तकान्तं।

अष्टवार व्यापकं कुर्यात्।

१०. मूल षडङ्ग न्यासः— इस न्यास के करने से जो साधक कहता है वह ही हो जाता है। त्र्यैलोक्यवशीकरण के लिए यह न्यास किया जाता है।

ॐ ऐं हृदयाय नमः।

ॐ ह्रीं शिरसे नमः।

ॐ क्लीं शिखायै नमः।

ॐ चामुण्डायै कवचायनमः।

ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय नमः।

११. सर्वरक्षाकरः न्यास– सर्व अरिष्ट हरने वाला तथा इप्सित फल को देने वाला यह न्यास पूर्व किये गये दशन्यासो के समान फलदायक है।

१. ऐं बीज का ध्यान करते हुए सम्पूर्ण अंगो का स्पर्श करेः–

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।।
शङ्खिनी चापिनी वाण भुशुण्डीपरिघा युधा।।१।।
ॐ सौम्या सौम्यतराशेष सौम्येभ्यस्त्वति सुन्दरी।।
पराऽपराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी।।२।।
ॐ यच्च किञ्चित् क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके।।
तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वं किं स्तूयसे तदा।।३।।
ॐ ययात्वया जगत्स्त्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत्।।
सोऽपि निद्रावशं नीतः कस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः।।४।।
ॐ विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च।।
कारितास्तेयतो ऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान भवेत्।।५।।

२. ह्रीं बीज का ध्यान करते हुए सम्पूर्ण अंगों का स्पर्श करें।

ॐ शूलेनपाहिनो देवि। पाहि खड्गेन चाऽम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानि स्वनेन च।।१।।
ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्या च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।।
भ्रामणे नात्मशूलस्य उतरस्यां तथेश्वरि।।२।।

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।।
यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम्।।३।।
ॐ खड्ग शूलगदादीनियानि चास्त्रोणि तेऽम्बिके।
करपल्लव सङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वत्ः।।४।।

३. क्लीं बीज का ध्यान करते हुए सम्पूर्ण अंगो का स्पर्श करे–

ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि! नमोऽस्तु ते।।१।।
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रय भूषितम्। पातुनः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोस्तुते।।२।।
ॐ ज्वाला कराल मत्युग्रमशेषासुरसूदनम्।।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकाली नमोऽस्तु ते।।३।।
ॐ हिनस्ति दैत्य तेजांसि स्वनेनापूर्यया जगत्।।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव।।४।।
ॐ असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्वलः।।
सुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्।।५।।

इत्येकादश न्यास प्रयोगः

।। श्री सूक्तम्।।

न्यास एवं होम

ॐ हिरण्य वर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्त्रजाम्।। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।१।। ॐ स्वाहा।। शिरसी।।

ॐ तांम ऽ आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।। यस्यांहिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।२।। ॐ स्वाहा।। नेत्रयोः।। ॐ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रवोधिनीम्। श्रियं देविमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।३।। ॐ स्वाहा।। कणयोः।।

ॐ कांसोऽस्मिता हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहो पह्वये श्रियम्।।४।। ॐ स्वाहा।। घ्राणयोः।।

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसां ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मनेमिं शरणं प्रपद्ये, अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।५।। ॐ स्वाहा। मुखे।।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षो ऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या ऽअलक्ष्मीः।।६।। ॐ स्वाहा।। ग्रीवायाम्।।

ॐ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतो

सुराष्टेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु में।।७।।ॐस्वाहा।। करयोः।।

ॐ क्षुत्पिपासामलांज्येष्ठामलक्ष्मी नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धि च सर्वा निर्णुद मे गृहात्।।८।। ॐ स्वाहा।। हृदि।।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।६।। ॐ स्वाहा।। नाभौ।।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०।। ॐ स्वाहा।।गुह्ये।।

ॐ कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम!। श्रियं वासयमें कुलेमातरं पद्ममालिनीम्।।११।। ॐ स्वाहा।। गुदे।।

ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले।।१२।। ॐ स्वाहा।।उर्वोः।।

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।१३।। ॐ स्वाहा।। जानुनोः।।

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टि सुवर्णां हेममालिनीम्।।

सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।१४।। ॐ स्वाहा।। जंघयो।।

ॐ तांमऽ आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।। यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।। १५।। ॐ स्वाहा।। चरणयोः।।

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।। सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।। ॐ स्वाहा।। सर्वाङ्गे।।

ॐ महाकाल्यै स्वाहा।।ॐ महालक्ष्मै स्वाहा।।

ॐ महासरस्वत्यै स्वाहा।।

तत्पश्चात् 'अक्षमालिकायै नमः से जपमाला का पूजन कर के 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे मंत्र से एक १०८ आहुति देवे।

फिर दुर्गासप्तशती के प्रथम अध्याय का विनियोग कर जल छोड़ देवे फिर देवी का ध्यान 'खड्गं चक्रगदेषु' से कर के 'ऐं मार्कण्डेय उवाच' से हवन प्रारंम्भकर त्रयोदश अध्याय के 'सवार्णिभविता मनु' तक हवन सात सौ मंत्रों से पूर्ण करें।

हवन के पश्चात पुनः पूर्ववतः न्यास तथा १०८ बीज मंत्र से आहुति देवें, तत्पश्चात् 'देवी सूक्तम्, 'प्राधानिकं रहस्य, वैकृतिकंरहस्यं मूर्ति–रहस्यम्' आदि का पाठ कर लेवे।

।। दुर्गायाग विधान।।

दुर्गा शप्तशती के कुछ महत्त्वपूर्ण मंत्रो का हवन विधान तथा अध्याय पूर्ण होने पर विशेष आहुति का विधान भी लिख दिया है। मंत्र तथा अध्याय पूर्ण होने पर विषेश आहुतियाँ निम्नवत् देवें।

हर अध्याय में जहाँ पर 'देव्युवाच' हो गोरोचन व चन्दन की आहुति देवें।

प्रथम अध्याय

श्लोक	श्लोक सं	विशेष आहुति
तत्किमेतन् महा०	।।४४।।	लौग से
खड्गिनी शूलिनीघोरा०	।।८०।।	घी से
सौम्या सौम्य०	।।८१।।	घी से
परापराणां परामा०	।।८२।।	घी से
तस्यसर्वस्या०	।।८३।।	घी से

अध्याय पूर्ण होने पर – **ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽ अम्बालिके न मानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां कांपील वासिनीम् ॐ स्वाहा।।** मंत्र पढ़कर आहुति में भोजपत्र के उपर पान पत्ता व सुपारी तिलयव चावल मधु डाले। तत्पश्चात " **ॐ अम्बे नमः स्वाहा अम्बिके नमः स्वाहा।** अम्बालिके स्वाहा से घी की तीन आहुति दें।

दूसरा अध्याय

अदद्ज्जली धस्तस्यै०	।।२६।।	कमल पुष्प।
ददावंशून्यं०	।।३०।।	शहद ।
नागहारं ददौ०	।।३१।।	मोती।
नाशयन्तो सुर०	।।५४।।	शंख ।
ततोदेवि त्रिशूलेन०	।।५५।।	सुवर्णया चांदीकीगदा।
वेमुश्च केचिदरुधिरम्०	।।५८।।	लाल चन्दन।
देव्यागणैश्च तैस्त०	।। ५६।।	अनेक पुष्प।

पुनः अम्बे ऽअम्बिके .....से आहुति दें पुनः पूर्ववत् भोज के उपर पान पत्ता सुपारी गन्ध अक्षत सरसों गुगुल रखकर महा आहुति निम्न मंत्र से दें। **ॐ सांगायै सपरिवारायै ह्रीं बीजधिष्ठात्र्यै महालक्ष्म्यै नमः।। महा आहुति समर्पयामि।।** फिर घी से तीन आहुति– **ॐ अम्बे नमः स्वाहा। ॐ अम्बिके नमः स्वाहा। अम्बालिके नमः स्वाहा।।**

तीसरा अध्याय

दृष्ट्वातदापतच्छूल०	।। १०।।	सोने चांदी के त्रिशूल से।
सोऽपि शक्ति मुमोचाथ०	।। १२।।	गुगुल
उदग्रश्च रणे देव्याः०	।। १६।।	पालक राइ साग।
देविक्रुद्धा गदापातै०	।। १८।।	अपामार्ग।
सोऽपि कोपान्महावीर्यः०	।। २५।।	बडे की (नमक रहित)।
ततः क्रुद्धा जगन्माता०	।। ३४।।	त्रिमधु।

ननर्द चासुरः सोऽपि०	।।३५।।	मधु।
सा चतान् प्रहितांस्तेन०	।।३६।।	मधु।
गर्ज गर्ज क्षणं मूढ़०	।।३८।।	मधु।
अर्ध निष्क्रान्त एवासौ०	।।४२।।	नारियल।

ॐ अम्बे ऽअम्बिके ऽअम्बालिके ....स्वाहा। महा आहुति पूर्ववत् ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सर्वायुधायै महालक्ष्म्यै नमः महाआहुतिं समार्पयामि स्वाहा।। (आहुति में विशेष भैंस का घी) ॐ अम्बे नमः स्वाहा। ॐ अम्बिके नमः स्वाहा। अम्बालिके नमः स्वाहा।। से तीन आहुति घी की देवें।

चौथा अध्याय

शूलेन पहिनो देविः श्लोक सं. २४ से तैररस्मान् रक्ष सर्वतः।। तक चार मंत्रो का पाठमात्र कर ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा इस मंत्र से चार आहुति प्रदान करें।

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यै०	।।२६।।	गन्ध पुष्प।
भक्त्या समस्तैः०	।।३०।।	कपूर धूप की।
इत्येतत्किथितं भूप०	।।४०।।	मावा पेड़ा।

ॐ अम्बे ऽअम्बिके० ....ॐ स्वाहा।। महाआहुति पूर्ववत्– ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहन्नायै सर्वायुधायै अष्टाविंशति वर्णात्मिकायै महालक्ष्यै नमः। महाआहुतिं समर्पयामि।।

ॐ अम्बे नमः स्वाहा। ॐ अम्बिके नमः स्वाहा।। ॐ अम्बालिके नमः स्वाहा। तीन आहुति घी की देवें। आहुति में विशेष तिलयव डाल देवें।

पाँचवाँ अध्याय

पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्याम्० ।।२।। हलुवा।

नमोदेव्यैमहादेव्यै० श्लोक सं० ६ से ८२ तक हलुवा या खीर।

स तत्र गत्वा०	।।१०४।।	सरियाली।
यो मां. जयति संग्रामे०	।।१२०।।	सुरमा।
अवलिप्तासि मैवं०	।।१२३।।	सरियाली।

ॐ अम्बे ऽअम्बिके०....... ॐ स्वाहा। महा आहुति पूर्ववत्– ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सर्वायुधायै कामबीजाधिष्ठात्र्यै श्री महासंरस्वत्यै नमः महा आहुतिं समर्पयामि।।

(आहुति के लिए विशेष ईख व केला।)

पुनः तीन आहुति घी से देवें–

ॐ अम्बे नमः स्वाहा। ॐ अम्बिके नमः स्वाहा। ॐ अम्बालिके नमः स्वाहा।।

छठा अध्याय

इत्युक्तः सोऽपि धावताम्० । ।१३ । । सुरमा ।
अथक्रुद्ध महासैन्यं । । १४ । । गुलाल ।
ततः धूतसट कोपात् । ।१५ । । गुग्गुल ।
ॐ अम्बे ऽअम्बिके०.........नमः स्वाहा । महाआहुति पूर्वत् ।
ॐ सांगायै सपरिवारायै सर्वायुधायै सवाहनायै वाग्भवबीजाधिष्ठात्र्यै श्री महासरस्वत्यै महाआहुतिं समर्पयामि । ।
पुनः तीन आहुति घी से देवें–
ॐ अम्बे स्वाहा । ॐ अम्बिके स्वाहा । ॐ अम्बालिके स्वाहा ।

सातवाँ अध्याय

ततः कोप चकारोच्चैः । ।५ । । कपूर युक्त कज्जल ।
विचित्र खट् वांगधरा० । ।७ । । छुवारे ।
ॐ अम्बे ऽअम्बिके०......ॐ स्वाहा । महा आहुति पूर्ववत् ।
ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सर्वायुधायै धूम्राक्ष्यै नमः महा आहुति समर्पयामि । ।
पुनः तीन आहुति घी से देवे–
ॐ अम्बेनमः स्वाहा । ॐ अम्बिकेनमः स्वाहा । ॐ अम्बालिके नमः स्वाहा । ।

आठवाँ अध्याय

मच्छस्त्रपात् संभूतान्० ।।५४।। लालचन्दन।
मुखने कालि जगृहे० श्लोक संख्या ५७ से ६३ तक कपिकाष्ट ॐ अम्बे ऽअम्बिके०....ॐ स्वाहा। महाआहुति मे विशेष लालचन्दन, ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सर्वायुधायै रक्ताक्ष्यै देव्यै नमः महाआहुतिं समर्पयामि।। पुनः तीन आहुति घी की देवें–
ॐ अम्बे नमः स्वाहा। अम्बिके नमः स्वाहा। ॐ अम्बालिके नमः स्वाहा।।

नवाँ अध्याय

ततः सिहो महानादे० ।।२।। केला।
पुनश्च कृत्वा० ।।३०।। सरियाली।
ॐ अम्बेऽअम्बिके०......ॐ स्वाहा। महाआहुति में विशेष विल्वफल ॐ सांगायै सपरिवारायै संवाहनायै सायुधायै त्रिशूल पाश धारिण्यै सिंह वाहनायै नमः महाआहुतिं समर्पयामि।।
पुनः तीन घी की आहुति–
ॐ अम्बे स्वाहा। ॐ अम्बिके स्वाहा। ॐ अम्बालिके स्वाहा।।

दसवाँ अध्याय

ततः शरशतैर्देवी० ।।१४।। धनुष वाण।

ॐ अम्बेऽअम्बिके०......ॐ स्वाहा।। महाआहुति में विशेष पुष्प। ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै महाकाल्यै नमः महा आहुति समर्पयामि।। पुनः तीन आहुति घी से–

ॐ अम्बे स्वाहा। ॐ अम्बिके स्वाहा। ॐ अम्बालिके स्वाहा।।

एकादश अध्याय

एकादश अध्याय में प्रत्येक मंत्र से खीर का हवन तथा विशेष आहुति निम्नवत् देवे, सर्व स्वरूपे सर्वेशे० मंत्र का पाठ मात्र कर ॐ महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा कहकर आहुति देवे।।२४।।

रोगानशेषान० ।।२७।। गिलोय।

प्रणताना प्रसीद त्वं० ।।३५।। कपूर।

सर्वाबाधा प्रशमनं ।।३६।। कालीमिर्च।

नन्दगोप गृहे जाता० ।।४२।। मखन मिश्री।

भक्षयन्त्याश्च० ।।४४।। अनार के फल फूल।

ततः शतेन नेत्राणां० ।।४७।। गेन्दा के पुष्प से।

शाकम्भरीतिविख्याता० ।।४९।। हरे शाक से।

यदारुणाख्य० ।।५२।। कमल पुष्प।

ॐ अम्बेऽअम्बिके०...ॐ स्वाहा। महा आहुति में विशेष खीर। ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै सर्वनारायण्यै नमः महा आहुतिं समर्पयामि।। पुनः तीन आहुति घी से–

ॐ अम्बे स्वाहा। ॐ अम्बिके स्वाहा।। ॐ अम्बालिके स्वाहा।।

बारहवाँ अध्याय

उपसर्गानशेषांस्तु	।।८।।	सरसों।
बलिप्रदाने पूजायाम्	।।६।।	नारियल।
सर्वाबाधा विनिर्मुक्तो	।।१३।।	मोती।
बालग्रहाभिभूतानां	।।१८।।	सरसों।
सर्वममैतन्महात्म्यं	।।२०।।	लालचन्दन।
विप्राणां भोजनैः होमैः	।।२६।।	हलवामिठाई।
तयैतन्मोह्यते विश्वं	।।३७।।	वेल।

ॐ अम्बेऽअम्बिके०....ॐ स्वाहा।। महाआहुति में गोरोचन व गेंदे के पुष्प।

ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै वालात्रिपुर सुन्दर्यै नमः महाआहुतिं समर्पयामि।। पुनः तीन आहुति घी से देवें। ॐ अम्बे स्वाहा। ॐ अम्बिके स्वाहा। ॐ अम्बालिके स्वाहा।।

तेरहवाँ अध्याय

अर्हणं चक्रतुस्तस्याः ।।१०।। पुष्प धूप चन्दन।।
ददतुस्तौ वलिं चैव ।। १२।। अनेक प्रकार के फल।।
ॐ अम्बेऽअम्बिके....ॐ स्वाहा।। महा आहुति में विशेष श्रीफल ॐ सांगायै सपरिवारायै सवाहनायै सायुधायै त्रिपुर सुन्दर्यै नमः महाआहुतिं समर्पयामि।। पुनः तीन आहुति घी से देवें।

ॐ अम्बे स्वाहा। ॐ अम्बिके स्वाहा। ॐ अम्बालिके स्वाहा।। ।।इति दुर्गा याग विधानम्।।

।।शुभम्।।

।। अन्य होम।।

इष्ट देवताभ्यो नमः स्वाहा, कुलदेवताभ्योनमः स्वाहा।।
यदि किसी मंत्र का जप किया गया हो तो उसी मंत्र से जप का दशांश हवन कर लेंवे।

।। अथ उत्तर पूजनम्।।

यज्ञ मण्डप में आवाहित देवताओं का उत्तर पूजन उसी क्रम से करें जिस क्रम से प्रतिदिन देवताओं का पूजन किया गया हो। संक्षेप में उत्तर पूजन यहाँ पर दे रहें हैं। संकल्प कर के पञ्चोपचार से पूजन कर लेवें–

ॐ तत्स० कृतस्य अमुक....यज्ञ कर्मणः साङ्गत्व सिद्धये मृडनामाग्नि सहित आवाहित देवतानां उत्तर पूजनं करिष्ये।।

ॐ गणानान्त्वा गणपति० गणपतये नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि। गंधाक्षत आदि समर्पण कर देवें।

ॐ इमं में वरुण श्रुधि हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके।। वरुणाय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।। ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीद् सदन् मातरं पुरः पितरं च प्रयन्त्स्वः।। गौर्यादि षोडश मातृका देवेभ्यो नमः।। आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।। ॐ ॐकार, श्री, घृतमातृका, अष्टवसु, देवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

ॐ ग्रहा ऽ ऊर्जा हुतयो व्यन्तो व्विप्राय मतिम्। तेषांव्विशिप्प्रियाणां वोऽहमिष मूर्ज्ज ँ समग्रभ मुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषतेयोनिरिद्राय त्वा जुष्टतमम्।। सूर्यादिनवग्रह देवताभ्योनमः।। आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

ॐ वास्तोस्पते प्रतिजानी ह्यस्मान् स्वोवेशो अनमीवो भवानः। यत्वेमहेप्रतितन्नौ जुषस्व शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।। ॐ वास्तु देवताभ्यो नमः।। आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

।। षोडषस्तंभ उत्तर पूजनम्।।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरुस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽ आवः। सवुध्न्या ऽउपमा ऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।१।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा।।२।।

ॐ नमस्ते रुद्रऽमन्यव उतोतऽ इषवेनमः। वाहुभ्यां मुतते नमः।।३।।

ॐ त्रातारमिन्द्र मवितारमिन्द्र ँ हवेहवे सुहव ँ शूरमिन्द्रम। ह्वयामि शक्रं पुरहूतमिन्द्र ँ स्वस्तिनोमघवा धात्विन्द्रः।।४।।

ॐ चित्रं देवानामुदगादनी कं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आप्रा द्यावा पृथिवी ऽअन्तरिक्ष ँ सूर्यऽ आत्मा जगत स्तस्थुषश्च।।५।।

ॐ गणानान्त्वां गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे

वसोमम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।६।।
ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः स ँ स्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपो ऽ सि।।७।।
ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽ उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महि जातं तेऽअर्वन्।।८।।
ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।६।।
ॐ वायुरग्रेगाः यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम्।। शिवोनियुद्भिः शिवाभिः।।१०।।
ॐ सोम ँ राजानमवसे ऽग्निमन्वारभामहे। आदित्यान् विष्णु ँ सूर्य ब्रह्माणं च बृहस्पति ँ स्वाहा।।११।।
ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके।।१२।
ॐ सु गा वो देवाः सदना ऽ अकर्म्म य ऽ आजग्मेद ँ सवनं जुषाणाः। भरमाणा वहमाना हवीँष्यस्मे धत वसवो वसूनि स्वाहा।।१३।।
ॐ सोमोधेनुँ सोमो ऽ अर्वन्तमाशुँ सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति। सादन्यं विदथ्यँ सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै।।१४।।
ॐ बृहस्पते ऽ अति यदर्यो ऽ अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतु

मज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋत प्रजात् तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।१५।।

ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्।।१६।।

ब्रह्मादि षोडष स्तंभ देवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रँ हवे हवे० इन्द्रादिदश दिग्पाल देवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

संक्षिप्त पूजन कर लेवें।

चतुर्वेद पूजनम्

ॐ अग्निमीले पुरोहितं० ऋग्वेदायनमः।।

ॐ इषेत्वोर्जे त्वा वायव० यजुर्वेदायनमः।।

ॐ अग्न आयाहि वीतये० सामवेदाय नमः।।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय० अथर्ववेदायनम।।

आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

।। प्रधान देवस्य उत्तरांगपूजनम्।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़मस्य पाँ सुरे स्वाहा। विष्णवे नमः आवाहयामि स्थापयामि, पूजयामि।

ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिव तराय च।।
रुद्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखाय ऽ इन्द्र मूर्तये।। चतुः षष्टि योगिनिभ्यो नमः।।
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।
ॐ इष्ट देवता, कुल देवता ग्रामदेवताभ्योनमः
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।
ॐ नहिस्पश० अजरादि क्षेत्रपाल देवताभ्यो नमः।।
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

।। अथ अग्निपूजनम्।।

ॐ अग्नि दूतं पुरोदधे हव्यवाह मुपब्रुवे देवाँ २ ऽ आसादयादिह।। पूर्णाहुत्या मृडनाम अग्नयेनमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेद्यं दक्षिणां च समर्पयामि।।

।। स्विष्ट कृद्धोमः।।

ब्रह्मा से कुशा अन्वारब्ध कर घी की एक आहुति देवें–
ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये न ममः।।१।।
पुन नवाहुतयः–
ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम।।१।।

ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न ममः।।२।।
ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न ममः।।३।।
ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य० इदमग्निवरुणाभ्यां०।।४।।
ॐ स त्वन्नो अग्नेऽ वमो० इदमग्निवरुणाभ्यां०।।५।।
ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिश० इदमग्नये न मम।।६।।
ॐ ये ते शतं वरुण० इदंवरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न०।।७।।
ॐ उदुतमं वरुण० इदं वरुणायादित्ययादितयेन०।।८।।
ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये नमम।।६।।

।। बलिदानम्।।

हाथ मे तिल अक्षत जल लेकर संकल्प करे–

ॐ तत्सदद्य अमुक गोत्रः अमुक शर्म्मा, वर्मा गुप्तोह कृतस्य अमुक यज्ञ कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दशदिक्पाल पूर्वकम् आदित्यादि नवग्रहादि तथा आवाहित प्रतिष्ठापित देवताभ्यो बलिदानञ्च करिष्ये।

जिस क्रम से पूजन तथा हवन किया गया हो उसी क्रम से देवताओं को बलिदान देवें (दीपक उड़द माष दही के ऊपर दीपक रखकर) गणेश हेतु– ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे वसोमम।। आहमजानि

गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतिं साङ्गायसपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं बलिं गृहाण। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य यजमानस्याभ्युदयं कुरु।। आयुः कर्त्ता क्षेमकर्ता शान्ति कर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदो भवः।। अनने बलिदानेन गणपतिः प्रीयतां न मम।। एक आचमन छोड़ दें। गौर्यादि मातृका–ॐ आयं गौः पृश्निर क्रमीद सदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।। ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्याद्यावाहितमातृकाभ्यः साङ्गाभ्यः सपरिवारभ्यः सायुधाभ्यः सशक्तिकाभ्य इमं सदीपम् बलिं गृह्णीत। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य यजमानस्याभ्युदयं कुरुत। आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टिकर्त्र्यः तुष्टिकत्र्यः वरदा भवत।। अनेन बलिदानेन गौर्याद्यावाहितमातरः प्रीयातां न मम।। आचमन डाल दें।।

नवग्रह बलिदान– ॐ ग्रहा ऽऊर्जाहुतयोव्यन्तो विप्रायमतिम्।। तेषां व्विशिप्प्रियाणांवोहमिषमूर्ज्ज ᳪ समग्ग्रभमुपयामगृहीतोसीन्द्रायत्वाजुष्टङ् गृहणाम्म्येषते–योनिरिन्द्रायत्त्वाजुष्ट्तमम्।। ॐ भुर्भुवः स्वः आदित्याद्या–वाहितदेवताभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः इमं बलिंगृह्णीत। मम सकुटुम्बस्य

सपरिवारस्याभ्युदयं कुरुत। आयुकर्तारः क्षेमकर्तारः शान्तिर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः वरदा भवत।। अनेनबलिदानेन सूर्यादिनवग्रहदेवाः प्रीयतां न ममः।।
आचमन डाल दें।

दिक्पाल बलिदान– (यदि अलग–२ बलिदान देना हो तो हवन प्रकरण से अलग–२ मंत्रो से बलिदान देवें। एक तंत्र से निम्नवत् दिक्पाल बलिदान दे–)

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः। अग्नयेनमः। यमाय नमः। निर्ऋतये नमः। वरुणाय नमः। वायवे नमः। सोमाय नमः। ईश्वरायनमः ब्रह्मणे नमः अनन्ताय नमः।। इन्द्रादि दिक्पाल देवताभ्यो नमः साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमंबलिं गृहाण।। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य यजमानस्याभ्युदयं कुरु। आयुकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वर दो भव।। अनेनबलिदानेन इन्द्रादि दिक्पाल देवता प्रीयतां न ममः।। आचमन छोड़ दें। क्षेत्रपाल बलिदान– एक वंशपात्र (बांस की बनी डलिया) में पतल पर कुशा बिछाकर उसके ऊपर एक व्यक्ति के आहार से चौगुना दो गुना या यथाशक्ति प्रमाण उड़द चावल में दही मिलाकर तथा एक जलपात्र रख कर उसमें चतुर्मुख दीपक जलाकर हल्दी सिन्दूर पुष्प कज्जल एवं ध्वजायुक्तबलि रख कर पूजन करें–

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्परऽ एतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता ऽ अमर्त्त्यं व्वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।। भूर्भुवः स्वः भूत प्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनी सहितं क्षेत्रपाल देवताभ्यो गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेधं दक्षिणां च समर्पयामि।। भूभुर्वः स्वः क्षेत्रपालाय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीपम् बलिदानं समर्पयामि।। भो क्षेत्रपाल इमं बलिं गृहाण। मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य यजमानस्याभ्युदयं कुरु। आयुः कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता वरदो भव।।

प्रार्थना

नमो वै क्षेत्रपालस्त्वं भूत–प्रेतगणैः सह।
पूजांवलिं गृहाणेदं सौम्यो भवतु सर्वदा।।
अनने बलिदानेन क्षेत्रपालः प्रीयताम् न.ममः।।

अब बलि ले जाने वाला उस बलि को सपरिवार यजमान के मस्तक के उपर घुमाकर चौराहे पर रख दे, यजमान बलि ले जाने वाले के पीछे द्वार तक जाकर निम्न मंत्र से जल के छीटे देवे।

ॐ हिङ्काराय स्वाहा, हिङ्कृताय स्वाहा, क्रन्दते स्वाहा ऽ वक्रन्दाय स्वाहा, प्रोथते स्वाहा प्रपोथाय स्वाहा, गन्धाय स्वाहा, घ्राताय स्वाहा, निविष्ठायस्वाहोपविष्ठाय स्वाहा, सन्दिताय स्वाहा,

बल्गते स्वाहा, आसीनाय स्वाहा, शयानाय स्वाहा, स्वपते स्वाहा, जाग्रते स्वाहा, कूजते स्वाहा, प्रबुद्धाय स्वाहा, विजृम्भमाणाय स्वाहा, विचृताय स्वाहा, स ँ हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहाऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा।। मंत्र पढ़कर जल डालने के बाद यजमान दोनों हाथ पैर को धोकर पुनः अन्य यज्ञ मण्डप के कार्य सम्पन्न करे।

।। पूर्णाहुतिः ।।

नारियल को लाल वस्त्र में लपेट कर वारह, छ या चार वार स्रुवा से घी निकालकर सूची में रख उसके उपर नारियल स्थापित कर पूजन करे।

ॐ पूर्णाहुत्यै नमः गन्धाक्षतं पुष्पं धूप दीप नैवेध च समयामि।।

संकल्प– ॐ अद्येत्यादि देशकालौ सङ्कीर्त्य मम मनो ऽ भिलषित धर्मार्थ कामादियथेप्सितायुरारोग्यैश्वर्य पुत्र–पौत्र सुख प्राप्तये ब्राह्मणद्वारा मत्कारिते अमुक विष्णुयाग (रुद्रयाग वा दुर्गायाग) कर्मणि परिपूर्णता सिद्धये बसोधारासमन्वितं पूर्णाहुति होममहं करिष्ये।

यजमान सपत्नीक खड़ा होकर मंगल घोष के साथ पूर्णाहुति हवन निम्न मंत्र से करे– ॐ मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृतऽआ जात मग्निंम्। कवि ँ सम्राज मतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः।।१।। ॐ पूर्णादर्व्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। व्वस्नेव

व्विक्क्रीणावहा ऽइषमूर्ज ँ शतक्क्रतो स्वाहा।।२।।

अथवा

विष्णुयाग मे– ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा।। ॐ स्वाहा।।

रुद्रयाग में– ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवायच नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिव तराय च।।ॐ स्वाहा।।

दुर्गायाग में–नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणाताः स्मताम्।। ॐ स्वाहा।।

अब श्रुवा के अवशिष्ट घी को प्रोक्षणी पात्र में त्याग दें। पुनः स्त्रुचि द्वारा अविच्छिन्न घृतधारा अग्नि में देवें–

।। वसोर्धरा होमः।।

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य ग्योनिर्घृते श्रितोघृतम्बस्य धाम। अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।। ॐ व्वसोः पवित्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॐ स्वाहा।। इदं अग्नये वैश्वानराय नममः।।

अग्निप्रार्थना–ॐ स्वस्ति श्रद्धा यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियंबलम्। तेजआयुष्यमारोग्यं देहि में हव्यवाहन।।१।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यून सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।२।।

ॐ यज्ञ पुरुषाय नमः।।

।। अथ त्रयायुषकरणम् ।।

यजमान अग्नि की परिक्रमा कर अग्नि के पश्चिम भाग में बैठकर पूर्व मुख कर स्रुवा द्वारा यज्ञ कुण्ड से भस्म निकाले, अनामिका अंगुली से यजमान के ललाट, ग्रीवा, वाहु, हृदय पर आचार्य भस्म लगावें।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपश्य त्र्यायुषम्ः यद्देवेषु त्र्यायुषम् तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम् ।।

तत्पश्चात् प्रोक्षणी पात्र में स्थित घी को यजमान सूघ लेवे आचमन कर प्रणीता पात्र में रखी पवित्री से प्रणीता जल को अपने मस्तक में छिडकर कुशाओ को अग्नि में त्याग दे।

।। पूर्णपात्रा दानम् ।।

अद्य कृतस्य अस्मिन् यज्ञ कर्मणो इदं पूर्णपात्र सदक्षिणां ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

ब्रह्मा के लिये पूर्णपात्र दान कर ब्रह्मा **'अद्यौ स्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रति गृह्वातु''** यह वाक्य कहे। अग्ने पश्चात् प्रणीता विमोकः कुर्यात् ।।

अग्नि के पीछे जल युक्त प्रणीतापात्र को उलट देवें। ब्राह्मण गिरे हुए जल से सकुटुम्ब यजमान के मस्तक पर उपयमन कुशाओं से मार्जन करे—

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ।। मार्जनोपरान्त उपयमन कुशाओ

को अग्नि में छोड देवे।। ततः ब्रह्म ग्रन्थि विमोकः। पश्चात् ब्रह्मा कुश निर्मित ब्रह्माकी ग्रन्थि को खोल देवें।

।। बर्हिहोमः।।

जिस प्रकार यज्ञ कुण्ड के चारों ओर कुशाएं बिछाई थी उन्हें उसी क्रम से उठाकर घी में भिगोकर निम्नमंत्र से होम कर देवें। ॐ देवागातु विदोगातुं वित्वा गातु मित। मनसस्पत इमं देवयज्ञ ᳪ स्वाहा वातेधाः स्वाहा।।

यज्ञनारायण की आरती

ॐ आरात्रि पार्थिव ᳪ रजः पितुर प्रायी धामभिः। दिवः सदा ᳪ सि वृहती वितिष्ठस आ त्वेषं वर्त्ततेतमः।।१।।
ॐ इद ᳪ हविः प्रजननं मे ऽ अस्तु दशवीर ᳪ सर्वगण ᳪ स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्य भयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयोरतो ऽ अस्मासु धत।।२।।

आरती

ॐ जय जगदीश हरे स्वमिजय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट क्षण में दूर करे।। ॐ जय०।।
जो ध्वावै फल पावै, दुख बिन से मनका।। प्रभु०।।
सुख सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तनका ॐ जय०।।
मात–पिता तुम मेरे, शरण पड़ू किसकी।। प्रभु०।।
तुम बिन और न दूजा, आश करू जिसकी ॐ जय०।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामि ।। प्रभु०।।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॐ जय०।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता।। प्रभु०।।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॐ जय०।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति।। प्रभु०।।
किस विधि मिलू दयामय, तुमसे मै कुमति ॐ जय०।।
दीन बन्धु दुख हर्त्ता, तुम रक्षक मेरे।।प्रभु०।।
अपने शरण लगाओ, द्वार पड़ा तेरे ।। ॐ।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।। प्रभु०।।
श्रद्धा–भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा।।ॐ।।

।। अथ पुष्पान्जलि ।।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।। ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। समे कामान् कामकामायं मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुवेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ।। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्य माधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्र पर्यन्तायाः, एकराडिति ।। तदप्येषु श्लोको ऽभिगीतोमरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आविक्षितश्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ।। विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। संबाहुभ्यां धमति संपतत्रेर्द्यावा भूमि जनयन् देव एकः ।। ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्निमग्नाय धीमहि ।। तन्नः अग्निः प्रचोदयात् ।।

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथाकालो भवानि च।
पुष्पाञ्जलि मया दत्तं गृहाणं परमेंश्वर ।। पुष्पाञ्जलि चढ़ाकर परिक्रमा कर लेवें – ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिण पदे–पदे ।।

अब यज्ञ नारायण की आरति के बाद यज्ञ कुण्ड में विखरे हुए शाकल्य तथा यज्ञ भस्मी इकट्ठा कर एवं कलश के ऊपर शालग्राम की मूर्ति रखकर यज्ञ मण्डप में पूर्व रखी ध्वाजादि को लेकर नदी या तीर्थ स्थान में जाकर वहां पहले जल का पूजन करे। फिर ध्वजादि को रोप कर, कलश जल एवं शाकल्यादि को तीर्थ जल में डाल देवें फिर जल में घी की बाहर आहुतियां दें।

ॐ अद्भ्यः स्वाहा। इदं अद्भ्यो न मम।

ॐ वार्भ्यः स्वाहा। इदं वार्भ्यो न मम।

ॐ उदकाय स्वाहा। इदं उदकाय न मम।

ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा। इदं तिष्ठन्तीभ्यो न मम।

ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा। इदं स्रवन्तीभ्यो न मम।

ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा। इदं स्यन्दमानाभ्यो न मम।

ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा। इदं कूप्याभ्यो न मम।

ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा। इदं सूद्याभ्यो न मम।

ॐ धार्याभ्यः स्वाहा। इदं धार्याभ्यो न मम।

ॐ अर्णवार्य स्वाहा। इदं अर्णवाय न मम।

ॐ समुद्राय स्वाहा। इदं समुद्राय न मम।

ॐ सरिराय स्वाहा। इदं सरिराय न मम।

द्वादश आहुति देकर के तीर्थ के जल से संकल्प लेकर दशांश तर्पण मार्जन करे।

जिस मंत्र क्रम से होम किया गया हो, उसी क्रम से होम का दशांश मूल मंत्र से 'अमुक देवतां तर्पयामि' तर्पण कर तर्पण का दशांश 'अमुक देवतां मार्जयामि' से यजमान के मस्तक पर जल के छीटे देवें। कलश में जल भर कर तीर्थ से पुनः यज्ञ मण्डप में आकर कलश रख कर प्रधान पीठ के पास तिलराशी के ऊपर कांस्य पात्र रखकर उसमें गाय का घी पिघलाकर रख देवें और यजमान सपत्नीक अपना मुख घी में देखे, मंत्र—ॐ रूपेण वो रूप मब्भ्यागान्तुथो वो ब्विश्ववेदाव्विभजतु। ऋतस्य पथाप्प्रेत चन्द्रदक्षिणा व्वि श्वः पश्य व्व्यन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः।। यजमान पात्र में छाया देखकर सुवर्ण या दक्षिणा डाल दें। संकल्प—अद्येत्यादि० ..... इदं आज्यपात्रं सदक्षिणाकम् अमुक गोत्रोत्पन्नाय अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

।। दक्षिणादानम्।।

यजमान पूर्व मुख, ब्राह्मण उत्तर मुख बैठ, यजमान पहले आचार्यादि का पूजन करे, फिर हाथ मे जल अक्षत लेकर— ॐ तत्स० अमुकहवनात्मकयागस्य साङ्गता सिद्धये आचार्यादीन् पूजयिष्ये दक्षिणांच दास्ये। वा आचार्यदिभ्यो ऋत्विग्भ्यः सूक्तपाठकेभ्योमंत्रजापकेभ्यो हवन कर्तृभ्यो ऽन्येभ्यश्च गाह्मणेभ्यो दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

।। इति दक्षिणा संकल्पः।।

।। अथ गोदान विधि।।

यजमान सपत्नीक पूर्व मुख कर आसन के ऊपर बैठकर पहले ब्राह्मण का पूजन करे– ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽआवः। सुवध्न्या उपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।। गन्ध अक्षतादि से पूजन कर, यजमान हाथ में वरण सामग्री लेकर संकल्प करें– ॐ विष्णु ३ अद्येहं अमुकगोत्रो ऽ मुकराशी सपत्नीको ऽहम् श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलवाप्तये सकल कामना सिद्धये च कृतैतद् श्री यज्ञ पुरुष प्रीतये गो पूजन तथा ब्राह्मण वरणं च करिष्ये। संकल्प कर गो का आवाहन करें– आवाहनम्– ॐ इरावती धेनुमती हि भूतँ सूयवसिनी मनवे दशस्या। व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेतें दाध्यर्त्थ पृथिवी मभितो मयूखैः स्वाहा।। आवाहयाम्यहं देवीं गां त्वां त्रैलोक्य मातरम्। यस्याः स्मरण मात्रेण सर्वपापै प्रमुच्यते।। गन्ध अक्षत पुष्प लेकर देवताओं का आवाहन– ॐ सवत्सा गवे नमः।। श्रृंग मूलयोः ब्रह्म विष्णुभ्यां नमः। श्रृङ्गाग्रे सर्व तीर्थेभ्यो नमः।। शिरोमध्ये रुद्राय नमः।। नाशावंशे षण्मुखाय नमः।। कर्णयो अश्विभ्यां नमः।। नेत्रयोः शशि भाष्कराभ्यां नमः।। दन्तेषु वायवे नमः।। जिह्वायां वरुणाय नः।। हुँ कारे सरस्वत्यै नमः।।

गण्डयो मास पक्षाभ्यां नमः।। ओष्ठयोः सन्ध्या द्वयाय नमः।। ग्रीवायां इन्द्राय नमः।। उरसि साध्येभ्यो नमः।। जंघयो धर्माय नमः।। खुरमध्ये गन्धर्वेभ्यो नमः।। पृष्ठे एकादश रुद्रेभ्यो नमः।। सर्व सन्धिसु वसुभ्यो नमः।। श्रोण्यो पितृगणेभ्यो नमः।। पुच्छे सोमाय नमः।। पुच्छ केशेषु सूर्य रश्मिभ्यो नमः।। अधोगात्रेषु द्वादशदित्येभ्यो नमः।। गो मूत्रे गङ्गायै नमः।। गोमये यमुनाये नमः।। क्षीरे सरस्वत्यै नमः।। दध्नि नर्मदायै नमः।। घृते वन्हये नमः।। रोमेषु कोटिदेवेभ्यो नमः।। उदरे पृथिव्यै नमः।। स्तनेषु चतुः सागरेभ्यो नमः।। पाद्यम्–सौरभेयि सर्वहिते पवित्रे पापनाशिनि। प्रतिगृह्णमया दत्तं पाद्यं त्रैलोक्य वन्दिते।। अर्घ्यम्– देहस्था या च रुद्राण्याः शंकरस्य सदाप्रिये। धेनु रूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु।। आचमनीयम्–या लक्ष्मी सर्व भूतेषु या च देवेष्ववस्थिता। धेनु रूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु।।

स्नानम्– सर्व रूपमये मातः सर्वदेव नमस्कृते। तोयमेतत्सुखस्पर्शं स्नानार्थ मयार्पितम्।।

वस्त्रम्– आच्छादनं मयादतं सम्यक् शुद्धं च निर्मलम्। सुरभिर्वस्त्र प्रदानेन प्रीयतां परमेश्वरी।।

चन्दनम्– सर्वदेव प्रियदेव चन्दनं कुङ्कुमान्वितम्।

कर्पूरादि समायुक्त गोर्गन्धः प्रतिगृह्यताम्।।
अक्षतम्– अक्षतं निर्मल देवि रक्त चन्दन मिश्रितान्।
गृहाण परमा प्रीत्या गोस्त्वं त्र्यैलोक्य वन्दिताः।।
आभूषणम्– स्वर्ण श्रृङ्ग, रौप्य खुराणि ताम्रपृष्टा, गल भूषणार्थं घण्टाम्, दोहनार्थ कांस्य पात्रं समर्पयामि।। गो की शोभा के लिए सोने की सींग, चाँदी के खुर, ताम्बे की पीठ, घण्टा, दूध दोहने के लिए कांस्य पात्र आदि आभूषण समर्पण कर दें।
पुष्पमाला– पुष्पमाला तथा जाति पाटला चम्पकानि च। पुष्पाणि गृह धेनो त्वं सर्व पाप प्रणाशिनि।।
धूपम्– आनन्द कृत सर्वलोकं देवानां च सदाप्रिये।
गोस्त्वं पाहि जगन्माता धूपोऽयं प्रति गृह्यताम्।।
दीपम्– साज्यं सद्वर्तिकायुक्तं वह्निना योजितां मया।
दीपं गृहाण देवेशि त्र्यैलोक्यतिमिरापहम्।।
गोग्रासम्– सुरभिस्त्वं जगन्माता नित्यं विष्णुपदेस्थिता,
गोग्रासं च मया दतं नैवेद्य प्रतिगृह्यताम्।।

गोदान संकल्प

ॐ विष्णुः ३ नमः परमात्मनें श्री पुराण पुरुषोतमस्य तत्सत् पृथिव्यां श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य जम्बूद्वीपे भरतखंडे भारतवर्षे अमुकक्षेत्रे श्री भागीरथ्याः अमुकदिग्विभागे अद्ये ब्रह्मणो

ऽह्नि द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमस्य कलियुगस्य प्रथम चर्णे वौद्धावतारे ऽमुक नाम्नि संवत्सरे ऽयने ऋतौ मासे पक्षे तिथौ वारे नक्षत्रे योगे करणे अमुक गोत्रो ऽमुकोऽहं मम श्रुतिस्मृति पुराणोक्तफलावाप्तये ज्ञाता ऽ ज्ञात अनेक जन्मार्जित कायिक वाचिक मानसिक कर्मजन्य पाप क्षयार्थं दुःस्वप्न ग्रहबाधा शान्तिपूर्वकं धनधान्य आयुरारोग्य वृद्ध्यर्थं श्री यज्ञपुरुष प्रीतये इमां सुपजितांऽलंकृताम् सवत्सां गां अमुक गोत्राया ऽमुक शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।। ब्राह्मण को संकल्प देकर यजमान गाय की परिक्रमा कर लेवें।

ब्राह्मण भोजन संकल्प

कृतस्य अमुक .....साङ्गतासिद्ध्यर्थ यथाशक्ति ब्राह्मणान् भोजयिष्ये।

।। श्रेयोदानम्।।

आचार्य हाथ मे जल अक्षत सुपारी लेकर – **अद्यैत्यादि कृतस्य अमुक यज्ञ कर्मणो यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये।** (प्रतिगृह्यताम) यजमान कहे–प्रतिगृह्णामि। से यजमान ग्रहण करे।

।। अभिषेकमंत्राः ।।

प्रधान कलश के जल में सब पूर्व पूजित कलशों के जल को डालकर दूर्वा एवं पंच पल्लवों से आचार्य तथा अन्य ऋत्विक् उत्तर मुह हो पूर्वाभिमुख बैठे हुए सपरिवार एवं सपत्नीक यजमान का अभिषेक करे–

ॐ आपो हि ष्टा मयोभुवस्ता न ऽ ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे।।१।। यो वः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।।२।। तस्मा ऽ अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।३।। ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।४।। ॐ इमं मे वरुण श्रुधि हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युरा चके।।५।। ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हर्विर्भिः। अहेडमानो वरुणोह बोध्युरुश ꣳ स मा न ऽ आयुः प्र मोषीः।।६।। ॐ त्वन्नो ऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान देवस्य हेडो ऽ अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ꣳ सि प्र मुमुग्ध्यस्मत्।।७।। ॐ स त्वन्नो ऽ अग्ने ऽ वमो भवोती नेदिष्ठो ऽ अस्या ऽ उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुण ꣳ रराणो वीहि मृडीक ꣳ सुहवो न ऽएधि।।८।। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं

विमध्यमं ॐ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो ऽ अदितये स्याम।।९।। ॐ वरुणस्योतम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऽ ऋतसदन्यसि वरुणास्य ऽ ऋतसदनमसि वरुणास्य ऽ ऋतसदनमासीद।।१०।। ॐ भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः। भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम।।११।। ॐ इदमापः प्रवहता वद्यं च मल च यत्। यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपे ऽ अभीरुणम्। आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु।।१२।। ॐ पुनन्तु मापितरः सोम्म्यासः पुनन्तुमा पिता महाः पुनन्तु प्रपितामहाः। पवित्रेण शतायुषा। पुनन्तुमापितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै।।१३।। ॐ पुनन्तुमा देवजनाः पुनन्तु मनसाधियः। पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहिमा।।१४।। देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनौ र्वाहुभ्यां पूष्णौर्हस्ताभ्याम्।।१५।। ॐ अश्विनोर्ब्भैषज्येनतेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येनव्वीर्याया- नादयायाभिषिञ्चामीन्द्रसेन्द्रियेण वलाय श्रियै यशसेऽभिषिञ्चमि।।१६।। ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ॐ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिः ब्रह्मशान्तिः सर्व ॐ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।१७।।

ॐ यतोयतः समीहसे ततो नो ऽ अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।१८।। ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न ऽ आ सुव।।१९।।

ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु।।

आचार्य यजमान को तिलक देवे—

मंत्रार्थाः सफलाः संतु पूर्णासन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तुमित्राणांमुदयस्तवः।।

।। अथ देवताविसर्जनम्।।

यजमान सपत्नीक पुष्प अक्षत देवताओं पर डालता रहे, आचार्य निम्न मंत्र बोले—

ॐ उतिष्ठब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उपप्रयन्तुमरुतः सुदानव ऽ इन्द्रप्राशू र्भवासचा।। ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञ पतिङ्गच्छस्वां योनिङ्गच्छ स्वाहा। एषते यज्ञोयज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्व्ववीरस्तञ्जुषस्व स्वाहा।

गच्छ गच्छ सुर श्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्रगच्छ हुतासन।।
यांतुदेवगणाः सर्वे पूजामादायमामकीम्।
इष्टकामर्थसिद्ध्यर्थं पुरागमनाय च।।
यस्य स्मृत्याच नामोक्त्या तपः यज्ञ क्रियादिषु।
न्यून संपूर्णतां याति सद्योवन्देतमच्युतम्।।

।। शुभम्।।
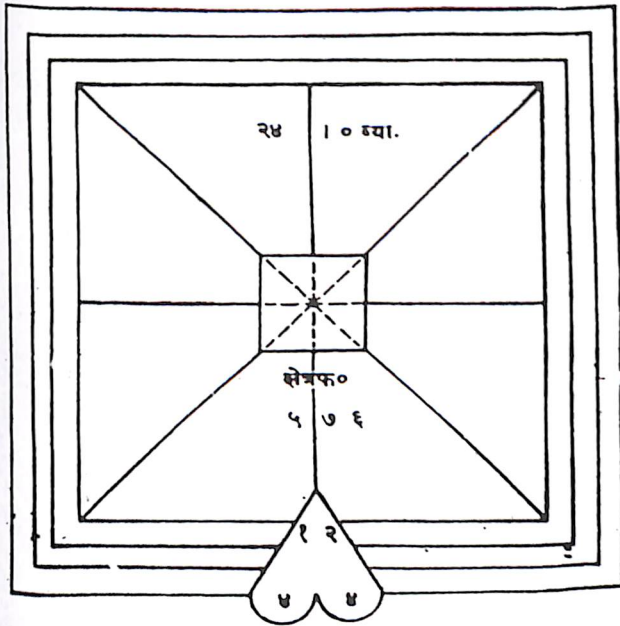
चतुरष्कोणास्रंकुण्डम्

द्विघ्नव्यासं तुर्यचिह्नं सपाशं सूत्रं शंकौ पश्चिमे पूर्वगेऽपि।
दत्वा कर्षेत्कोणयोः पाशतूर्ये स्यादेवं वा वेदकोणं समानम्।।

व्यास १ हाथ उसको दुगना करने से २ हाथ होगा। इसी प्रकार से जितना व्यास हो उसका दुगना करे। उसमें सूत्र सहित पाश के ४ चिह्न करें, उसके बाद दोनों पाशों को पूर्व पश्चिम की कील में फंसाकर दोनों की चतुर्थांश गांठ को पकड़ कर अग्नि तथा नैऋृत्य कोण की तरफ खींचे और वायव्य तथा ईशान कोण की तरफ खींचे तो चतुरस्त्र कुण्ड बराबर सिद्ध होता है। इसी प्रकार सब कुण्डों से पहले चतुरस्त्र क्षेत्र बना ले तब उसके ऊपर दूसरा कुण्ड बनाये।।
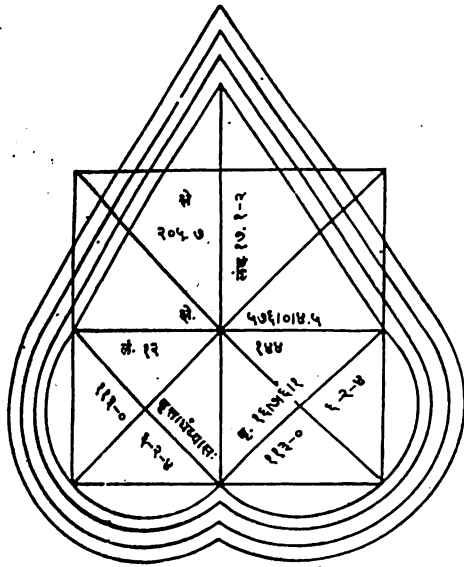
योनिंकुण्डम्

क्षेत्रे जिनांशे पुरतः सरांशान्संवर्ध्य च स्वीयरदांशयुक्तान्।
कर्णांघ्रिमानेन लिखेन्दुखण्डं प्रत्यंकुरोकांद्‌गुणतो भगाभम्।।

प्रकृति क्षेत्र का २४ भाग करे। उसके ५ भाग लें, वह अपने बत्तीसवां हिस्सा से युक्त (बत्तीसवां हिस्सा से युक्त करने पर ५ अं० १ य० २ यूका बना) इतने को प्रकृतिक्षेत्र के मध्य में आगे बढ़ाने पर पीछे के दोनों भाग चतुरस्र में चारों कोण से रेखा देकर कर्णांघ्रि (दोनों के बीच) में परकाल रखकर दो आधावृत्त बनावे और दोनों पार्श्व से आगे के चिन्ह से रेखा देने पर शुद्ध योनिकुण्ड होता है।

अर्धचन्द्र कुण्डम्
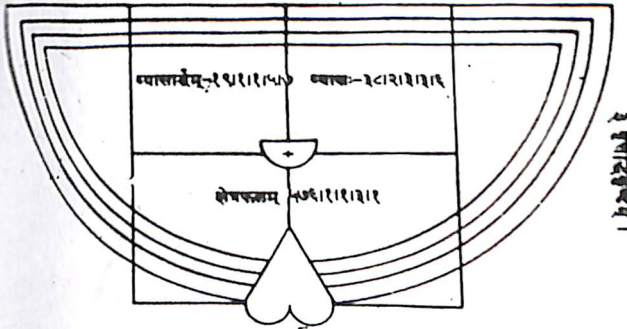
अर्द्धचन्द्रकुण्डम्

स्वशतांशयुतेषु भागहीनः स्वधरित्रीमितकर्कटेन मध्यात्।
कृतवृत्तदलेऽग्रतशच जीवां विदधात्विन्दुदलस्य साधुसिद्धयै

प्रकृति क्षेत्र २४ का पाचवां अंश ले (२ ।६ ।३ ।३ ।१ ।५) वह कैसा हो कि शतांश (शतांश ० ।० ।३ ।० ।४) इसके युक्त ४ अं. ६ यव ६ यूका २ लिक्षा १ कलाग्र इतना जो इषुभाग सो २४ अं० के क्षेत्र में से घटावे तो १६ अ. १ यव १ यूका ५ लिक्षा ४ बालाग्र इतने से चतुरस्र के बीच में परकार रखकर वृत्त का आधा खीचें। वृत्तार्ध के आगे सूत्र देने पर अर्धचंद्र शुद्ध होता है।
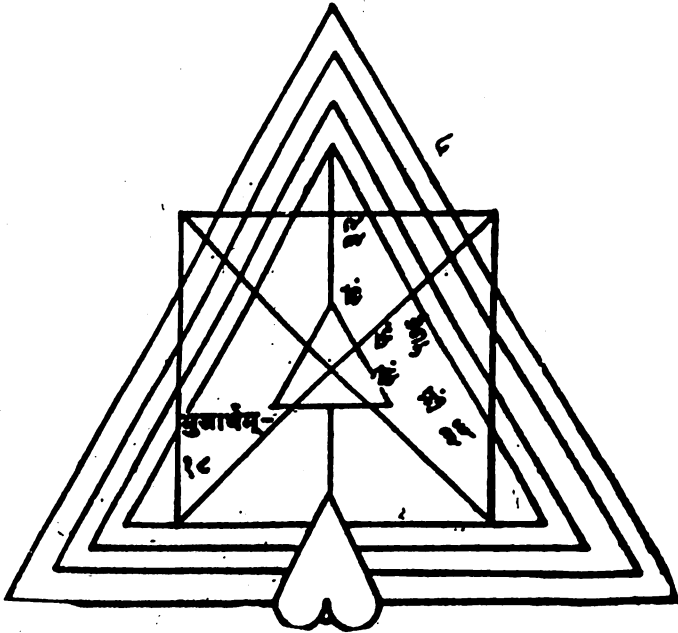
त्रिकोणकुण्डम्

त्रिकोणकुण्डम्

वह्नयंशं पुरतो निधाय च पुनः श्रोणयोश्चतुर्थांशकं
चिह्नेषु त्रिषु सूत्रदानत इदं स्यात्त्र्यस्रिकश्टोज्झितम्।

प्रकृति क्षेत्र का २४ हिस्सा करे। उसमें से तृतीयांश (अर्थात् ८ अंगुल) लेकर प्रकृति क्षेत्र जो चतुरस्र उसमें आगे पूर्व की तरफ बढ़ावे और २४ का चौथा हिस्सा ६ अंगुल बनाये सो छ छ अंगुल चतुरस्र की दोनों कोणों में दक्षिण उत्तर की तरफ बढ़ावे। बाद में तीनों चिह्न से मिलाकर सूत्र देने से त्र्यस्र अर्थात् त्रिकोण कुण्ड सिद्ध होता है।
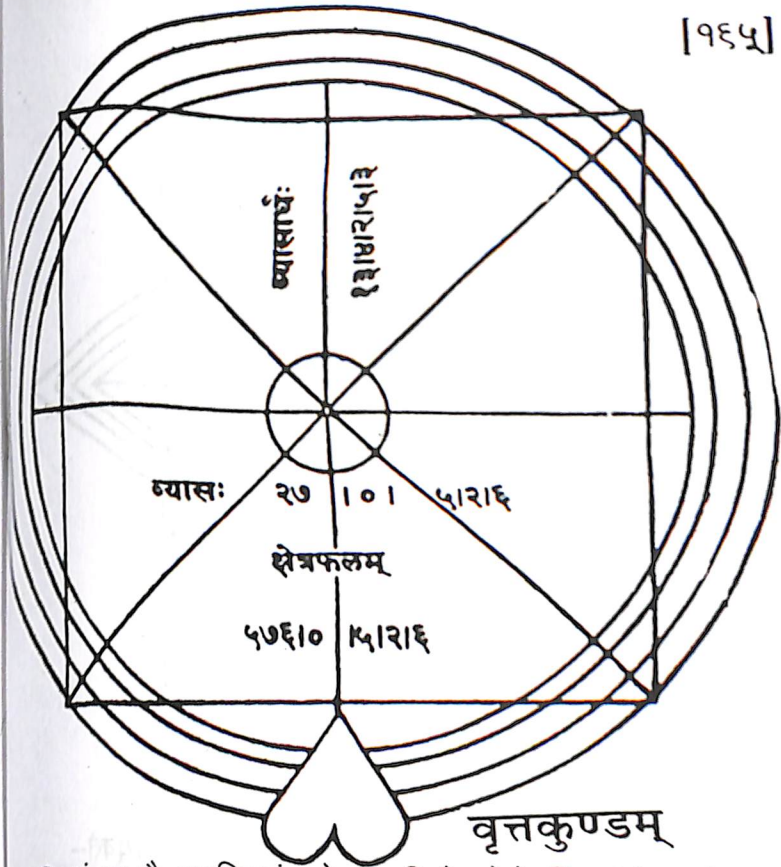
वृत्तकुण्डम्

विश्वां १३ शैः स्वजिनांशकेन सहितैः क्षेत्रे जिनांशे कृते
व्यासार्धेन मितेन मण्डलमिदं स्यादव्टत्तसंज्ञं शुभम्

प्रकृतिक्षेत्र को २४ भाग करे, उस २४ अंगुल से १३ अंगुल लें, वह कैसा १३ अंगुल कि अपने चौबीसवें हिस्से के सहित हो (२४ वाँ हिस्सा ४ अं० २ यू० ५ लि० २ बालाग्र) तब चतुरस्र के बीच में परकार रखकर (१३ ।४ ।२ यूका ५ लिक्षा २ बालाग्र इतने के व्यासार्ध से) वृत्त करे तो शुद्धवृत्त कुण्ड होता है।
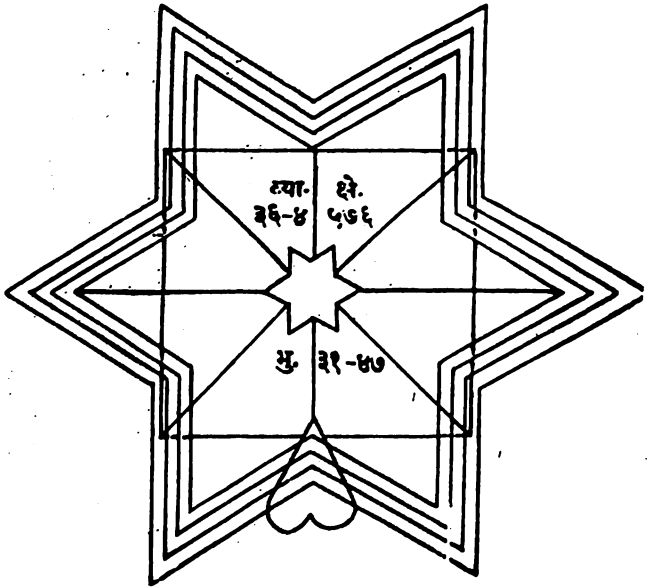
विषमसडकुण्डम्

भक्ते क्षेत्रे जिनांशैर्धृतिमितलवकैः स्वाक्षिशैलांशयुक्ते–
र्व्यासार्द्धान्मण्डले तन्मितधृतगुणके कर्कटे चेन्दुदिक्तः।
षड्चिंह्नेषु प्रदद्याद्रसमितगुणकानेकमेकं तु हित्वा
नाशे संध्यर्तुदोषामपि च वृतिकृतेर्नेत्ररम्यं षडस्रम्।।

अब वायव्य कोण में षट्कोण कुण्ड कहते हैं–प्रकृतिक्षेत्र २४ अंगुल उसमें से १८ अंगुल लें, उस अठारह अंगुल का ७२वां हिस्सा युक्त हो तो ७२वां हिस्सा २ यव बने तो १८ अंगुल २ यव के परकार से वृत्त करना (गोल) उत्तर तरफ से उसी करकार से वृत्त पर सूत्र देने से और सब संधि की रेखा मिटाने से षट्कोण सिद्ध होता है।
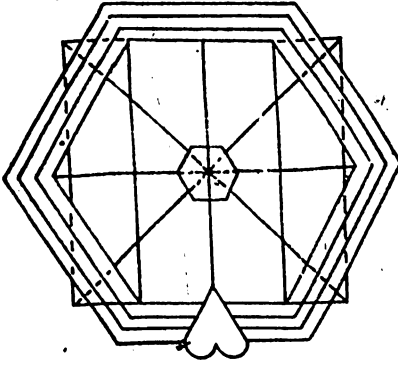
समषडकुण्डम्

अथवा जिनभक्तकुण्डमानात्तिथिभागैः स्वखभूपभागहीनैः।
मितकर्कटोद्भवे तु वृत्ते विधुदिक्तः समष्ड्भुजैः षडस्रम्।।

अब दूसरा षडस्रकुण्ड समभुजमृदगांकार कहते हैं। प्रकृतिक्षेत्र को २४ भाग करे। उसमें से तिथिभाग १५ जो है वह अपने १६० वें भाग से अलग करे तो अलग करने से १४ अं० ७ यव २ यूका परकार से वृत्त (गोल) करे। उस वृत्त में उत्तर दिशा से उसी परकार से ६ चिन्ह करे, छः चिन्हों से परस्पर सूत्र देने और संवृत्ति मिटाने से समभुज षडस्रकुण्ड सिद्ध होता है।
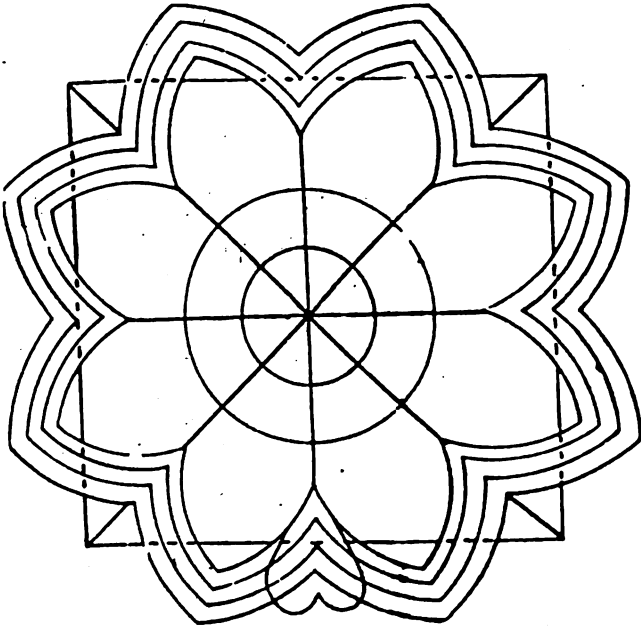
पद्मकुण्डम्

अष्टांशाच्च यतश्च वृत्तशरके तवादिकं कर्णिका।
युग्मे षोडशकेसराणि चरमे स्वाष्टत्रिभोगोनिते।
भक्ते षोडशधा शरान्तरधृते स्युः कर्कटेऽष्टौ छदाः।
सर्वां तां खनकर्णिकांत्यज निजाग्रामोच्चाकां स्यात्कजम्।।

प्रकृतिक्षेत्र २४ के अष्टमांश से एक–एक वृत्त में अष्टमांश बढ़ा–बढ़ा कर ५ वृत्त करे। परन्तु पांचवे वृत्त में वह अष्टमांश अपने ३८ वें हिस्से से अलग करके उस अष्टमांश के व्यासार्ध से २ अं० ७ य० २ यू० १ लिक्षा २ बालाग्र से पांचवां वृत्त बनाये। पहला वृत्त ३ अंगुल, दूसरा वृत्त ६ अं०, तीसरा वृत्त ९ अं०, चौथा वृत्त १२ अं०, पांचवा वृत्त १४ अं०, ७ यव २ यू० १ लि० २ बा० के परकाल से करके अन्तिम वृत्त में १६ चिन्ह करे। दिशा विदिशा या विदिशा दिशा के बीच में पांचवे चिन्ह पर परकाल रखकर दिशा विदिशा में ८ पत्र करे और पत्र के मध्य तथा केसर को छोड़कर कर्णिका के मध्य में बनाने पर स्वच्छ पद्मकुण्ड सिद्ध होता है।
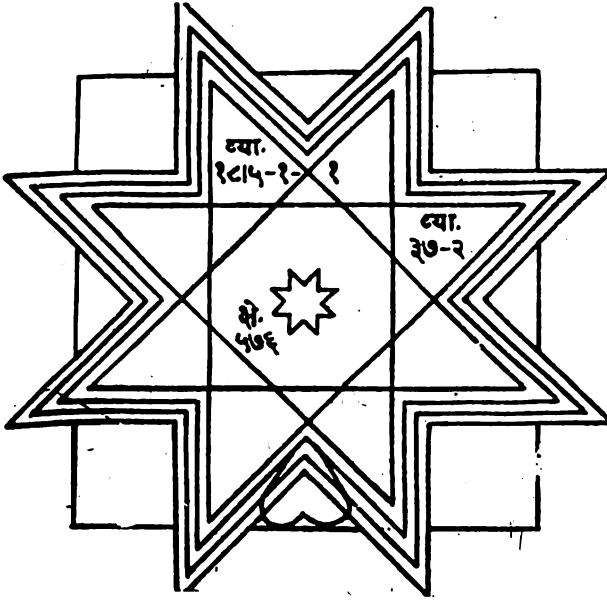
विषमअष्टास्रकुण्डम्

क्षेत्रे जिनांशे गजचन्द्रभागैः स्वाश्लिष्टभागेन युतैस्तु वृत्ते।
विदिग्दिशोरन्तरतोऽष्टसूत्रैस्तृतीययुक्ते रिदभष्टकोणम्।।

प्रकृति २४ इसमें से १८ हिस्सों को अपने २८ वें हिस्से के सहित लें तो १८ अं० ५ य० १ यू० १ लि० १ बालाग्र बनता है। इतने के व्यासार्द्ध को परकाल से वृत्त करे और दिशा विदिशा के बीच में ८ चिन्ह करे। बाद में दो–दो चिन्ह के मध्य में छोड़ छोड़कर तीसरे तीसरे चिन्हों को मिलाकर ८ रेखा बनाये। बाद में वृत्त व संधियों को मिटा दें तो विषम भुज (अर्थात् विषम अष्टकोण कुण्डकोण कुण्ड) होता है।
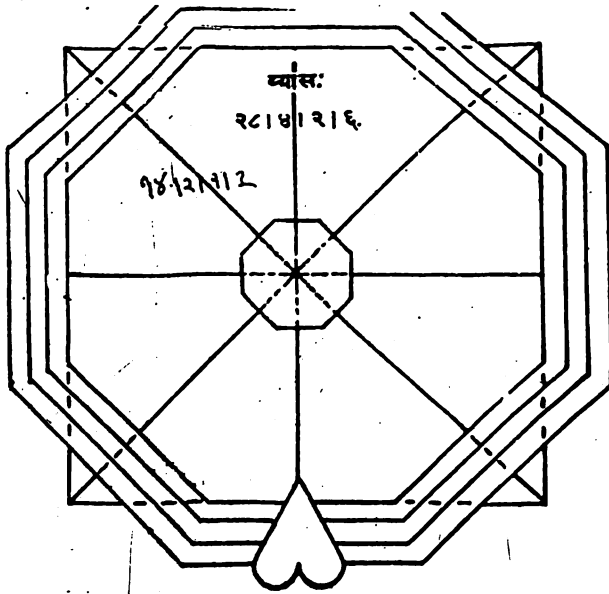
समअष्टास्रकुण्डम्

मध्ये गुणे वेदयमैर्विभक्ते शक्रैर्निजर्ष्यब्धिलवेन युक्तैः।
वृत्ते कृते दिग्विदिशोऽन्तराले गजैर्भुजैःस्यादथवाऽष्टकोणम्।।

दूसरे सम अष्टास्र को मृदगांकार कुण्ड कहते हैं। प्रकृतिक्षेत्र २४ अंगुल में से क्षेत्र १४ अं० लिया। वह १४ अं० कैसा हो कि अपने ४७ वें अंश से युक्त हो तो १४ अं० २ यव ३ यूका के व्यासार्द्ध में परकाल से वृत्त करे। उस वृत्त की दिशा विदिशाओं के बीच में चिन्ह देकर परस्पर चिन्हों को मिलाकर सूत्र देने से सब वृत्त मिलने से मृदंगाकार शुद्ध अष्टास्र कुण्ड होता है।

एकलिंगतोभद्रचक्रम्
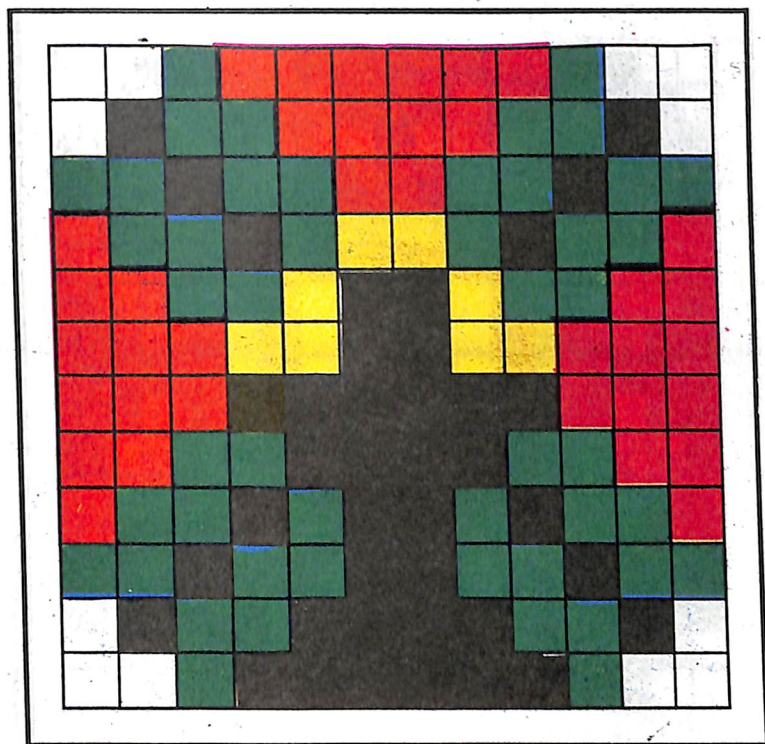
इस 'एकलिंगातोभद्रचक्र' में १३ खड़ी लाइनें, १३ आड़ी लाइनों से कुल १४४ चौकोर बनते हैं। इसमें लाल रंग में मसूर की दाल, हरा रंग में मूंग, पीले रंग में चने की दाल, सफेद रंग में चावल एवं काले रंग में उड़द की दाल भरी जाती है।

चतुर्लिंगतोभद्रचक्रम्
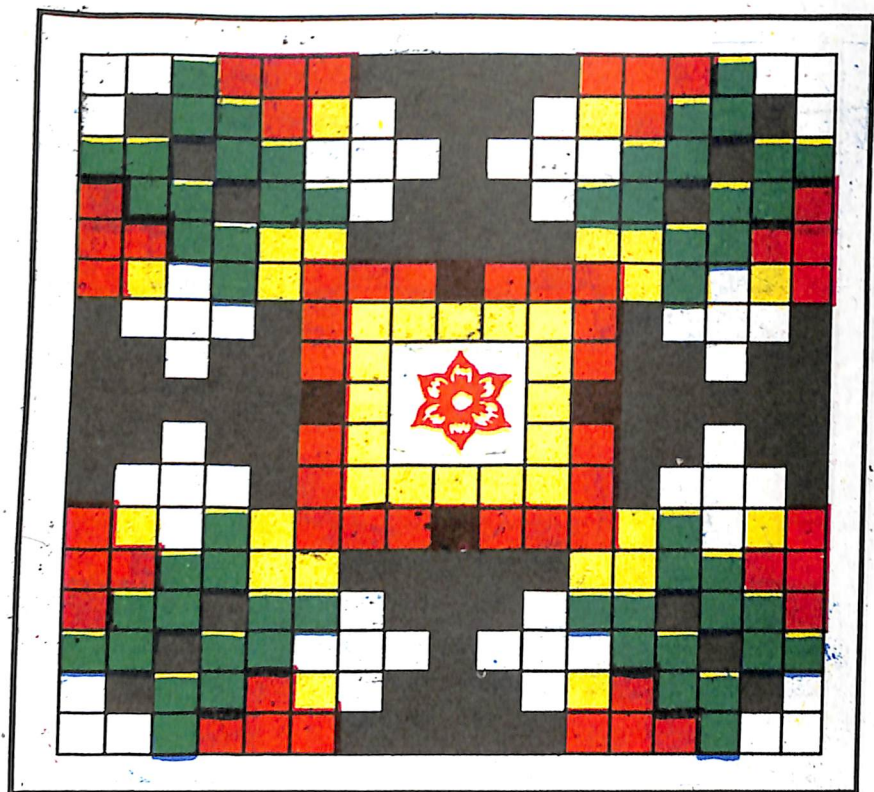
इस 'चतुर्लिंगतोभद्रचक्रम्' में १८ खड़ी लाइनें, १८ आड़ी लाइनों से कुल २८९ चौकोर बनते हैं। इसमें लाल रंग में मसूर की दाल, हरे रंग में मूंग, पीले रंग में चने की दाल, सफेद रंग में चावल एवं काले रंग में उड़द की दाल भरी जाती है।

अष्टलिंगतोभद्रम्
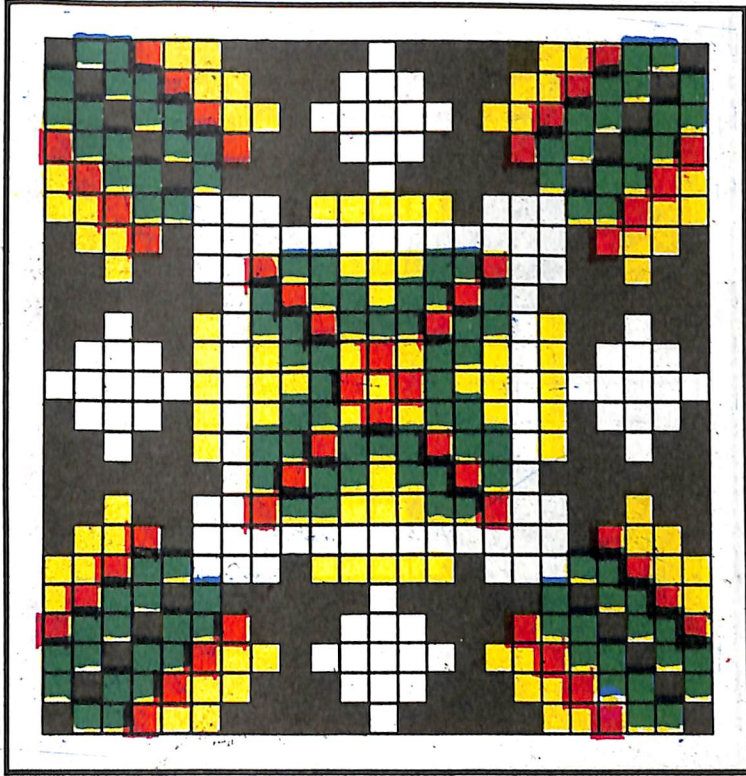
इस 'अष्टलिंगतोभद्रम' में २४ खड़ी लाइनें, २४ आड़ी लाइनों से कुल ५२९ चौकोर बनते हैं। इसमें लाल रंग में मसूर की दाल, हरे रंग में मूंग, पीले रंग में चने की दाल, सफेद रंग में चावल एवं काले रंग में उड़द की दाल भरी जाती है।

सर्वतोभद्रमण्डलम्
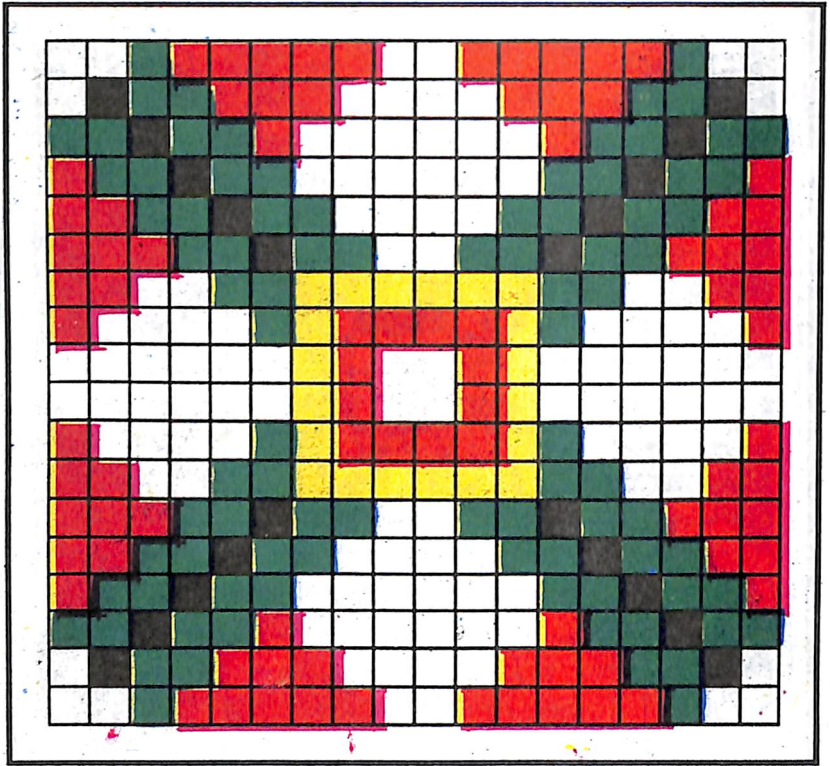
इस 'सर्वतोभद्रमण्डलम्' में १९ खड़ी लाइनें, १९ आड़ी लाइनों से कुल ३२४ चौकोर बनते हैं। इसमें लाल रंग में मसूर की दाल, हरे रंग में मूंग, पीले रंग में चने की दाल, सफेद रंग में चावल एवं काले रंग में उड़द की दाल भरी जाती है'

वारुण मण्डल चक्रम्
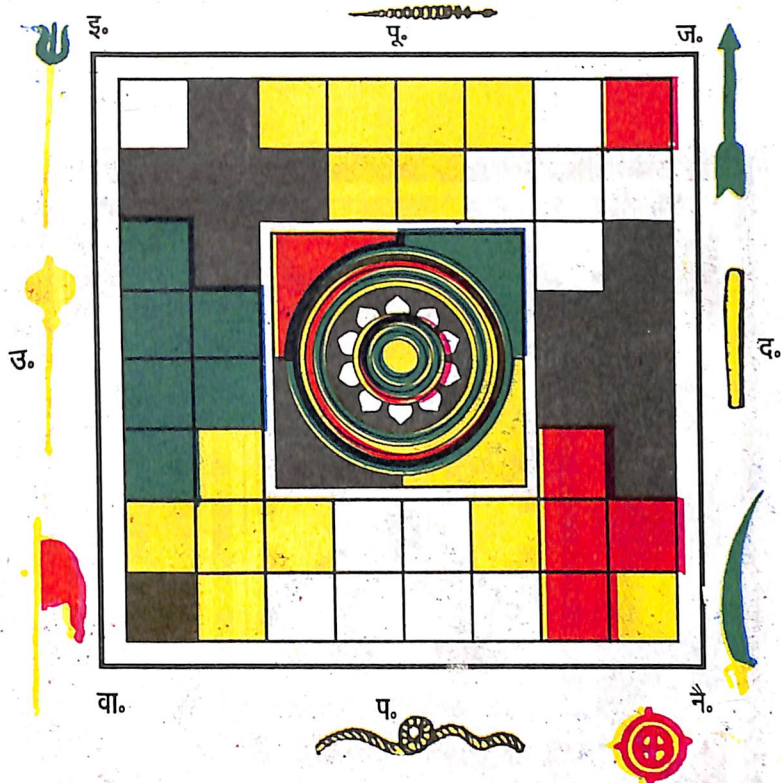
इस 'वारुण मण्डल चक्रम्' में ९ खड़ी लाइनें, ९ आड़ी लाइनों से कुल ६४ चौकोर बनते है। इसमें लाल रंग में मसूर की दाल, हरे रंग में मूंग, पीले रंग में चने की दाल, सफेद रंग में चावल एवं काले रंग में उड़द की दाल भरी जाती है।

द्वादशलिंगतोभद्रम् हरिहरमंडलं

चतुःषष्ठियोगिनीचक्रम्

इ॰ पू॰ ज॰

पीत	रक्त ३	पीत	रक्त २	पीत	रक्त १	पीत

पीत	रक्त ६४	पीत	रक्त ५६	पीत	रक्त ४८	पीत	रक्त ४०	पीत	रक्त ३२	पीत	रक्त २४	पीत	रक्त १६	पीत	रक्त ८	पीत
पीत	रक्त ६३	पीत	रक्त ५५	पीत	रक्त ४७	पीत	रक्त ३९	पीत	रक्त ३१	पीत	रक्त २३	पीत	रक्त १५	पीत	रक्त ७	पीत
पीत	रक्त ६२	पीत	रक्त ५४	पीत	रक्त ४६	पीत	रक्त ३८	पीत	रक्त ३०	पीत	रक्त २२	पीत	रक्त १४	पीत	रक्त ६	पीत
पीत	रक्त ६१	पीत	रक्त ५३	पीत	रक्त ४५	पीत	रक्त ३७	पीत	रक्त २९	पीत	रक्त २१	पीत	रक्त १३	पीत	रक्त ५	पीत
पीत	रक्त ६०	पीत	रक्त ५२	पीत	रक्त ४४	पीत	रक्त ३६	पीत	रक्त २८	पीत	रक्त २०	पीत	रक्त १२	पीत	रक्त ४	पीत
पीत	रक्त ५९	पीत	रक्त ५१	पीत	रक्त ४३	पीत	रक्त ३५	पीत	रक्त २७	पीत	रक्त १९	पीत	रक्त ११	पीत	रक्त ३	पीत
पीत	रक्त ५८	पीत	रक्त ५०	पीत	रक्त ४२	पीत	रक्त ३४	पीत	रक्त २६	पीत	रक्त १८	पीत	रक्त १०	पीत	रक्त २	पीत
पीत	रक्त ५७	पीत	रक्त ४९	पीत	रक्त ४१	पीत	रक्त ३३	पीत	रक्त २५	पीत	रक्त १७	पीत	रक्त ९	पीत	रक्त १	पीत

उ॰ द॰

वा॰ प॰ नै॰

कुण्डा भावे स्थण्डिल वेदी प्रमाण